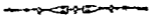


११	१२३१००	
२४३२	४०४३२	$३ \times १२ = ३६$
	<u>-१०</u>	$२ \times ३ = ६$
	३२	$४३१ \text{ गमल} = २$
		<u>४८</u>
१२	१२३१००	
३२१५	४३२१६	$४ \times १२ = ४८$
	<u>-०३</u>	$२१६ \text{ मलग} = ३$
	५	<u>६३</u>
४२१३	१२३१००	
	४४०१३	$४ \times १० = ४०$
	<u>-००</u>	$२ \times ३ = ६$
	४२	$२१३ \text{ मलग} = ३$
		<u>४७</u>

साराश यह है कि मिथितारु में एक के नियम दूसरे को उपयुक्त नहीं। जो अपरोक्त नियम घटत करने के लिये १२३७७ को १२३४५ मानना पड़ेगा। एतद्देवत्व सिद्धांत समझ लेना अलम् है विशेष गोरख धर्म में पड़ने की आवश्यकता नहीं। मिथिताको के नष्टोद्दिष्ट ध्वानु की रीति से ऊपर बताये गये हैं परन्तु मुख्यतः उन सूची और प्रस्तार भेद की गति ही समझ लेना पर्याप्त है।

इति श्रीअकविलासे भासुकरि विरचिते मिथितारु नष्टोद्दिष्ट
वर्णननाम त्रयोदशो विलास ।



॥ श्री ॥

अङ्क विलास

OR

MYSTERIES OF FIGURES

जिसमें

अरूपाश विद्या विषयक सूची, प्रस्ताव, नष्ट और उद्धिष्ट के नियम
और उदाहरण अत्यन्त सग्लतापूर्वक दिये हैं और १ अंक से
लेकर पारार्ध (शुब) सख्या तक ज्यातिष, गणित,
पुराण, भूगोल तथा व्यवहार सम्बन्धी अनेक मनोरंजक
उदाहरण भी विद्वज्जनों के विनोदार्थ लिखे हैं।

जिसे

छद्मःप्रभाकर प्रयोता

साहित्याचार्य जगन्नाथप्रसाद रायबहादुर उपनाम "भालु"कवि
गिटायर्ट इ० ए० कमिश्नर न निज यशालय जगन्नाथ प्रेस
नितामपुर (म० प्र०) में छाप कर प्रकाशित किया।

प्रथम बार
१००० प्रति

मन् १६२५

{ मूल्य २ }

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

समर्पण

श्री गुरु विद्मल ज्ञाननिधि, सुगम सुभायो ग्रंथ ।
वारवार पद वंदि प्रभु, करहुं समर्पण ग्रंथ ॥
करहुं समर्पण ग्रंथ, स्वाधि भव करुणासागर । ।
अंकविलासहिं करहु सुफल, जरा छंद प्रभाकर ॥
भेद सकल दरसाय, जगत से कीन्हो भङ्गल ।
सदा रहौ अनुकूल 'भानु' पै, श्री गुरु विद्मल ॥

दीनदास,

जगन्नाथप्रसाद—'भानु' ।



INTRODUCTION.



I am very grateful to the Hindi loving public for their kind appreciation of my treatises on Hindi Rhetoric (Kavya Prabhakar) and on Hindi versification (Chhanda-Prabhakar) The former, a bulky book, has found place in almost all the important libraries in India, while the latter has been finally prescribed as a text book for the B A course by the Patna University Chhanda-Prabhakar

contains the simplest formulæ for finding out the combinations and permutations of various metrical quantities and syllables Ever since its publication, I have been thinking as to whether such a formulæ could also be devised for the cardinal numbers 1 to 9 and their various combinations, either by repetition or omission and I am glad to say that my attempts have been crowned with success

2 The old mathematicians have confined their rules only to the finding out of the total number of combinations and the total number of permutations, but beyond this they have not framed any rules or devised any method for finding out the exact position of any particular permutation desired or for stating the exact number of a particular permutation given

3 In the absence of any definite or fixed rule, the permutations are generally worked out at random or in a haphazard manner For instance, if 2 persons sit together to work out permutations of the four figures 1, 2, 3, 4, each may have a table of different order, although the results of both may happen to be the same Unless the whole order is uniformly maintained, it is impossible to find out the particular position required or to state the number of any particular position given

4 This is quite evident from the fact that even the distinguished mathematicians of the past paid little or no attention to this important and interesting subject For instance, I find a very small combination of 1, 2, 3, worked out in different order in Lilawati and the higher Algebra of Hall and Knight now taught in the English Colleges —

Serial No	Lilawati.		Higher Algebra		My method or Bhamu Siddhant		Remarks.	
	In figures		In figures	In letters	In figures	In letters		
1	389	123	abc	123	abc	123	abc	*The arrangements are not in my Scientific order i.e neither ascending, nor descending
2	398	132	acb	132	acb	132	acb	
3	893 [†]	231	bca	231 [†]	bca	213	bac	
4	839 [*]	213	bac	213 [*]	bac	231	bca	
5	983 [†]	321	cba	312	cab	312	cab	
6	938 [*]	312	cab	321	cba	321	cba	

5 Thus in Lilawati, the 3rd, 4th, 5th, and 6th positions and in the higher Algebra the 3rd and 4th positions are not in any scientific order, while the beginning in both is correct. Such is the unhappy condition of the smallest combination of 3 figures involving only 6 permutations, not to speak of more figures involving permutations numbering hundreds of thousands or more.

6. My method is based on fixed rules which clearly indicate the exact position of each order so that neither the 5th can ever be the 4th order nor the 4th can ever be the 5th order, and so on. Each permutation has its own fixed position. It will also be observed that the last order according to my method, is just the reverse of the first order and this is quite a natural process in working out all the possible permutations.

7 My method will be found quite in conformity with the simple and natural order and it dispenses with the necessity of the very complicated Algebraic system. It is, therefore, a step further in advance of the discoveries hitherto made in the mathematical sciences and it may also prove useful in musical science as well as in regimental or academical amusements.

8 Mixed numbers have also been dealt with by the adoption of the simplest formulae. I have also added other interesting matter consisting of various poems and proverbs connected with mathematical puzzles, astronomy, mythology, geography, morals and practice in every sphere of life to make the book as attractive and instructive as possible.

9 With these few remarks, I venture to place this humble work, 'Ank Vilas' before the learned public for their kind acceptance.

Bilaspur, C P	}	JAGANNATH PRASAD 'BHANU
The 9th March 1924		<i>Retired E & C</i> Bilaspur, C P.

भूमिका ।



व से मैंने अद्भुत प्रभाकरादि ग्रंथों की रचना की है तब से मे इस बात का विचार कर रहा था कि जैसे छंदों के प्रस्तारादिक के नियम स्थिर किये गये हैं वैसेही नियम अक्षरों के भी स्थिर होसके हैं या तथा । परन्तु अनापकाश के कारण इधर पूर्णरूप से ध्यान नहीं देसका । साम्प्रत कुछ अवकाश मिला तो विचार करतेही श्रीगुरु पिंगलाचार्यजी महाराज की पूर्ण कृपा दृष्टि हुई और ये सब नियम सरलतापूर्वक बन गये जिन्हें अग्र में ग्रन्थ के रूप में सजाकर विद्वज्जनों की सेवा में उपस्थित करता हू ।

२ आजकल पाठशालाओं में जो अक्षरगणित और बीजगणित की हिन्दी या अंगरेजी पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं, उनमें इस अक्षर पाश विद्या की ओर ध्यानही नहीं दिया गया है । हा, इतना तो अवश्य है कि अनुक अक्षर-समूह के इतने भेद हो सके हैं, इसका उनमें विधान है । परन्तु उनका प्रस्तार कैसा निकाला जावे, प्रस्तारातर्गत अक्षर भेद का रूप कैसा होगा या दिये हुये रूप की अनुक्रम सख्या क्या है, इन बातों का कहीं उल्लेख नहीं पाया जाता । सबसे प्राचीन ग्रंथ जीलाधती में भी प्रस्तारादि के नियम नहीं दिये गये हैं । हा, एक स्थान पर तीन अक्षरों का प्रस्तार मिलता है । परन्तु वह भी क्रम पूर्वक नहीं है । समग्र है कि यह टीकाकार की करामात या कल्पनाही क्योंकि मूल श्लोक में तो उसका पताही नहीं । अस्तु, इसी अभाव की पूर्ति के लिये यह ग्रंथ लिखा गया है यदि कोई गणितज्ञ महाशय इससे भी और कोई सुखभ रीति निहाल कर प्रकाशित करेंगे तो वे अवश्य धन्यवाद और सुयश के भागी होंगे । अक्षरपाश विद्या द्वारा संगीत त्रिययक सप्तस्वरा के भेदोपभेद तथा उनके भिन्न भिन्न रूप भी तत्काल ज्ञात हो सके हैं । पाठशालाओं में भी मनोरजनार्थ नाना प्रकार की शिक्षाप (कवायद) हो सकी है ।

३ इसग्रंथ में गूढ़ वैज्ञानिक शक्तों के वदले सर्व साधारण के समझने योग्य प्रकृत शब्दों का प्रयोग किया गया है, जैसे —

<u>अंगरेजी</u>	<u>वैज्ञानिक</u>	<u>इस ग्रंथ में</u>
Product	घात	गुणनफल
Combinations	एकादि भेद	अक्षर समूह या मूलाक
Permutations	अक्षर पाश	मूलाक के आंतरिक भेद
Quotient	भजनफल	लब्धि
Direct	अनुलोम	सरलगति
Converse	प्रतिलोम, विलोम } व्यतिक्रम, उल्लम }	विपमगति

अंत में पाठकों के मनोरजनार्थ नय अक्षर का माहात्म्य, अंगरेजी तारीखों से

पार निम्नलिखित के नियम कुछ कौतुकाक और एक नुस्खे अथ पदान्तरी भी सम्मिलित करदी गई है, जिसमें १ प्रकसेले हर परार्थ (आधुनिक शस्त्र) सत्यातक गणित ज्योतिष, पुराण नूतन तथा व्यवहार सम्बन्धी अनेक मंगोरजक और शिक्त प्रद उदाहरण दिये हैं जो विद्यार्थियों के लिये अत्यन्त उपयोगी हैं इसके पठन-पाठन में जोडान खंडा विनाश अवश्य होगा और अंत सम्बन्धी कठिन कठिन करने से विद्यार्थियों की पुष्टि भी तीव्र होगी। प्रश्न करने पर जो जिनने अधिका पर इस ग्रंथ से वा इसके अनिर्दिष्ट अपनी पत्रना से और भी कुछ और मिल सकेगा वह दूसरे की अपेक्षा उतनी अधिक प्रदीप और समा चतुर समझ जावेगा। इन्हीं समस्त बातों को विचारकर मैंने इस ग्रंथ का नाम "अंकविलास" रखा है। यदि इससे पाठकों को कुछ भी लाभ होगा तो मैं अपने को हृद-हृदय सन्तुष्टा।

इस ग्रंथ की प्रसिद्ध अवस्था में साहित्य प्रेमी शीघ्रतः मोरारजीदास जी अग्रजाला, बी ए पब्लिशिंग ट्रस्ट इलाहाबाद मध्यप्रदेश ने मुझे सहायता की पत्रद्वारा ज्ञाते अनेक धन्यवाद देना है।

विलासपुर,
ता: ६ मार्च १९२४

निनीत,
जगन्नाथदास (भातु)

सूचीपत्र ।

विलास
सख्या

विषय

पृष्ठ

समर्पण और भूमिका आदि में

१	भिन्नांक प्रस्तार	२
२	प्रस्तार सिद्धांत	५
३	नष्टोद्दिष्ट	११
४	नष्टोद्दिष्ट प्रदर्शन	१३
५	छल प्रश्न	२१
६	प्रस्तार चक्र	२२
७	मिश्रितारु सूचीभेद	२३
८	मिश्रितारु प्रस्तार	२४
९	खंड प्रस्तार	२७
१०	ध्रुवांक	२८
११	अनुक्रम सख्या योग	३०
१२	प्रस्तार भेदान्तर्गत सख्या योग	३१
१३	मिश्रितारु नष्टोद्दिष्ट	३३
१४	गृहीत मुक्त रीति	४०
१५	कौतुकांक	४४
१६	एकाकीय करण	४५
१७	४५ की विशेषता	४६
१८	नव के अंक का महत्व	४७
१९	अंग्रेजी तारीखों के दिन	५२
२०	दक्षिण वाम गणित	५७
२१	नारंगी	५८
२२	प्रश्नविनोद	५९
२३	आनु कथन	६१
२४	सख्या प्रमाण	६३
२५	अरु यत्र	६४
२६	अकमयजगत	६६
२७	अंक पदावली (से परार्ध (आधुनिक शक) सख्या तक	६७-१५१
०	परिशिष्ट में सरल सख्यावली	१५२-१५४



4

1

3 1

2

~

4 1

3

1

1 2 3 4

1

1 2 3 4



मंगलाचरणम्

श्री गुरु पिंगलरायके, चरणं यदि अभिराम ।
 भानु मुद्रित अकित करत, अरु विलास ललाम ॥१॥
 अरुभयो यद जगत हे, अरुहि परम प्रकाश ।
 अरु ज्ञान विन जगत मे, नाहिन बुद्धि प्रकाश ॥२॥
 अरु उत्पदि अरुहि हरो, तो माया अलगाय ।
 शुद्ध ब्रह्म नव रूप मे, दर्शत द्विय हरपाय ॥३॥

यथ—७३-३७=३६=६

नय व्यापक सव अरु मे, ब्रह्म जीव सम लेख ।
 ज्ञान चक्षु लखि लीजिये, अरु चक्षु नहि देख ॥४॥
 अरु नव गिलि उनीस हे, तिनके दस रहिजात ।
 दसके पुनि एकहि रहत, एकहि एक लेखात ॥५॥

यथ—१६, १+६=१०, १+०=१

काव्य प्रभाकर में लिख्यो, नव महिमा उल्लास ।
 अरु विलासहि अरु लिखत, अरु जन बुद्धि विलास ॥६॥
 अरु शास्त्र मर्मज्ञ हिम, हुंहे प्रसू प्रगोद ।
 काव्य रसिक गुणावन्त कर, सहजहि बुद्धि विनोद ॥७॥
 'रास' नाम एक अरु हे, सब साधन हे सून ।

'अरु, गये कछु हाथ नहि, अरु रहे दसगून' ॥८॥
 मर्म सु अरु विलास को, समुक्त परमानन्द ।

भाग्यन्त' बुध्बिन्त लह, भक्ति सच्चिदानन्द ॥९॥

सरलांक प्रस्तार लिखने के पूर्व मात्राओं, वर्णों और अंकों के भेदोपभेदों का नीचे एक तुलनात्मक कोष्ठक लिखते हैं —

संख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९
मात्रा	१	२	३	४	५	१३	२१	३४	५५
वर्ण	२	४	८	१६	३२	६४	१२८	२५६	५१२
अंक	१	२	६	२४	१२०	७२०	५०४०	४०३२०	३६२८८०

मात्राओं और वर्णों के भेदोपभेदों का ज्ञान पिगल के ग्रंथों में वा भेरे रचित छंद प्रभाकर ग्रंथ के देखने से हो सकता है और अंकों के ज्ञानार्थ यही अरु विलास ग्रंथ आपकी सेवा में उपस्थित है

अंकसमूह वा मूलांक (Combination)

अरुपाश वा आतरिक भेद (Permutations)

भिन्नाङ्क प्रस्तार भेद

अंक १ से लेकर ९ तक हैं। शून्य की गणना अंकों में नहीं है।

(१) सूची

(Index or Indicator of Permutations)

प्रत्येक अंक समूहके जितने भेद हो सकते हैं उनके जानने की विधिको सूची कहते हैं.—

एक, एक, दो दो रहै, त्रय पट, चौ चौबीस ।

पंच एक सौ बीस पुनि, छहो सात सौ बीस ॥

सात अरु के भेद है, पंच सहस्र चालीस ।

पृथक् पृथक् सब अंक की, सूची भल जगदीस ॥

अंक	१	२	३	४	५	६	७
भेद संख्या	१	२	६	२४	१२०	७२०	५०४०

ऐसेही— $८=४०,३२०$, $९=३,६२,८८०$ ।

(१) एक अंक के भेद को, अगले तें गुनि लेव ।

गुणन फलहिं सम जानिये, सकल भेद के भेय ॥

जैसे.—३ के $२ \times ३=६$ तो ४ के $६ \times ४=२४$

१. 'र' भिन्नांशो के भेद २

(१)	१	२	लग (लघु गुण)
(२)	२	१	गल (गुण लघु)

३ भिन्नांशो के भेद ६

(२) श्लोकः—लोमगं लुग्मं मालागम् । मगलं गुल्मं गोमलम् ॥
अरुत्रय विभिन्नच । प्रस्तारादिषु योजयेत् ॥

(संकेताक्षर) ल=लघु अरु । म=मध्यम अरु । ग=गुरु अरु ।

(३) - लकारो लघु सप्तस्थ्यात् । मकारो मध्यमस्तथा ॥
गकारो गुरु मतव्यः । प्रस्तारादिकु सूत्रकाः ॥

- (१) १ २ ३ लोमग=लघु, मध्यम, गुरु ।
(२) १ ३ २ लुग्म=लघु, गुरु, मध्यम ।
(३) २ १ ३ मालागम्=मध्यम, लघु, गुरु ।
(४) २ ३ १ मगल=मध्यम, गुरु, लघु ।
(५) ३ १ २ गुल्म=गुरु, लघु, मध्यम ।
(६) ३ २ १ गोमलम्=गुरु, मध्यम, लघु ।

(४) लोमग प्रथम मन्ये, लागमश्च द्वितीयकम् ।
मालागतु तृतीय स्यात्, मगलच चतुर्थकम् ।
गुल्मच पचम प्रोक्त, गमल षष्ट सूचकम् ।
अरुत्रय विभिन्नच, पदभेदाः कथिताः क्रमात् ।

(५) ध्यान रहे कि तीनों अरु पृथक् पृथक् हैं, ऐसे तीन अक्षो में जो सब से लघु हो उसे " ल " समझो, जो मध्यम हो उसे " म " समझो, और जो सब से बड़ा अर्थात् गुरु हो उसे " ग " समझो । तीनों अरु सहित जो सब से छोटा रूप बन सकता हो वही सरल अर्थात् प्रथम भेद होगा । नीचे ऊहो भेद लिखते हैं ।

भेद	अरु	अरु	अरु	अरु	अरु	अरु	संज्ञानुसार भेद
१	१२३	२६७	३८६	४७६	५७८	६७६	लमग (पहिला)
२	१३२	२७६	३६८	४६७	५८७	६६७	लमग (दूसरा)
३	२१३	६२७	८३६	७४६	७५८	७६६	मलग (तीसरा)
४	२३१	६७२	८३३	७६४	७८५	७६६	मगल (चौथा)
५	३१२	७२६	६३८	६४७	८५७	६६७	गलम (पाचवा)
६	३२१	७६२	६८३	६७४	८७५	६७६	गमल (छटा)

- (६) एक अंक दोबार न हो—जैसे—११२ या १२२ ।
 (७) प्रथम भेद का उल्टा अंतिम भेद होगा ।
 (८) यदि अक्षरों के सिवाय किन्हीं अक्षरों, फूल, फल, रंग या अन्य वस्तुओं का प्रस्तार करना हो तो प्रत्येक में १, २, ३ इत्यादिक मूल्य निर्धारित करना होगा ।
 (९) पहिला पक्ति में जो ऊपर से नीचे जाती है ल, ल, म, म, ग, ग अबरथ क्रमानुसार आयेगे अर्थात् १, १, २, २, ३, ३ ।

उपरोक्त नियमों को दूसरी प्रकार से समझाते हैं ।

- (१) १ २ ३ लमग—लोगमगो इक प्रभु पद प्रीति ।
 (२) १ ३ २ लमग—लोगोमें दुग्धिा अनरीति ॥
 (३) २ १ ३ मलग—मोलग त्रिभुवन पति उपकार ।
 (४) २ ३ १ मगल—मगल चारों फल दातार ॥
 (५) ३ १ २ गलम—गैलमजु पचन की धार ।
 (६) ३ २ १ गमल—गोभाला पद हरै विकार ॥

पुनश्च

(१०) अंग अंग लीला मम गग, विपम घटै सम बढै तरंग ।

तीन अक प्रस्तार प्रसंग, नष्टोद्दिष्ट एकही संग ॥

अंग=वेद क छै अंग, अंग अंग=प्रत्येक अंग । लीला ममगग=आदि पक्ति जो ऊपर से नीचे की ओर जाती है उसमें क्रमानुसार ल, ल, म, म, ग, ग होते हैं । विपम घटे=विपम भेदों में (१, ३, ५) तरंगें घट जाती हैं और सम बढै=सम भेदों में (२, ४, ६) तरंगें बढ जाती हैं यथा—

१ विपम में २३, तो २ सम में उलटकर ३२

३ विपम में १३, तो ४ सम में उलटकर ३१

५ विपम में १२, तो ६ सम में उलटकर २१

विपम और सम में सदा ६ का अन्तर रहता है यथा—

२३, ३२ अन्तर—६

१३, ३१ अन्तर—१८, १+८=९

१२, २१ अन्तर—६

नष्टोद्दिष्ट=शुद्धी तीन अंगों के प्रस्तार प्रसंग में 'लीला मम गंग'

रूपी सूत्र वा मय के प्रभाव से नष्ट और उद्दिष्ट भी एकही साथ सिद्ध होते हैं जिनका विस्तृत वर्णन आगे लिखा जायगा ।

नष्ट=रूप न देकर पूछना कि अमुक भेद का रूप कैसा होगा ।

उद्दिष्ट=रूप देकर पूछना कि यह कौनसा भेद है ।

पुनश्च

शीघ्र बोधार्थ अब आदि के दो दो अक्षरों में भी तीन अकों के छहौं भेद

लिखते है ।

लमेरु, लगदूँ, मलतीनजान, ममाधौ, गलप्यच, गमच्छै, प्रमान
 लम १, लम २, मल ३, मम ४, गल ५, गम ६ ।

(२) प्रस्तार

Expansion of Permutations

मत्र अंक गति विषय लम्बाय, तिनको लिखो सरल गति भाय ।
 रागल गती कर, यहै प्रमान, वार्ये लघु दाये गुरु जान । *
 जैतिक अंक, तितेई अण, भिन्न अंक कर उज्ज्वल अण ।
 अतिम तजि सूची गिर भार, सूची क्रम लागि अंक सुधार ।
 मथम पक्ति अंशम-प्रति अंक, -क्रम तें-लिखि लखि-लिखो निर्णक ।
 अन्य पक्ति में पूर्व विहाय, अंक सूचि क्रम तें लिख जाय ।
 या गती सम अंक निहार, तथै जान अंत प्रस्तार ।
 श्रुति ई कर उलट प्रसंग, विषय घटै, सम नहै तरंग ।

निम्न दो वि सरलगति अकारली ही स्वर्या प्रथम भेद है । जिनके भिन्नक
 १। उतनेही अंश लगे यथा —

३ अंक के तीन अंश ४ अंक के ४ अंश जैसे १ ५ अंक के २ अंश लगे ।

प्रस्तार करने के पूर्ण लिखने के प्रस्तार करना दो उनके ऊपर अंतिम
 स्थान छोड़ कर बाय गति से सूची के अंक लिखो यथा —

१ २ १ ०

१ २ ३ ४

अब १ की जो प्रथम पक्ति है उसके ऊपर ६ का अंक है इसलिये १ के नीचे
 पहिले अंश में अर्थात् ६ स्थान तक १, १ फिर दूसरे अंश में (अर्थात् ७ से १२ तक)
 २, २ फिर तीसरे अंश में १३ से १८ तक ३, ३ और चौथे अंश में (१९ से २४ तक)
 ४, ४ भर जाय, पहिली पक्ति भर गई ।

अब दूसरी पक्ति में २ है और २ के ऊपर सूची अंकभी २ है । प्रथम पक्ति में पहिले
 १ का अंक आया है इसलिये १ का छोड़कर दूसरी पक्ति के पहिले अंश में २-२, ३-३, ४-४
 लिखा पहिली पक्ति के दूसरे अंश में पहिले २ आ चुका है अतएव २ का छोड़कर दूसरी
 पक्ति के दूसरे अंश में १-१, ३-३, ४-४ लिखा, पहिली पक्ति के तीसरे अंश में पहिले
 ३ का अंक आ चुका है इसलिये ३ का छोड़कर दूसरी पक्ति के तीसरे अंश में १-१, २-२,
 ४-४ लिखा, पहिली पक्ति के चौथे अंश में पहिले ४ आ चुका है इसलिये ४ का छोड़कर
 दूसरी पक्ति के चौथे अंश में १-१, २-२, ३-३ लिखा अब दूसरी पक्ति भी भर गई ॥

* विषयगति सरलगति (प्रथमभेद)

१ ३ २ ४ । १ २ ३ ४

१ ५ ३ २ ४ । १-२-३ ४ ५

पक्ति वह है जो ऊपर से नीचे की ओर जाता है ।

अंश

अंक जिते अणहु तिते, पृथक् पृथक् यदि अरु ।
प्रथम पङ्क्ति मे अश प्रति, क्रम ते धरहु तिशक ॥

अंक	१	२	३	४	५	६	७	
अश	१	२	३	४	५	६	७	
अश विभाग	१	१	२	६	२४	१२०	७२०	प्रति अश सख्या
		१	२	६	२४	१२०	७२०	तथा
		२	६	२४	१२०	७२०	तथा	
		६	२४	१२०	७२०	तथा		
		२४	१२०	७२०	तथा			
		१२०	७२०	तथा				
जोड़	१	२	६	२४	१२०	७२०	५०४०	

प्रति श्री अरुणविलासे भानुकाचि विरचिते भिर्झांक
सूची-प्रस्तार वर्णनभाम प्रथमोविलास. ॥



(३) नष्ट वर्णान ।

(Negative Demonstration)

(असुक भेद को रूप किमि, प्रश्न कहावै नष्ट)

नष्ट जिते अरुन को पेख, तितने अक सरल गति लेख ।

सूची तिन पर लिखौ सुजान, अतिम छाडि वाम गतिमान ॥१॥

वाम अत जो सूची अंक, प्रथमहिं तिहितें भाजि निशक ।

जब लग शेष रहै तर लागि, सूचिक्रमहि ते दीजे भाग ॥ २ ॥

शेष जहा लघी जुर एक, लब्धि शून्य तउ लीजे एक ।

जो जो अंक लब्धि सो सिद्ध, क्रमते तिनही लिखौ प्रसिद्ध ॥ ३ ॥

लिये अक चिन्हित करि देव, आगिल क्रम में उन्हें न लेव ।

अथवा शेष अंक लिखि लेव, आगिल क्रम मे परै न भेव ॥ ४ ॥

अवधीचही भाग जह पूर, शेष अंक उलटी गति पूर ।

सावधान है पालों रीति, सुयश लहो जो हरि पद प्रीति ॥ ५ ॥

विषम प्रश्न उत्तर के अन्त, दोय सरल गति अंक लखत । *

सब प्रश्नहिं उत्तर के अंत, विषम गती दो अंक लखत ॥ ६ ॥

(४) उद्दिष्ट वर्णान ।

(Positive Demonstration)

(दिये अरु को भेद कहू, सोई है उद्दिष्ट)

सुनिये उद्दिष्टहिं की रीति, जासो मन में होय प्रतीत ।

अथते अधिक अंक के भेद, अतिम तीन तजौ पिन सेद ॥१॥

ये हैं बोध करावन हार, इरु ते पट लागि गति अनुसार ।

अतिम तजि सूची सिर धार, क्रमते इकट्टै छै अनुसार ॥२॥

* (विषमाक भेद) १, ३, ५, ७ इत्यादि

(समाक भेद) २, ४, ६, ८ इत्यादि

सरलगति—यथा—२७, १७, २८, ३६ (लग)

विषमगति—यथा—७२, ७१, ८२, ६३ (गल)

प्रमाण

विषम घटे सम बटे तग ।

चहु में पहिले ते इकहीन, शेष सृचि ते गुणहु प्रवीन ।
 पच सीधे रचि उलट महेश, दोय अंक को दत्त आदेश ॥३॥
 छैसौंनव लागि एकहि रीति, सीधे रचि उलटे हर प्रीति ।
 अंतल इक अतम पुनि दोय, अंतग तीन जानिये सोय * ॥४॥
 चौंधो पचग अरु पट अंक, वामे लघुतर गिनौ निशंक ।
 गिनती माहि अधिक एक लेव, ताही अरु तरे वरि देव ॥५॥
 जहां शून्य तहँ एकहि धार, शेषहि गुनौ सूचि अनुसार ।
 लभमादिक सूत्रहि को अंग, जोरि उदिष्टहि लहौ अंग ॥६॥
 नष्टोदिष्ट उभय की रीति, प्रश्रहि जाचो होय प्रतीति ।
 इकते नव लागि सख्या जानु, सब उदिष्ट कहे कवि भासु ॥७॥

उदिष्ट के नीचे घटने वाले अंकों की दूसरी सुलभ रीति,—

आठि अंक ते एक घटाव, दाहिन के पुनि सुनहु प्रभाव ।
 वाम ओर जेतिक लघु देख, तिन मेंहु जोरिय एक त्रिसेख ॥
 वाम ओर एकहु लघु नांय, तोहु एक घटये भाय ।
 शेष नियम पहिले कहि दीन, थोरे मेंह समुक्तिहँ प्रवीन ॥

सूत्रा.—शेषो रीतियो का परिणाम एकही है । ध्यान रहे कि जहां तीस से
 अधिक अंक हों वहां अन्त के तीन अंक सर्वथा त्यज्य हैं इनकी
 सख्या 'लभग' सूत्रानुसार पीछे से जोड़ ली जाती है ॥

इति श्रीशंकरविलासे भासुकवि विरचिते नष्टोदिष्ट
 वर्तनव्यम तृतीयो विलास ।

* आदि के तीस अंकों में जहां अन्त में लघु हो वहां १ जहां अन्त में
 मध्यम हो वहां २ और जहां अन्त में गुरु हो वहां ३ घटावो ।

नष्ट

प्र०-५ अंको में ६५ भेद कैसा होगा ?

२४ ६ २ १ ०

१ २ ३ ४ ५

२४) ६५ (३+१=४ चौथा अंक ४
७२ (रहे १२३५)

६) २३ (३+१=४ चौथा अंक ५
१८ (रहे १२३)

२) ५ (२+१=३ तीसरा अंक ३
४ (रहे १२)

१) १ (१= १ पहिला अंक १
१ शेष २

०

उत्तर= ४५३१२

उद्दिष्ट

प्र०-५ अंको में ४५३१२ कौनसा भेद है ?

२४ ६ २ १ ०

४ ५ ३ १ २

-१ २

३ ३

३×२४= ७२

३×६= १८

३१२=गलम= ५

६५

प्र०-पहिले दो अंको से १२ क्यों घटाये ?

उ०-सीधे रवि

उत्तर= ६५वा

६ अंकों के ७२० भेद

प्र०-६ अंको में ४७५वां भेद कैसा होगा ?

१२० २४ ६ २ १ ०

१ २ ३ ४ ५ ६

१२०) ४७५ (३+१=४ चौथा अंक ४
३६० (रहे १२३५६)

२४) ११५ (४+१=५ पांचवां अंक ६
६६ (रहे १२३५)

६) १६ (३+१=४ चौथा अंक ५
१८ (रहे १२३)

२) १ (०= १ पहिला अंक १
(रहे २३)

१) १ (१= १ पहिला अंक २
१ शेष ३

०

उत्तर= ४६५१२३

प्र०-६ अंको में ४६५१२३ कौन भेद है ?

१२० २४ ६ २ १ ०

४ ६ ५ १ २ ३

-१ २ २

३ ४ ३

३×१२०= ३६०

४×२४= ६६

३×६= १८

१२३=गलम= १

४७५

प्र०-तीसरे अंक से २ क्यों घटाये ?

उ०-पहिले तीनों अंकों में ५ मध्यम है,

अतम=२

उत्तर= ४७५वां

५ अंक के-१२० भेद

प्रश्न- ५ अंको में कक्षा भेद कैसा होगा ?

	२४ ६ २ १ ०	

	१ २ ३ ४ ५	
२४) ५६ (३+१=४ चौथा अंक ४	७२	(रहे १२३५)

६) १७ (२+१=३ तीसरा अंक ३	१२	(रहे १२५)

२) ५ (२+१=३ तीसरा अंक ५	४	(रहे १२)

१) १ (१=१ पहिला अंक १	१	शेष रहे ०

	०	
		उत्तर= ४३५१२

प्रश्न-५ अंको में ४३५१२ कौनसा भेद है ?

	२४ ६ २ १ ०	
	४ ३ ५ १ २	
	-१ १	

	३ २	

	३×२४=	७२
	२×६=	१२
	५१२=गलम=	५

		५६
प्र०-एरिले वो अंको से ११ कयो घटाये ?		
उ०-उलटे ह०=११		
	उत्तर=	५६३

प्र०-५ अंको में ६०वा भेद कैसा होगा ?

	२४ ६ २ १ ०	

	१ २ ३ ४ ५	
२४) ६० (२+१=३ तीसरा अंक है ३	४५	(रहे १२४५)

६) १२ (२=२ दूसरा अंक है २	१२	(रहे १४५)

	०	

शुभ्य रहा पूरा भाग] ५४१
लगा, उलटा क्रम]

उत्तर= ३२५४१

प्र०-५ अंको में ३२५४१ कौनसा भेद है ?

	२४ ६ २ १ ०	
	३ २ ५ ४ १	
	-१ १	

	२ १	

	२×२४=	४८
	१×६=	६
	५४१=नामल=	६

		६०
	उत्तर=	६०वाँ

द अंकों के- ४०३२०-भेद

०-८ अंकों में २७१११वा भेद कैसा होगा ?

$$\begin{array}{cccccccc} & ५०४० & ७२० & १२० & २४ & ६ & २ & १० \\ & १ & २ & ३ & ४ & ५ & ६ & ७ \\ \hline ०४०) २७१११ & (५+१=६ & \text{छठा अंक } ६ & & & & & \\ २५२०० & & (\text{रहे } १२३४५७८) & & & & & \end{array}$$

$$\begin{array}{cccc} ७२०) १६११ & (२+१=३ & \text{तीसरा अंक } ३ & \\ १४४० & & (\text{रहे } १२४५७८) & \end{array}$$

$$\begin{array}{cccc} १२०) ४७१ & (३+१=४ & \text{चौथा अंक } ४ & \\ ३६० & & (\text{रहे } १२४७८) & \end{array}$$

$$\begin{array}{cccc} २४) १११ & (४+१=५ & \text{पाचवा अंक } ५ & \\ ६६ & & (\text{रहे } १२४७) & \end{array}$$

$$\begin{array}{cccc} ६) १५ & (२+१=३ & \text{तीसरा अंक } ३ & \\ १२ & & (\text{रहे } १२७) & \end{array}$$

$$\begin{array}{cccc} २) ३ & (१+१=२ & \text{दूसरा अंक } २ & \\ २ & & (\text{रहे } १७) & \end{array}$$

$$\begin{array}{cccc} १) १ & (१= १ & \text{पहिला अंक } १ & \\ १ & & \text{शेष } ७ & \end{array}$$

उत्तर= ६३५८२१७

प्र०-८ अंकों में ६३५८२१७कौन भेद है ?

$$\begin{array}{cccccccc} ५०४० & ७२० & १२० & २४ & ६ & २ & १० \\ ६ & ३ & ५ & ८ & २ & १ & ७ \\ \hline १ & १ & २ & ४ & २ & & \end{array}$$

$$\begin{array}{r} ५ \quad २ \quad ३ \quad ४ \quad २ \\ ५ \times ५०४० = २५२०० \\ २ \times ७२० = १४४० \\ ३ \times १२० = ३६० \\ ४ \times २४ = ९६ \\ २ \times ६ = १२ \\ \hline २१७ = \text{मलग} = ३ \end{array}$$

उत्तर= २७१११

प्र०-पहिले दो अंकों से ११ क्या घटाये ?

उ०-उलटे हर=११

प्र०-तीसरे से २ क्यो घटाये ?

उ०-पहिले ३ में ५ मध्यम अतम=२

प्र०-चौथे से ४ क्यो घटाये ?

उ०-चौथा अंक ८ है उसके पूर्व ५, ३ और ६ तीन लघुतर अंक है तीन में

१ जोड़ा ४ हुए इसलिये ४ घटाये ?

प्र०-पाचवें अंक से २ क्यो घटाये ?

उ०-पाचवाँ अंक ४ है, इसके पूर्व १ ही लघु है अर्थात् ३, २ लघु में १ और जोड़ा २ हुए इसलिये २ घटाये ।

उत्तर= २७१११

प्र०-६ अंको में १४४ भेद कैसा होगा ?
 $120 \quad 24 \quad 4 \quad 2 \quad 10$
 $1 \quad 2 \quad 3 \quad 4 \quad 5$
 १२०) १४४ (१+१=२ दूसरा अंक २
 120 (रहे १३४४६)

 २४) २४ (१+१=२ दूसरा अंक ३
 24 (रहे १४४६)

 ६) १ (०= १ पहिला अंक १
 (रहे ४४६)
 २) १ (०= १ पहिला अंक ४
 (रहे ४६)
 १) १ (१= १ पहिला अंक ५
 शेष ६

 ०

उत्तर= २३१४४६

७ अंकों के ५०४० भेद

नष्ट
 प्र०-७ अंको में ३५७१ भेद कैसा होगा ?
 $720 \quad 120 \quad 24 \quad 4 \quad 2 \quad 10$
 $1 \quad 2 \quad 3 \quad 4 \quad 5 \quad 7$
 ७२०) ३५७१ (४+१=५ पाचवा अंक ५
 3540 (रहे १२३४६७)

 १२०) ६६१ (५+१=६ छठा अंक ७
 600 (रहे १२३४६)

 २४) ६१ (३+१=४ चौथा अंक ४
 72 (रहे १२३६)

 ६) १६ (३+१=४ चौथा अंक ६
 16 (रहे १२३)

 २) १ (०= १ पहिला अंक १
 (रहे २३)
 १) १ (१= १ पहिला अंक २
 शेष ३

 ०

उत्तर= ५७४६१२३

प्र०-६ अंको में २३१४४६ कौन भेद है ?
 $120 \quad 24 \quad 4 \quad 2 \quad 10$
 $2 \quad 3 \quad 1 \quad 4 \quad 5$
 $-1 \quad 2 \quad 1$

 $1 \quad 2 \quad 0$
 $१ \times १२० = 120$
 $१ \times २४ = 24$
 $४ \times ६ = 24$ लमग=
 १४४
 प्र०-तीसरे अंक से १ न्यो घटाया ?
 उ०-पहिले तीनों में वही लघु है अतल=
 उत्तर= १४४वा

उद्दिष्ट
 प्र०-७ अंको में ५७४६१२३ कौन भेद है ?
 $720 \quad 120 \quad 24 \quad 4 \quad 2 \quad 10$
 $५ \quad ७ \quad ४ \quad ६ \quad १ \quad २ \quad ३$
 $-1 \quad 2 \quad 1 \quad 3$

 $४ \quad ५ \quad ३ \quad ३$
 $४ \times ७२० = 2880$
 $५ \times १२० = 600$
 $३ \times २४ = 72$
 $३ \times ६ = 18$
 $१२३ = लमग = 1$
 ३५७१
 प्र०-पहिले दो अंको से १२ न्यो घटाया ?
 उ०-क्योकि सीवा क्रम है सीधे रवि १२
 प्र०-तीसरे अंक से १ न्यो घटाया ?
 उ०-क्योकि पहिले तीन अंको में वही लघु है, अतल=
 प्र०-चौथे अंक से ३ न्यो घटाया ?
 उ०-उस अंक के पूर्व २ लघु हैं अर्थात् ४ और ५। २ में १ और जोड़ा तो ३ हुए इसलिये ३ घटाये।
 उत्तर= ३५७१वा

८ अंकों के ४०३२० भेद

०-८ अंकों में २७१११वाँ भेद कैसा होगा ?

$$\begin{array}{cccccccc} & ४०४० & ७२० & १२० & २४ & ६ & २ & १० \\ & १ & २ & ३ & ४ & ५ & ६ & ७ \\ ०४०) & २७१११ & (४+१=६ & & & & & & \\ & २४२०० & (रहे १२३४५७८) & & & & & & \end{array}$$

$$\begin{array}{r} ७२०) १६११ \quad (२+१=३ \text{ तीसरा अंक } ३ \\ १४४० \quad (रहे १२४५७८) \end{array}$$

$$\begin{array}{r} १२०) ४७१ \quad (३+१=४ \text{ चौथा अंक } ४ \\ ३६० \quad (रहे १२४७८) \end{array}$$

$$\begin{array}{r} २४) १११ \quad (४+१=५ \text{ पाचवा अंक } ५ \\ ६६ - \quad (रहे १२४७) \end{array}$$

$$\begin{array}{r} ६) १४ \quad (२+१=३ \text{ तीसरा अंक } ४ \\ - १२ \quad (रहे १२७) \end{array}$$

$$\begin{array}{r} २) ३ \quad (१+१=२ \text{ दूसरा अंक } २ \\ २ \quad (रहे १७) \end{array}$$

$$\begin{array}{r} १) १ \quad (१=१ \text{ पहिला अंक } १ \\ १ \quad शेष \quad ७ \end{array}$$

उत्तर= ६३४५७२१७

प्र०-८ अंकों में ६३४५७२१७ कौन भेद है ?

$$\begin{array}{cccccccc} & ४०४० & ७२० & १२० & २४ & ६ & २ & १० \\ & ६ & ३ & ४ & ५ & ७ & २ & १७ \\ & -१ & १ & -२ & ४ & २ & & \end{array}$$

$$\begin{array}{r} ४ \quad २ \quad ३ \quad ४ \quad २ \\ ४ \times ४०४० = - २४२०० \\ २ \times ७२० = १४४० \\ ३ \times १२० = ३६० \\ ४ \times २४ = ९६ \\ २ \times ६ = १२ \\ २१७ = \text{मिलग} = ३ \end{array}$$

उत्तर= २७१११

प्र०-पहिले दो अंकों से ११ क्या घटाये ?

उ०-उलटे हर=११

प्र०-तीसरे से २ क्यों घटाये ?

उ०-पहिले ३ में ५ मध्यम अंताम=२

प्र०-चौथे से ४ क्यों घटाये ?

उ०-चौथा अंक ५ है उसके पूर्व ४, ३

और ६ तीन जघुतर अंक है तीन में

१ जोड़ा ४ हुए इसलिये ४ घटाये ?

प्र०-पाचवें अंक से २ क्यों घटाये ?

उ०-पांचवाँ अंक ४ है इसके पूर्व १ ही

जघु है अर्थात् ३, १ जघु में १ और

जोड़ा २ हुए इसलिये २ घटाये ।

उत्तर= २७१११

६ अंकों के ३६२८८० भेद

नष्ट

प्र०-६ अंकों में १४७८६६६६ का भेद कैसा होगा ?

४०३२० ५०४० ७२० १२० २४ ६ २ १ ०

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९

४०३२०) १४७८६६६ (३+१=४ चौथा अंक ४
१२०६६० (रहे १२३५६७८६)

५०४०) २६६३५ (५+१=६ छठा अंक ७
२५२०० (रहे १२३५६८६)

७२०) १७३५ (२+१=३ तीसरा अंक ३
१४४० (रहे १२५६८६)

१२०) २६५ (२+१=३ तीसरा अंक ५
२४० (रहे १२६८६)

२४) ५५ (२+१=३ तीसरा अंक ६
४८ (रहे १२८६)

६) ७ (१+१=२ दूसरा अंक २
६ (रहे १८६)

२) १ (०= १ पहिला अंक १
(रहे ८६)

१) १ (१= १ पाहला अंक १
१ शेष ६

उत्तर= ४७३५६२१८६

उद्दिष्ट

प्र०-६ अंकों में ४७३५६२१८६ का भेद
कौन है ?

४०३२० ५०४० ७२० १२० २४ ६ २ १ ०

४ ७ ३ ५ ६ २ १ ८ ६

-१ २ १ ३ ४ १

३ ५ २ २ २ १

३×४०३२०= १२०६६०

५×५०४०= २५२००

२×७२०= १४४०

२×१२०= २४०

२×२४= ४८

१×६= ६

१८६=लमग= १

१४७८६६

प्र०-पहिले दो अंकों के नीचे १२ क्या
रखे ?

उ०-सीधे १२

प्र०-तीसरे के नीचे १ क्यों ?

उ०-अंतल=१

प्र०-चौथे के नीचे ३ क्यों ?

उ०-चौथे अंक ५ के पूर्व दो लघुतर
अंक हैं दो में १ और जोड़कर ३
रखे ।

प्र०-पाचवें के नीचे ४ क्यों ?

उ०-पाचवें अंक ६ के पूर्व तीन लघुतर
अंक हैं उनमें १ और जोड़कर ४
रखा ।

प्र०-छठे के नीचे १ क्यों ?

उ०-छठा अंक २ है उससे लघुतर अंक
पूर्व में कोई नहीं । शेष शून्य ।
इसलिये १ रखा ।

उत्तर= १४७८६६

प्रश्न—ऊपर जो नियम भिन्नांक नष्टोद्दिष्ट के विये हैं वे तो सब सक्रमांकों के हैं वेही
पदि बिना क्रम के हुये तो उनके नष्टोद्दिष्ट कैसे निकलेंगे ?

उत्तर—नमः, नमो तो पश्चे सरलगति से लिखो यथा—

प्रश्नांक	सरलगति	भेद
३४२५	२३४५	०४
७५३८	३५७८	२४

नष्ट निरालो के लिये ता वही नियम है जो ऊपर कहलाये हैं हा उद्दिष्ट निकलने के लिये सरलगति में से सरलानुक्रमपूर्वक घटाना चाहिये जिन अंशों के नीचे जो अंक शेष रहे उन अंतर को ध्यान में रखे। उद्दिष्ट निकालने के लिये प्रथम में से जो जो अंक ऊपर कहे हुए नियमानुसार घटाया जाता है उसमें निम्न अंक का जो अंतर है वह भी मिलाकर घटावे शेष गुणन क्रिया पूर्वक ही है यथा—

सरलगति	२३४५	३५७८
घटये	१२३४	१२३४
अंतर	११११	२३४४

उत्तर प्रश्न—जताग्रो २३४५ में ३४०५ कौनसा भेद है ?

उत्तर निरा सखि—यह चार अंशों का उद्दिष्ट है अन्त के तीन अंक तो सदा छोड़ ही दिये जाते हैं यहा प्रथमांक ३ है साधारण नियमानुसार तो प्रथमांक में से १ घटता है यहाँ पर ३ के नीचे १ का अन्तर है इसलिए ३+१=४ प्रथमांक ३ में से घटाये तो शेष १ रहा ।

उद्दिष्ट

नष्ट

$$\begin{array}{r} ६२१० \\ ३४२५ \\ \hline -२ \\ \hline १ \end{array}$$

$$\begin{array}{r} १ \times ६ = ६ \\ ४२५ मलग = ३ \\ \hline ६ \end{array}$$

२३४५ का क्या भेद कैसे होगा ?

$$\begin{array}{r} १) ६ (१=२ \text{ दूसरा अंक } ३ \\ ६ \text{ (रहे २४५)} \\ \hline ३ \end{array}$$

$$\begin{array}{r} २) ३ (१=२ \text{ दूसरा अंक } ४ \\ २ \text{ (रहे २५)} \\ \hline १ \end{array}$$

$$\begin{array}{r} ३) १ (१=१ \text{ पहिला अंक } ५ \\ १ \text{ शेष } ४ \end{array}$$

उत्तर= क्या भेद

उत्तर= ३४२५

दूसरा उद्दिष्ट पत्र .

नष्ट

३५७ = में = ३५७ कौनसा भेद है

३५७ = का १६वां भेद कैसे होगा ?

$$\begin{array}{r} ३५७ \\ - ३५७ \\ \hline ० \end{array}$$

$$३ \times १० = ३०$$

$$३ \times ५ = १५$$

$$३ \times ७ = २१$$

$$\hline ३$$

$$३ \times ६ = १८$$

$$३ \times ७ \text{ जमग} = २१$$

$$\hline २६$$

उत्तर = १६वां भेद

$$\begin{array}{r} ३५७ \\ - ३५७ \\ \hline ० \end{array}$$

$$३ \times १० = ३०$$

$$३ \times ५ = १५$$

$$३ \times ७ = २१$$

$$\hline ३$$

$$३ \times ६ = १८$$

$$३ \times ७ \text{ जमग} = २१$$

$$\hline २६$$

$$३ \times ७ = २१$$

$$\hline ०$$

चौथा अंक
(रहे ३५७)

प्रथम अंक
(रहे ५७)

प्रथम अंक
शेष

उत्तर =

= ३५७

इति श्री अकविलासे भानु कवि विरचिते नष्टोद्दिष्ट प्रदर्शननाम चतुर्थो विलास ॥

भिन्नांक छल प्रश्न वर्णन ।

- प्र०-बताओ पांच अंको में १२७वा भेद कैसा होगा ?
 उ०-यह प्रश्नही अशुद्ध है ५ अंको के १२० से अधिक भेद नहीं होते ।
 प्र०-बताओ ६ अंको में यह कौनसा भेद है-१२७४३ *
 उ०-यह प्रश्नही अशुद्ध है छे अंको के भेदों में १ से लेकर ६ तकही अक आवेंगे ७ का अक नहीं आसक्ता । शुद्ध प्रश्न यो होसक्ता है १२६४३५ । *
 प्र०-बताओ ६ अंको में १२६६३४ कौनसा भेद है ?
 उ०-यह प्रश्न भी अशुद्ध है एक अक दोवार नहीं आसक्ता, जितने अकों का प्रश्न हो उसमें उतनेही अक पूरे चाहिये चाहे ये किसी क्रम से हो यथा १२६६३४ अशुद्ध और १२६५३४ वा १२५६३४ शुद्ध है ।
 * यदि पृच्छक महाशय आप्रश्न करें कि छहो अक भिन्न है छे न सही छे के बदले ७ तो है तो उद्दिष्ट में साधारण नियम से एक और अधिक अक लेना होगा क्योंकि ६ और ७ में १ का अन्तर है जैसे—

$$\begin{array}{r} १२० \ २४ \ ६ \ २ \ १ \ ० \\ \ २ \ ६ \ ४ \ ३ \ ५ \\ \hline १ \ २ \ ३ \end{array}$$

$$\begin{array}{r} १२० \ २४ \ ६ \ २ \ १ \ ० \\ \ १ \ २ \ ७ \ ४ \ ३ \ ५ \\ \hline १ \ २ \ ४ \end{array}$$

$$\begin{array}{r} ३ \\ ३ \times ६ = \\ ४३५ \text{ मजग} \end{array}$$

$$\begin{array}{r} १५ \\ ३ \end{array}$$

$$\begin{array}{r} ३ \\ ३ \times ६ = \\ ४३५ \text{ मजग} \end{array}$$

$$\begin{array}{r} १५ \\ ३ \\ \hline २१ \end{array}$$

१२३४५७ में २१वां भेद कैसा होगा ?

$$\begin{array}{r} १२० \ २४ \ ६ \ २ \ १ \ ० \\ \ १ \ २ \ ३ \ ४ \ ५ \ ७ \end{array}$$

$$\begin{array}{r} १२०) \ २१ \ ० = \\ \ २१ \end{array}$$

रहे २३४५७

$$\begin{array}{r} २४) \ २१ \ ० = १ - \\ \ २४ \end{array}$$

रहे ३४५७

$$\begin{array}{r} ६) \ २१ \ (३ = ४ \text{ चौथा अक} \\ \ १८ \\ \hline ३ \end{array}$$

रहे ३४५

$$\begin{array}{r} २) \ ३ \ (१ = २ \ \text{दूसरा अक} \\ \ २ \\ \hline १ \end{array}$$

रहे ३५

$$\begin{array}{r} १) \ १ \ (१ \ \text{प्रथम अक} \\ \ १ \\ \hline ० \end{array}$$

शेष ५

उत्तर = १२७४३५

मिश्रितांक सूची भेद वर्णन ।

दो वा अधिक तुल्य जहँ अरु, भिन्न अरु सह 'मिश्रित अरु' ।
 तुल्य अरु सब लेहु निहार, तिन तर भेद भिन्नवत् धार ।
 गुणानफलहिँ सो भाजि अखेद, प्रश्न अरु के पूरे भेद ।
 लब्धि समान भेद उर लाव, उत्तर लब्धि हरि के गुण गाव ॥

जिस अरु समूह में मिश्रितांक के साथ दो वा अधिक तुल्यांक दो वे मिश्रितांक कहाते हैं ।

। मिश्रितांक के साथ दो वा अधिक तुल्यांक एक वा अधिक स्थानों में हो तो मिश्रितांक उनके सम्पूर्ण भेद उनके नीचे लिखो यदि ऐसे भेद दो वा अधिक स्थानों में हों तो उन सबों का परस्पर गुण करो जो गुणानफल हों उसका भाग प्रश्नांक के अरु को भी भिन्न मानकर उनके सम्पूर्ण भेदों में दे देव जो लब्धि हो वही उत्तर होगा यथा —

$$\frac{११\ २२}{२ \times २} = \frac{२४}{४} = ६$$

$$\frac{१२\ ३३}{० \times २} = \frac{२४}{२} = १२$$

$$\frac{११\ ०२२}{२ \times ६} = \frac{१२०}{१२} = १०$$

$$\frac{११, २२२२}{२ \times २४} = \frac{७२०}{४८} = १५$$

$$\frac{११\ ३२\ ३३\ ४}{२ \times २ \times २ \times ०} = \frac{५०४०}{८} = ६३०$$

$$\frac{१११-२२२२}{६ \times २४} = \frac{५०४०}{१४४} = ३५$$

$$\frac{११\ २२२२२}{२ \times १२०} = \frac{५०४०}{२४०} = २१$$

इति भीष्मकविजासे भानुकावि विरचिते मिश्रितांक सूची भेद वर्णनप्राम सप्तमो विजास,



(५)

१	१२३४४	२१	२४३१४	४१	४१४२३
२	१२४३४	२२	२४३४१	४२	४१४३२
३	१२४४३	२३	२४४१३	४३	४२१३४
४	१३२४४	२४	२४४३१	४४	४२१४३
५	१३४२४	२५	३१२४४	४५	४२३१४
६	१३४४२	२६	३१४२४	४६	४२३४१
७	१४२४४	२७	३१४४२	४७	४२४१३
८	१४२४३	२८	३२१४४	४८	४२४३१
९	१४३२४	२९	३२४१४	४९	४३१२४
१०	१४३४२	३०	३२४४१	५०	४३१४२
११	१४४२३	३१	३३१२४	५१	४३२१४
१२	१४४३२	३२	३३१४२	५२	४३२४१
१३	२१३४४	३३	३३२१४	५३	४३३१२
१४	२१४३४	३४	३३२४१	५४	४३३२१
१५	२१४४३	३५	३३३१२	५५	४३३२३
१६	२३१४४	३६	३३४२१	५६	४३४३२
१७	२३४१४	३७	४१२३४	५७	४३४३३
१८	२३४४१	३८	४१३४३	५८	४३४३३
१९	२४१३४	३९	४१३२४	५९	४३३१२
२०	२४१४३	४०	४१३४२	६०	४३३२१

६०

(५)	(५)	(६)	(६)	(७)	
१	१११२२	१	१११२२	१	११२२२२२
२	१०१२२	२	११२१२२	२	११२१२२२
३	१२२१०	३	११२११	३	११२१२२२
४	१२२११	४	१२२१२	४	११२२१२२
५	२११२२	५	१२२२२१	५	१२२२२१२
६	२१२१२	६	२११०२२	६	१२२२२११
७	२१२२१	७	२१११०२	७	२११२२२२
८	२२११२	८	२१२२१२	८	२१२११२२
९	२२१२१	९	२२११२२	९	२१२२११२
१०	२२२०११	१०	२२११२२	१०	२१२२२११
	१०	११	२२१२१२	११	२१२२२११
	१०	१२	२२१२२१	१२	२१२११२२
	१०	१३	२२२१११	१३	२२११२२२
	१०	१४	२२२१११	१४	२२१२२१२
	१०	१५	२२२२११	१५	२२२१२२१
	१०	१६	२२२२११	१६	२२२१२२२
	१०	१७	२२२१११२	१७	२२२१२२२
	१०	१८	२२२११२१	१८	२२२१२२१
	१०	१९	२२२१२११	१९	२२२२११२
	१०	२०	२२२११११	२०	२२२२१११
	१०	२१	२२२२१११	२१	२२२२२११

सु० ध्यान रहे कि प्रत्येक भेद की सख्या एक दूसरे से अधिक रहे ।

प्र०—नीचे लिखे मिश्रिताकों के प्रथम और अतिम भेदों के रूप कैसे होंगे और उनके समस्त भेदों की सख्या कितनी है ?

उ० प्रश्नांक	प्रथमभेद (सरलगति)	अतिमभेद (उल्टीगति)	समस्तभेद सख्या
११३४	११३४	४३११	१२
११४३	११३४	४३११	१२
१५२२७	१२२५७	७५२२१	६०
६१६३८	१३८६६	६६८३१	६०
७३११२२	११२२३७	७३२२११	१८०

इति श्री अंक विलासे भानुकवि विरचिते मिश्रिताक प्रस्तार
वर्णननाम अष्टमो विलास ॥



खंड प्रस्तार प्रदर्शन ।

७ अक्ष—१,१००२२=३५ भेद

(१) १—११२२०२=१५
 २—१११२२०=००
३५

(२) ११—१२०२२=५
 १०—१,००२=१०
 ०१—११००२=१०
 २२—१,१२२=१०
३५

(३) १११—२२००=१
 ११२—१२०२=०
 १२१—१२०२=०
 १२२—१००२=६
 २११—१२००=१
 २१२—११२०=६
 २२१—११२०=६
 २२२—१११०=६
३५

(४) १११०—२२०=१
 ११२१—२०२=१
 ११२२—१२२=३
 १२११—०२२=१
 १२१२—१२२=३
 १२२१—१२२=३
 १००२—११२=३
 २१११—२२२=१
 २११२—१२२=३
 २१२१—१२२=३
 २१२२—११२=३
 २२११—१०२=३
 २२१२—११०=३
 २२२१—११२=३
 २२२२—१११=३
३५


७ अक्ष—११२२२०=२१ भेद

(१) १—१००००२=६
 ०—१,१०००२=१५
२१

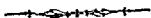
(२) ११—२२००२=१
 १२—१०२२२=५
 २१—१२२०२=५
 २२—११२०२=१०
२१

(३) ११०—२२०२=१
 १२१—००२=१
 १२२—१२००=३
 ०११—२००२=१
 ०१२—१२०२=३
 ०२१—१२०२=३
 ०२२—१,००२=६
२१

(४) ११०२—२२२=१
 १२११—२२०=१
 १२२१—००२=१
 १२२२—१०२=३
 ०११२—२००२=१
 ०१२१—०२०=१
 ०१२२—१२०=३
 ०२११—२२२=१
 ०२१२—१२२=३
 ०२२१—१२२=३
 ०२२२—११२=३
२१

 सवो का परिणाम एक सनातन है ।

इति श्री अरुविलासे भानुशुवि विरचिते खंड प्रस्तार प्रदर्शननाम
 नवमो विलास ।



ध्रुवांक ।

(Rudimental figures)

प्रश्नांक में जितने अंक हैं, उनमें से प्रत्येक अंक प्रस्तार के आदि में कितने बार आवेगा ?

भिन्न अंक इक इक तैलेव, सम सम अंक पृथक् गिनि लेव ।
गुणि भेदन सों भाजि सुचित्त, प्रश्न अंक सख्या सो मित्त ।
आदि अंक सब भेदन केर, सहजहि मिलै न लागै बेर ।
इनहि ध्रुवांक जानिये तात, सोई सकल भेद प्रगटात ।

$$(१) १२२=३ भेद \quad \frac{१ \text{ भिन्नांक} \times ३}{३} = १, \quad १ \text{ आदि में} - १ \text{ भेद} \quad १२२$$

$$\frac{२ \text{ समानांक} \times ३}{\text{प्रश्नांक } ३} = २, \quad २ \text{ आदि में} - २ \text{ भेद} \quad २१२$$

$$(२) ११२३=१२ भेद \quad \frac{२ \text{ समानांक} \times १२}{\text{प्रश्नांक } ४} = \frac{२४}{४} = ६, \quad १ \text{ आदि में} - ६ \text{ भेद} \quad ११२३$$

१२३१
१२३१
१२३१
१२३१
१२३१
—

$$\frac{१ \text{ भिन्नांक} \times १२}{\text{प्रश्नांक } ४} = ३, \quad २ \text{ आदि में} - ३ \text{ भेद} \quad २११२$$

२३११

$$\frac{१ \text{ भिन्नांक} \times १२}{\text{प्र } ४} = \frac{१२}{४} = ३, \quad ३ \text{ आदि में} - ३ \text{ भेद} \quad ३११२$$

३१२१

३२११

$$(३) ११२२२=१० भेद$$

$$\frac{२ \text{ समानांक} \times १०}{\text{प्र } ५} = \frac{२०}{५} = ४, \quad १ \text{ आदि में} - ४ \text{ भेद} \quad ११२२$$

१२२२
१२२२
१२२२

मिश्रितानांक उद्दिष्ट तथा नष्ट वर्णान ।

मिश्रितानांक के लिखिये भेद, पुनि ध्रुव अरुनि केर विभेद ।

ध्रुवाकन गत भेद जितेक, क्रमों जोरिय सङ्गित विवेक ॥१॥

भेद आदि जेह एक लखाय, तहें तहें शून्य धरौ हर्षाय ।

अतिम त्रय के भेदहुँ जोरि, उद्दिष्टाहें रुहिये विन खोरि ॥२॥

* उलट क्रिया ताकी कह नष्ट, लहिये भेद भीत विन ऋष्ट ।

त्रय तें अग्रिम प्रश्न के प्रक, अतिम तीन तजौ विन शक ॥३॥

तीन भिन्न छै भेद अभग, ध्यान धरे "लीला मम गग" ।

तीन तुल्य तहें शून्य प्रमान, सरल भेद इक गिनौ सुजान ॥४॥

माय भिन्न दूसर गनि लेव, व्यतिक्रमहि तीसर कहि देव ।

कछुक उदाहरण इनके दीन, योरहि में समुक्तिहै प्रवीन ॥५॥

प्रश्न नष्ट अथवा उद्दिष्ट, सम कर दौर सदा निर्दिष्ट ।

भानु भनित यह रीति उदार, जग मेंह कीर्ति बढावनहार ॥६॥

उद्दिष्ट

प्रश्नाक ११२२, भेद ६, ध्रु १ के ३, २ के ३
प्र०-११२४ में २१२२ कौनसा भेद है ?
२ के पूर्व भेद ३
११२ सरल १

उत्तर ४ था

प्रश्नाक ११२३, भेद १२, ध्रु १ के ६,
२ के ३ ३ के ३

प्र०-११२३ में ३१२२ कौनसा भेद है ?
३ के पूर्व भेद ६
११२ सरल १

उत्तर १० वा

नष्ट

प्र०-११२२ का क्या भेद कैसा है ?
४ अको में ३ के परे २
शेष १ ११२ सरल

उत्तर २११२

प्र०-११२३ में १०वा भेद कैसा है ?
४ अको में ६ के परे ३
शेष १ सरल ११२

उत्तर ३११२

* (उद्दिष्ट में)

(१) ध्रुवाक पूर्व

(२) १=०

(३) अतिम तीनकी सख्या

(नष्ट में)

ध्रुवाकोत्तर

०=१

अतिम तीनके रूप की रचना

$$(७) \begin{array}{r} १२२७ \text{ मेव} \\ १२ \end{array} \frac{१२ \times ७}{४} = २१ = २१$$

$$\begin{array}{r} २१ \\ २१ \\ २१ \\ २१ \\ \hline २३३३३ \end{array} = \text{उत्तर } २३३३३$$

$$(८) \begin{array}{r} १२३४ \text{ मेव} \\ २४ \end{array} \frac{२४ \times १०}{४} = ६० = ६०$$

$$\begin{array}{r} ६० \\ ६० \\ ६० \\ ६० \\ \hline ६६६६६० \end{array} = \text{उत्तर } ६६६६६०$$

$$(९) \begin{array}{r} १२३७ \text{ मेव} \\ २४ \end{array} \frac{२४ \times ३}{४} = ७५ = ७५$$

$$\begin{array}{r} ७५ \\ ७५ \\ ७५ \\ \hline ५६६६५५ \end{array} = \text{उत्तर } ५६६६५५$$

इति श्रीअनकविलासे भानुकवि विरचिते प्रस्तार मेदान्तर्गत सख्या योग
पर्यनघाम द्वादशो विलासः ।

मिश्रिनांक उद्दिष्ट तथा नष्ट वर्णान ।

मिश्रितारु के लिखिये भेद, पुनि ध्रुव अरुनि केर विभेद ।

ध्रुवाकन गत भेद नितेरु, क्रमतेँ जोरिय सहित विवेरु ॥१॥

भेद आदि जेह एरु लखाय, तहँ तहँ शून्य वरौ हर्षाय ।

अतिम त्रय के भेदहुँ जोरि, उद्दिष्टहिँ रुहिये विन खोरि ॥२॥

* उलट क्रिया ताकी कह नष्ट, लहिये भेद मीत विन कष्ट ।

त्रय तेँ अग्रिक प्रश्न के अक, अतिम तीन तजौ विन शक ॥३॥

तीन भिन्न छै भेद अभग, ध्यान धरे "लीला यम गग" ।

तीन तुल्य तहँ शून्य प्रमान, सरल भेद इरु गिनौ सुजान ॥४॥

मध्य भिन्न दूसर गनि लेव, व्यतिक्रमहिँ तीसर कहि देव ।

कछुक उदाहरण इनके दीन, योरहि मे समुझिहै प्रवीन ॥५॥

प्रश्न नष्ट अथवा उद्दिष्ट, सत्र कर और सदा निर्दिष्ट ।

भानु भनित यह रीति उदार, जग मेंह कीर्ति बढावनहार ॥६॥

उद्दिष्ट

प्रश्नाक ११२२, भेद ६, ध्रु १ के ३, २ के ३
प्र०-११२४ मे २११२ कौनसा भेद है ?
२ के पूर्व भेद ३
११२ सरल १

उत्तर

४ या

प्रश्नाक ११२३, भेद १२, ध्रु १ के ६,
२ के ३ ३ के ३

प्र०-११२३ मे ३११२ कौनसा भेद है ?
३ के पूर्व भेद ६
११२ सरल १

उत्तर

१० वा

नष्ट

प्र०-११२२ का ध्रुव भेद कैसा है ?
४ अको मे ३ के परे २
शेष १ ११२ सरल
४

उत्तर

२११२

प्र०-११२३ मे १०वा भेद कैसा है ?
४ अको मे ६ के परे ३
शेष १ सरल ११२
१०

उत्तर

३११२

* (उद्दिष्ट मे)

(१) ध्रुवाक पूर्व

(२) १=०

(३) अतिम तीनकी मख्या

(नष्ट मे)

ध्रुवाकोत्तर

०=१

अतिम तीनके रूप की रचना

उद्दिष्ट

प्रश्नांक ११२२२, १ अज्ञ-भेद १०, १ के	
४, २ के द	
प्र०-११२२२ में २२१२१ कौनसा भेद है?	
२२१२१ में २ के पूर्व भेद	४
(२ २१) भेद द ध्रु० १ के ३, २ के ३	
(वा ११२०)	
२१२१ में २ के पूर्व ध्रु० भेद ३	
शेष १२१ मध्यम भिन्न	३
उत्तर	६वां

नष्ट

प्र०-११२२२ में १०वां भेद कैसा है ?	
११२२२ में ४ के परे	०
११२२ में ३ के परे	२
शेष २, ११० का	
हृन्मरा रूप	१२१
उत्तर	२२१०१

प्रश्नांक १११२२ भेद १०, ध्रु० १ के द, २ के ४

प्र०-१११२२ में २११२२ कौनसा भेद है?	
२११२२ में २ के पूर्व भेद	६
१११२ में १ के पूर्व	०
शेष ११२ सरल	१
उत्तर	७वां

प्र०-१११२२ में ७वां भेद कैसा होगा ?

१११२२ में ६ भेदों के परे	२
११२२ में ० के परे	१
शेष १ सरल =	११२
७	
उत्तर	२१११२

प्रश्नांक ११२२२२ भेद १५, ध्रु० १ के ५, २ के १०
प्र०-११२२२२ में २२२११२ कौनसा भेद है?

२२२११२ में २ के पूर्व	५
(२२११२ के भेद १० ध्रु० १ के ५, २ के ६)	
२२११२ में २ के पूर्व ध्रु०	४
{ २११२ } के भेद ६, ध्रु० १ के ३,	
{ ११०२ } २ के ३)	
२११२ में २ के पूर्व	३
शेष ११२ सरल	१
उत्तर	१३वां

प्र०-११२२२२ में १३वां भेद कैसा होगा ?

११२२२२ में ५ भेदों के परे	२
११२२२ में ४ गत	२
११२२ में ३ गत	२
शेष १ सरल =	११२
१३	
उत्तर	२२२११२

उद्दिष्ट

नष्ट

प्रश्नाक १११०२२ भेद २० धु १ के १०, २ के १०
 प्र०-१११२२२ मं २२१११२ कौनसा भेद
 है ?
 २२१११२ में २ के पृथ्व भेद १०
 (२१११० वा १११२२ के १० भेद
 धु १ के ६, २ के ४)
 २१११२ में २ के पूर्व भेद ६
 १११२ म १ के पूर्व भेद ०
 शेष ११२ सरल १

उत्तर १७वा

प्र०-१११२२२ में १७वा भेद कैसा है ?
 ६ अको में १० के परे २
 ५ अको में ६ के परे २
 ४ अको में ० के परे १
 शेष १ सरल = ११२

१७

उत्तर २२१११२

प्रश्नाक ११२२२२२ भेद २१ धु १ के ६,
 २ के १५
 प्र०-११२२२२ मं २२२२११२ कौनसा
 भेद है ?
 २२२२११२ में २ के पूर्व भेद ६
 (२२२११२ के १५ भेद धु १ के ५,
 २ के १०)
 २२२११२ में २ के पूर्व भेद ५
 (२२११२ के १० भेद धु १ के
 ४, २ के ६)
 २०११२ में २ के पूर्व भेद ४
 (२११० के ६ भेद धु १ के ३,
 २ के ३)
 २११२ म ० के पूर्व भेद ३
 ११२ सरल १

उत्तर १६वा

प्र०-११२२२२२ मं १६वा भेद कैसा होगा ?
 ७ अको में ६ के परे २
 ६ अको में ५ " २
 ५ अको में ४ " ०
 ४ अको में ३ " २
 शेष १ सरल = ११२

१६

उत्तर २२०२११२

केवल पांच मिश्रिताको को ही लीजिये तो उनके भेद कई प्रकार के होते हैं यथा,— २ सम और ३ भिन्न के ६० भेद, ३ सम और २ भिन्न के २० भेद, ४ सम और १ भिन्न के १० भेद, २ सम २ सम और १ भिन्न के ३० भेद तथा २ सम और ३ सम के १० भेद होंगे वैसेही सम परिमाणित रूप से (Proportionately) उनके सत्यरु भी पृथक् पृथक् होंगे यथा ५ भिन्नांशों के १२० परन्तु २ सम और ३ भिन्नांशों के उनके अर्थात् ६० भेद होंगे (देखो प्रस्तार पृष्ठ २२) इनके सूची अक भी वैसेही आधे राज्यांश

५ भिन्नांश की सूची २४ ६ २ १ ०

१२३४५

२ सम और ३ भिन्नांशों की सूची

१२३४५ १२ ३ १ ० ०

मिश्रिताक सूची और प्रस्तार के नियम तो स्पष्ट हैं परन्तु उनके अर्थात् अनेक भेदापभेदों के कारण उद्दिष्ट वि नियम कष्टस व्य होजाते हैं उसी भी समानांश और भिन्नांश निकटवर्ती न होकर दूरवर्ती हुए तो और विचार की अपेक्षा रहती यथा,—

१२३४४ निकटवर्ती

१२३७७ दूरवर्ती

यहां सूच्यकनुसार १२३४५ के ६० भेदों के कुछ उद्दिष्टोदाहरण लिखते हैं—

पाच अंशों के उद्दिष्ट में अदि के केवल दो अंशों का ही विचार होता है जो ३ के भेद की सख्या जांड ली जाती है आदि के दो अंशों में से किस प्रकार अक घटाये जायेंगे वे नीचे लिखे हैं,—

१२ १३ १४ २१ ०३ २४ ३१ ३२ ३४ ४१ ४२ ४३ ४४
 -१२ १२ १२ ११ १२ १२ ११ ११ १२ ११ १० ०३ ०२

भिन्नाकवत् सरलगति में १२ और विषमगति में ११ घटेंगे परन्तु ४२ से १० ४३ से ०३ और ४४ से ०२ घटेंगे, इनके कुछ उदाहरण नीचे देते हैं—

१२३४५
 ०१ ३ ४ ५
 -१ १
 १
 १×१०=१०
 ३४३ प्रम भेद- १
 १३

३४२४१
 ३ ४ ० ४ १
 -१ २
 २ २
 ०×१०=२४
 २×३= ६
 २४१ प्रम भेद=३
 ३४

$$\begin{array}{r} १२३१०० \\ ४२४३१ \\ -० \\ \hline ३२ \end{array}$$

$$\begin{array}{l} ३ \times १ = ३ \\ २ \times २ = ४ \\ ४३१ \text{ मलग} = ६ \\ \hline ४५ \end{array}$$

$$\begin{array}{r} १२३१०० \\ ४३२१४ \\ -०३ \\ \hline ४ \end{array}$$

$$\begin{array}{l} ४ \times १२ = ४८ \\ २१४ \text{ मलग} = ३ \\ \hline ५१ \end{array}$$

$$\begin{array}{r} १०३१०० \\ ४४०१३ \\ -०० \\ \hline ४२ \end{array}$$

$$\begin{array}{l} ४ \times १० = ४० \\ २ \times ३ = ६ \\ २१३ \text{ मलग} = ३ \\ \hline ४९ \end{array}$$

साराश यह है कि मिथितान्न में परु के नियम दूसरे को उपयुक्त नहीं। जैसे उदरोक्त नियम घटत करने के लिये १२३७७ को १२३४४ मानना पड़ेगा। पतदर्थ केवल सिद्धांत समझ लेना अलम् है विशेष गोरख धर्म में पड़ने की आवश्यकता नहीं। मिथिताको के नष्टोद्दिष्ट धुवारु की रीति से ऊपर बताये गये हैं परन्तु मुख्यत उनके सची और प्रस्तार भेद की गति ही समझ लेना पर्याप्त है।

इति श्रीअकत्रिलासे भानुकरि विरचिते मिथितान्न नष्टोद्दिष्ट
घर्णनग्राम त्रयोदशो त्रिलास ।



गृहीत मुक्त रीति वर्णन ।

प्रश्नात्तो में से कुछ अक्षर लय ग हरना और शेष लेकर उनके मूलाक्षर और रूपान्तर (भेद) बता देने की रीति को गृहीत मुक्त रीति कहते हैं ।

गृहित मुक्त अंकन की रीति । गृहित भेद लहि होय प्रतीत ॥
मुक्त अंक के भेद जितेक । पूर्ण भेद भाजिय सविवेक ॥
गृहित मुक्त द्वय भेद मिलाय । भाजिय पूर्ण भेद मन लाय ॥
मूल अक्षर सख्या प्रगटात । जाहि लहे जिथ अति हुलसात ॥

प्र०-१२३४ में प्रत्येक वार दो दो अक्षर लेव तो कितने भेद होंगे ?

मुक्तांक २ के २ भेद-पूर्ण भेद $\frac{२४}{२} = १२$ भेद

गृहिताक्षर के २ भेद $२ \times २ = ४$ $\frac{२४}{४} = ६$ मूलांक

१२

१३

१४

२३

२४

३४

 $६ \times २ = १२$

दूजी रीति सुलभ सुनि लेव । वाम गती गृहितहि गुणि देव ॥
मुक्त गृहित भेदन सो भाजि । मूल अक्षर सख्या ले साजि ॥

प्र०-१२३४ में प्रत्येक वार दो दो अक्षर लेव तो कितने भेद होंगे ?

वामगति से पिछले दो अक्षर $४ \times ३ = १२$ भेद

मुक्त २ के २ भेद, गृहीत २ के २ भेद पूर्ण भेद $\frac{२४}{४} = ६$ मूलांक

अन्योदाहरण

प्र०-१२३४ में प्रत्येक वार तीन दो (पहिली रीति)

तो

१

मुक्तांक १ का १

कुल

गृहिताक्षर

१२३	रूपान्तर है	
१२४	"	
१३३	"	
२३४	"	
		४ × ६ = २४

(दूसरी रीति)

गुं ४ × ३ × २ = २४ कुल भेद

मुक्ताक १ का १ भेद

गृहीताक ३ के ६ भेद

$$१ \times ६ = ६ \quad \frac{२४}{६} = ४ \text{ मूलाक पूर्ववत्}$$

प्र०-१२३४५ में प्रत्येक वार तीन तीन अक लें तो कितने भेद होंगे ?

(पहिली रीति)

मुक्ताक २ के २ भेद, पूर्ण भेद $\frac{१२०}{२} = ६०$ कुल भेद

गुं ३ के ६ भेद

मुं २ के २ भेद $६ \times २ = १२$ $\frac{१२०}{१२} = १०$ मूलाक $\times ६ = ६०$

(दूसरी रीति)

गुं $५ \times ४ \times ३ = ६०$ कुल भेद

गुं \times मुं

$$६ \times २ = १२ \quad \frac{१२०}{१२} = १० \text{ मूलाक}$$

१२३	१४५
१२४	२३४
१२५	२३५
१३३	२४५
१३४	३४५

प्र०-१२३४५६ में प्रत्येक वार चार चार अक लिये तो कितने भेद होंगे ?

(पहिली रीति)

२ मुक्ताक के २ भेद पूर्ण भेद $\frac{७२०}{२} = ३६०$ कुल भेद

२ गुं के २ भेद

४ गुं के २४ भेद $२ \times २४ = ४८$ $\frac{७२०}{४८} = १५$ मूलाक $\times २४ = ३६०$

१२३४	१३४५	२३४५
१२३५	१३४६	२३४६
१२३६	१३५६	३४५६
१२४५	१३५६	
१२४६	२३४५	
१२५६	२३४६	

अक्ष	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
प्रत्येक वार गृहीताक	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ
पृथक् पृथक् मूलाक	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ
प्रत्येक मूलाक के भेद	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ
समस्त आतारिक भेद	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ
मुक्ताङ्क	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ
अक्ष	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
प्रत्येक वार गृहीताक	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ
पृथक् पृथक् मूलाक	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ
प्रत्येक मूलाक के भेद	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ
समस्त आतारिक भेद	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ
मुक्ताङ्क	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ	ॐ ॐ ॐ

अरुपाश विद्या ललिते, निष्कलक निघात ।
वेदि गुणीजन रीभित्, सरल मानु सिद्धात ॥

श्रुति श्रीअकपिलसे भानुकि विरचिते गृहीत मुक्त रीति पर्यायनाम चतुर्दशा विज्ञास ॥

कौतुकांक ।

“ नाम वेढ गुण वाण युत, द्विगुण वमृ हत शेष ” ।

“ राम मयी यह जगत है, पंडित जान विशेष ” ॥

टी०—नामाक्षरों को ४ से गुणा करके उसमें ५ जोड़ो, जो योगफल हो उसका दूना करो और ८ से भाग देन, संदेव २ बचेंगे यथा:—

$१ \times ४ + ५ = ९ \times २ = १८$	शेष
$\frac{१८}{८}$	२
$२ \times ४ + ५ = १३ \times २ = २६$	
$\frac{२६}{८}$	२
$३ \times ४ + ५ = १७ \times २ = ३४$	
$\frac{३४}{८}$	२
$४ \times ४ + ५ = २१ \times २ = ४२$	
$\frac{४२}{८}$	२
$५ \times ४ + ५ = २५ \times २ = ५०$	
$\frac{५०}{८}$	२
$६ \times ४ + ५ = २९ \times २ = ५८$	
$\frac{५८}{८}$	२
$७ \times ४ + ५ = ३३ \times २ = ६६$	
$\frac{६६}{८}$	२
$८ \times ४ + ५ = ३७ \times २ = ७४$	
$\frac{७४}{८}$	२
$९ \times ४ + ५ = ४१ \times २ = ८२$	
$\frac{८२}{८}$	२
$१० \times ४ + ५ = ४५ \times २ = ९०$	
$\frac{९०}{८}$	२

साधु संग नव श्रक सम, सदा एक रस लीन ।

दुष्ट संग पुनि आठ सम, दिन दिन गति अति छीन ॥

तऊ लहत सयोग नव, नवहि रूप हूँजात ।

पारस परसि कुघात जिमि, देखत सवहि सुहात ॥

$$८ \times ९ = ७२ = ९$$

स्थिर (एक रस)

$९ \times १ = ९$
$९ \times २ = १८ = ९$
$९ \times ३ = २७ = ९$
$९ \times ४ = ३६ = ९$
$९ \times ५ = ४५ = ९$
$९ \times ६ = ५४ = ९$
$९ \times ७ = ६३ = ९$
$९ \times ८ = ७२ = ९$
$९ \times ९ = ८१ = ९$

घटत

$८ \times १ = ८$
$८ \times २ = १६ = ७$
$८ \times ३ = २४ = ६$
$८ \times ४ = ३२ = ५$
$८ \times ५ = ४० = ४$
$८ \times ६ = ४८ = ३$
$८ \times ७ = ५६ = २$
$८ \times ८ = ६४ = १$

इति श्रीश्रंगविज्ञाने भानुशिव विरचिते कौतुकांक वर्णननाम पचदशो विलासः ॥

एकांकीय करण ।

- (१) पन्द्रा वादम सुन्नरु सात, कीजे पंडित सातइ सात ।
गुणि तिरदत्तर पूरुवि पाय, चादि जिते गुणा तादि वढाय ॥

$$\begin{array}{r} १५२२०७ \\ ७३ \\ \hline \end{array}$$

$$\begin{array}{r} ४१६६२१ \\ १०६१०४६ \\ \hline १११११११ \end{array}$$

सात सात अंक-यथ - $७३ \times ७ = ५११$

$$\begin{array}{r} १५२२०७ \\ ५११ \\ \hline \end{array}$$

$$\begin{array}{r} १५२२०७ \\ १५२२०७ \\ ७६१०३५ \\ \hline ७७७७७७७ \end{array}$$

- (२) पन्द्रा आठ तिरदत्तर कार्हि, सात गुणा कर एक लखाहि ।
सातहि गुणा जादि सां तात, सोद गुणे नव अंक लखात ॥

$$\begin{array}{r} १५ = ७३ \\ ७ \\ \hline \end{array}$$

$$११११११$$

तीन तीन अंक-यथा - $७ \times ३ = २१$

$$\begin{array}{r} १५ = ७३ \\ २१ \\ \hline \end{array}$$

$$\begin{array}{r} १५ = ७३ \\ ३१७४६ \\ \hline \end{array}$$

$$३३३३३३$$

४५ संख्या की विशेषता ।

वर्षे पौरो धत्ते कीर्तेहि दोष । घन ऋण गुण भजि दत्त दत्त गोय ॥

८१२ =	३०
१२-२ =	१०
५१२ =	१०
२०-२ =	१०

ऋण

६८७६५४३२१	= ४५ = २
१२३४५६७८६	= ५५ = ६
<hr/>	
८६४१२७५३२	= ४५ = २

इति श्रीअक्षयविलामे भास्कराक्षरि लिखिते पञ्चदशारिणम् संख्या
विशेषता वर्णनशाम सप्तदशो विलास ॥

नवांक महत्व ।

नवके अक्षर का सद्व्यवस्था देना भी उपयोगी होगा । गुसार्डितीने कहा है, कि—

तुलसी अपने रामकर, भजन करहु निरशंक ।
 आदि अन्त निरवाहि है, जैसे नव को अंक ॥
 दुगुने तिगुने चोगुने, पचमः पटः अरु सात ।
 आठो तें पुनि नव गुने, नव के नव रहिजात ॥
 नव के नव रजिजात है, तुलसी किये विचार ।
 रम्यो राम इमि जगत में, नही द्वैत दिस्तार ॥
 जगतें रहु छत्तीस हूँ (३६), राम चरन छत्तीन (३५) ।
 तुलसी देख विचार हिय, है यह यतो प्रवीन ॥

निस्सन्देह नव का अंक बड़ा निश्चिन्न है । उसे चाहे जितनेसे गुणित कीजिये, उसमें नव का अंक वास्तव रहेगा । ३६ भी है —

जैसे घटत न अंक नव, नव के लिखत पदार्थ ॥

अर्थात् नव का पदाङ्क लिखकर देखिये, सब में नव का अंक विद्यमान रहता है यथा—नव दूने १८, नव तिआ २७ और नव चौक ३६ आदि । इन गुणित अंकों का योग परस्पर में (१+८, २+७, ३+६) कीजिये, उत्तर आपको नही मिलेगा । इसी प्रकार और भी चाहे जितने से गुणा कीजिये, नव का अंक विद्यमान रहेगा । नीचे नवके विशेष महत्त्व का सक्षिप्त में वर्णन किया जाता है । जिन्हें विशेष जानने की इच्छा हो, वे इसारी बनाई "नव पचामृत रामायण" को देखें ।

- (१) इकसौं नव लगी सेख्या जोर । पैतालिस चौभाग बहोर ॥
 वारा पाठ पाच अरु बीस । द्वै अरु धन गुण भाग तरीस ॥

भा०—१+२+३+४+५+६+७+८+९=४५, इसमें ४ और ५ को अंक हैं, कि-
 जिनका योगफल ९ होता है । अब इसके इस प्रकार से चार राउ कीजिये । कि-
 १२+५+५+२०=४२, इन प्रत्येक विभक्तभागों में क्रमशः दो के अंक का अणु, धन,
 गुणा और भाग कीजिये, उत्तर समान होगा । यथा—

$$१२-२=१०, ५+२=७, ५ \times २=१०, और २०-२=१० ।$$

- (२) सेख्या तें हर संख्या योग । शेष शुद्ध नव अंक सुयोग ॥
 माया के जिति हातहि दूर । शुद्ध ब्रह्म लिखिये भरपूर ॥

भा०—कोई भी मन मानी सेख्या लिखकर उसके योग का, उसी में से यदा दो, शेष अंको का योग, नव पागा । यथा,—

४५ संख्या की विशेषता ।

वर्षु वीरौ पचे वीरैहि दोष । वन शृणु गुण भजि दस दस होय ॥

५१-२=	१०
१२-२=	१०
५१-२=	१०
२०-२=	१०

शृणु

२५७६५४३२०१	=४५=२
१२३४५६७८९	=१५=६
<hr/>	
५६७८९१०११२२	=४५=६

इति श्रीअनविलासे आनुकृति निरचिते पञ्चदशारिणत् संख्या
विशेषता वर्णनध्याय सप्तदशो विदास ॥

नवाक महत्व ।

नवके अंशना महत्व वतता देना भी उपयोगी होगा । गुसर्हितीने कर है, नि—

तुलसी अपने रामरु, भजन करहु निशंक ।

आदि अन्त निरादि हैं, जैसे नव को अरु ॥

दुगुने तिगुने चोगुने, पचम पद अरु सात ।

आठो तें पुनि नव गुने, नव के नव रजिजात ॥

नव के नव रजिजात है, तुलसी किये विचार ।

रम्यो राम इमि जगत में, नहीं द्वैत विस्तार ॥

जगतें रहू छत्तीस हूँ (३६), राम चरन छत्तीन (६३) ।

तुलसी देख विचार दिय, है यह बात प्रीन ॥

निस्सन्देह नव का अरु बड़ा सिद्धिप्र है । उसे चाहे जितनेसे गुणित कीजिये, उसमें नव का अरु बराबर रहेगा । यही है —

जैसे घटत न अंक नव, नव के लिखत पहा ॥

अर्थात् नव का पडाड़ा लिखकर देखिये, नव में नव का अरु विद्यमान रहता है यथा—नव इने १८, नव तिया २७ और नव चौक ३६ आदि । इन गुणित अंकों का योग परस्पर में (१+८, २+७, ३+६) कीजिये, उत्तर आपको नवही मिलेगा । इसी प्रकार और भी चाहे जितने से गुणा कीजिये, नव का अरु विद्यमान रहेगा । नीचे नव के विशेष महत्व का सक्षिप्त में वर्णन किया जाता है । जिन्हें विशेष जानने की इच्छा हो, वे इसारी दनाई "नव पचासृत रामायण" का देखें ।

(१) इकसौं नव लागि संख्या जोर । पैतालिस चौभाग बहोर ॥

बारां प्राठ पाच अरु बीस । द्वै नृख धन गुण भाग सरिस ॥

भा०—१+२+३+४+५+६+७+८+९=४५ हुप, इसमें ४ और ५ दो अरु हैं, कि जिनका योगफल ९ होता है । अब इसके इस प्रकार से बार बार कीजिये कि १२+८+५+२=४५, इन प्रत्येक विभक्त भागों में क्रमश दो के अरु का गुण, धन, गुणा और भाग कीजिये, उत्तर समान होगा । यथा—

१२-२=१०, ८+०=१०, ५×२=१०, और २०-२=१० ।

॥

(२) संख्या तें हर संख्या योग । शेष शुद्ध नव अरु सुयोग ॥

॥ माया के जिमि होतहि दूर । शुद्ध ब्रह्म लिखिये भरपूर ॥

भा०—कोई भी मन मानी संख्या लिखकर उसके योग को, उसी में से यदा दो शेष अंको का योग नव होगा । यथा—

७२५ इनके अंको ७+२+५ का योग १४ हुआ, अब ७ ५-१४=७११ अर्थात् ७+२+१=१० । उसी प्रकार आर भी जानो ।

- (३) संख्या उलटि हरै जो अंक । नव के नव पुनि लहौ निर्णक ॥
घट घट में प्रथु रह्यो समाय । महिमा भानु कहे किमि गाय ॥

भा०—किसी भी संख्या को लिख कर उसी की उलटी संख्या को उसी में घटाया शेष का योग नव होगा, यथा—

३४६१ इसकी उलटी संख्या १६४३ हुई । पूर्व संख्या ३४६१ में से १६४३ को घटाया तो १८०८ बचे, निस्संके अंको १+८+०+८ का योग १८ अर्थात् १+८=९ हुआ इसी प्रकार और भी जानो ।

- (४) शेष अंक तैं हरिये जौन । नव महँ घटी जानिये तौन ॥
तब यही हिय माहीं लाय । सेंदो अंकहि भानु बताय ॥

भा०—नियम दूसरे के अनुसार यह सिद्ध कर लिया गया है, कि किसी अंक समूह के योग को उसी में से घटाने पर कबल ९ (पक्षी अंक में वा अनेक अंकों मिलकर) बच रहते हैं । इस तथ्य को ध्यान में रखकर किसी से कहो, कि आप कोई संख्या लीजिये, और उसके अंश को जोड़कर उसी में से घटा दीजिये । जो शेष रहे उसमें से कोई भी एक अंक जैसी संख्या हो घटा दीजिये । शेष अंक का योग नव आये, उसमें ९ के लिये जितनी कमी हो, वही अंक काट दीजिये । जैसे किसी ने ११६ संख्या ली । तो दूसरे नियम के अनुसार यह उसे जोड़कर १+१+६=८, उसमें से घटावेगा, यथा—११६-८=१०८ शेष बचे । अब पृच्छक चाहे १ का अंक मेंटेगा अथवा ८ का मेंटेगा, यदि १ का मेंटेगा तो रहेंगे ८, अब ८ में ९ के लिये केवल १ की घटी है । अतएव यही उत्तर है । यदि पृच्छक ने शून्य मेंटा है, तो पक्षिलेकी कद देना उचित है । कि शून्य कोई अंक नहीं है ।

सूचना—यदि शेष संख्या का योग ९ आये, तो कह सकते हैं, कि आपने ९ मेंटा है । यदि वे शून्य मेंटेकर हठ करें तो कह सकते हैं, कि आपने या तो शून्य मेंटा है, अथवा ९ मेंटा है ।

- (५) उलटो बोही कै अधिकाय । संख्या योगहि देय घटाय ॥
(६) वा गुरुतातें लघुताहीन । कीजै हरि चरणान् चित लीन ॥

का—किसी भी कठित संख्या को उलट कर लिखा । और उसके योग को उसी में से घटा दो, तो घटी हुई संख्या का योग ९ होगा ।

यथा:—कल्पित सख्या २३७ है, तो इसकी उलटी सख्या ७३० हुई। इसके अंकों का योग $७+३+२=१२$ हुआ। इन १२ को ७३२ में से घटाया, तो $७३२-१२=७२०$ बचे इसके अंकों का योग $७+२+०=९$ हुआ।

(व) —जिसो भी कल्पित सख्या को उलटा करे, यदि उलटा मान अधिक है, तो उसमें से उचित सख्या घटावो, शेष के अंकों का योग ९ होगा,

यथा:—कल्पित सख्या १३१ इसका उलटा ६३१-१३६=४९५ हुए, इस सख्या के अंकों का योग $४+९+५=१८=१+८=९$ हुए।

(ग) —और यदि उलटा मान कल्पित सख्या में न्यून है, तो भी उक्त क्रिया करे। अर्थात् अधिक सख्या में से न्यून का घटावो, शेष सख्या के अंकों का योग ९ ही होगा। यथा:—

कल्पित सख्या ७१ है, इसके उलटे १७ हुए, तो इस ७१ में से १७ का घटावो, $(७१-१७=५४)$ ता ५४ बचेगे, जिसके अंकों का योग $५+४=९$ हुआ। इसी प्रकार और भी जानो।

(७) नव व्यापक सब अक्षरों में, ब्रह्म जीव सम लेख।

ज्ञान चक्षु लखि तीजिये चर्म चक्षु नहि देख ॥

(८) इक नव मिलि उन्हीस हैं, ताके दण रहि जात। $१९=१+९=१०=१$

दण के पुनि एरुहि रहत, एरुहि एक लखात ॥

(९) सोइ नियम सब अक्षरों में, निश्चय घटत समान।

नव महिमा की मित नहीं, कदा कहे लघु भान ॥

नीचे नवके प्रकृत नाम सूत्र तथा उसकी व्याप्ति सूत्रों में और भी बताई जाती है —

(१०) सख्या के अक्षर (मुख्य) एक से लेकर नव तककी हैं।

(११) नव खड

(१२) नव प्रह

(१३) नव द्वार

(१४) नव निधि

(१५) नव रत्न

(१६) नव रात्रि

(१७) नव रस

(१८) नवभाभक्ति

(१९) नवनाड़ी

(२०) नव द्रव्य

(२१) नव विप्रक्रम

(२२) नव शक्ति

(२३) नव रस व उनके नव स्थायी भाष

(२४) राग रागिणी राग ६ और रागिणी ३०, दोनों का योग ३६ होता है, /)

घात $३+६=९$

- (२५) अक्षौहिणी सङ्ख्या = २१८७। $०=२+१+५+७=१८=२+५=६$
- (२६) युग वर्ष सङ्ख्या
 कलियुग ४३२००० = ४+३+२=९
 द्वापर = ६४००० = ५+४+०=९ = १+५=६
 त्रेता १२२६००० = १+२+६+६=१८=१+५=६
 सतयुग १७२०००० = १+७+२+५=१५ = १+५=६
- (२७) चारो युगके वर्षों का योग = द्विव्ययुग) ४३२०००० = ४+३+२=९
- (२८) मन्वन्तर (७१ दिव्य युग) ३०६७२०००० = ३+६+७+२=१८=१+५=६
- (२९) कल्प (१४ मन्वन्तर) ४२६४०००००० = ४+२+६+४+०=२७=१+७=८
- (३०) बारह खड़ी में गुरु नव हैं—का, की, कु, के, कै, को, कौ, न, क (६)
- (३१) नायिका भेद प्रस्तार ४७५ = ४+७+५ = २७ = २+७ = ९ वा १० = ६
- (३२) काव्य भेद ३४०६२३६०० = ३+४+६+२+३+६ = २७ = २+७ = ९
- (३३) चारो वेदों की मंत्र संख्या = १६४०४ = १+६+४+४ = १५ = १+५ = ६
- ऋग्वेद की मंत्र संख्या = १०५१५
 यजुर्वेद की ,, ,, = १६७५
 सामवेद की ,, ,, = १०६४
 अथर्ववेद की ,, ,, = ५५४७
- चारिह्य वेद मंत्र विस्तार ।
 ऋग्वेद सहस्र चारसौचार ॥
- (३४) रामजन्म तिथि—नवमी (६) नवमी तिथि मधु मास पुनीना ।
 शुद्ध पक्ष अभिजित हरि प्रीता ॥
- (३५) तुलसीकृत रामायण की कृन्व संख्या = ६६६० = ६+६+६ = २७ = २+७ = ९
- (३६) तुलसीकृत रामायण में शंकर प्रति पार्वतीजी के प्रश्नों की संख्या = ६

यथा—प्रथम सु कारण कहहु विचारी । निर्गुण ब्रह्म सगुण वपुधारी ॥१॥
 पुनि प्रभु कहहु राम अवतारा ॥२॥ नाल चरित पुनि कहहु उदारा ॥३॥
 कहहु यथा जानकिहि विवाहा ॥४॥ राज्य तजा सो दूषण काहा ॥५॥
 वन वसि कीन्है चरित अपारा ॥६॥ कहहु नाय जिमि रावण मारा ॥७॥
 राज्य वैठि कीन्है बहु लीला । सकल कहहु शंकर शुभ शीला ॥८॥
 बहुरि कहहु करुणायतन, कीन्है जु अचरज राम ।
 प्रजा सहित रघुवंश मणि, किमि गवने निजधाम ॥९॥

(३७) तुलसीकृत रामायण की रचना तिथि—नवमी ९
 'नवमी भौमवार मधु मास'

(३८) विप्रगुण = ६

यथा—ऋजु (सरल), तपस्या, सन्तोष, क्षमा, अतृष्णा, जितेन्द्रिय,

वातव्य, ज्ञान, दया,

(३९) पुराण—१ = १ + ५ = ६

(४०) व्यसन—१ = १ + ५ = ६

- ४१) नक्षत्र-२७=२+७=९
- ४२) जयमाला की गुरिया-१०८=१+८=९
- ४३) लेखन व्यवहार में पूज्यों की श्री संख्या-१०८=१+८=९
- ४४) यशामाला के वर्ण-६३=६+३=९
- यथा—द्वय ५, दीर्घ ८, प्लुत ९ }
 फरग ५, चरग ५, टवरग ५ } ६३
 तवरग ५, पवरग ५, अतस्थ ४ }
 ऊष्ण ४, अयोग षड्द्वय ८ }
- ४५) नवार्थ मन्त्र=९ यथा—ये हीं ह्रीं चासुयद्यायै विधे ॥इति॥

इति श्रीअंकविलासे मानुषवि निरूपिते नवार्थमाहात्म्य धर्यन्त्राम अष्टादशो विलासः ॥



- (२५) अक्षौद्वितीय सख्या=२१५७। ०=२+१+५+७=१५=२+५=७
 (२६) युग वर्ष सख्या कलियुग ४३२०००=४+३+२=९
 द्वापर ८६४०००=८+६+४=१८=१+५=६
 त्रेता १२२६०००=१+२+६+६=१५=१+५=६
 सतयुग १७५०००=१+७+२+५=१५=१+५=६
 (२७) चारों युग के वर्षों का योग=(द्विद्युग) ४३२००००=४+३+२=९
 (२८) मन्वन्तर (७१ दिव्य युग) ३०६७२००००=३+६+७+२=१५=१+५=६
 (२९) कला (१४ मन्वन्तर) ४२६४०५००००=४+२+६+४+०=२७=२+७=९
 (३०) व.र. खड़ी में शुभ नव है-का, की, कु, के, के, जो, जो, न, क (९)
 (३१) नायिका भेद प्रस्ताव ४७=५+७+५+५=२७=२+७=९ वा १०=९
 (३२) काव्य भेद ३४०६०३६००=३+४+०+३+६=२७=२+७=९
 (३३) चारों वेशों की मंत्र सख्या=१६४०४=१+६+४+०=१२=१+५=६

ऋग्वेद की मंत्र सख्या-१०५१५

यजुर्वेद की ,, ,, - १६७५

सामवेद की ,, ,, - १०६४

अथर्ववेद की ,, ,, - ५५४७

चारिह्नु वेद मंत्र विस्तार ।
 चतस्र सहस्र चारसौचार ॥

- (३४) रामजन्म तिथि-नवमी (९) नवमी तिथि मधु मास पुनीना ।
 शुक्ल पक्ष अभिजित हरि प्रीता ॥
 (३५) तुलसीकृत रामायण की कुल सख्या=६६६०=६+६+६=२७=२+७=९
 (३६) तुलसीकृत रामायण में शरर प्रति पार्वतीजी के प्रश्नों की सख्या=६

यथा—प्रथम सु कारण कहहु विचारी । निर्गुण ब्रह्म सगुण बंधुधारी ॥१॥
 पुनि प्रभु कहहु राम अवतारा ॥२॥ बाल चरित पुनि कहहु उदारा ॥३॥
 कहहु यथा जानकिहि विवाहा ॥४॥ राज्य तजा सो दूषण काहा ॥५॥
 वन बसि कीन्हे चरित अपारा ॥६॥ कहहु नाय जिमि रावण मारा ॥७॥
 राज्य बैठि कीन्हीं बहु लीला । सकल कहहु शकर शुभ शीला ॥८॥
 बहुरि कहहु करुणायतन, कीन्हे जु अचरज राम ।
 प्रजा सहित रघुवंश मणि, किमि गवने निजघाम ॥९॥

(३७) तुलसीकृत रामायण की रचना तिथि-नवमी ९
 'नवमी भौमवार मधु मास'

(३८) विप्रगुण=६

यथा—ऋजु (सरल), तपस्या, सन्तोष, क्षमा, अतृष्णा, जितेंद्रिय,

वातव्य, ज्ञान, वया,

(३९) पुराण-१=१+५=६

(४०) व्यसन-१=१+५=६

भानार्थ ।

- (१) सन् का उत्तरार्द्ध जैसे १८६६ का ६६
 (२) उत्तर र्द्ध सन् श्री चौध.ई केवल
 लब्धिय जैसे ६६ की २४
 (३) पूत्री हुई तारीख जैसे मानो ६
 (४) पूछे हुए मूनी का मासिक अंक जिसका
 ज्ञान अने होगा। जैसे सित म्बर के लिये १
 (५) प्रन्ने हुए शतक का अंक जिसका ज्ञान
 आगे होगा। जैसे १८६६ के लिये ०

पाचो का योग १३३

१३३ म ७ का मग त्रिया शेष बचे ०

शून्य मे दना मना कि अनिवार होगा। इस का ज्ञान आगे होगा।

उक्त क्रिया से यह ज्ञान गव कि ६३३ सि म्बर सन् १८६६ को अनिवार पड़ेगा

सांख्यिक अंक विचार ।

- सेष दिग्मन्त्र एक है, उपर जुलाई दोय ।
 जन अक्षर तीन है, मे वौ अग पच होय ॥१॥
 मार्च नगर फरवरी, पट अर्काई शुनि लेव ।
 जून लून मन गलिये, पूछो दिन कति देव ॥२॥
 धि कर्ति मे फरवरी, मास अरु है पाच ।
 जाजुरी जानिये, जातिष मत यह साच ॥३॥

साधार्थ

साधारण अंक ।

लीप अर्थात् अक्षरों का

१	१
१	१
०	२
२	२
३	०
३	३
४	४
५	५
६	६
७	७
८	८
९	९
०	०

विचार ।

सुन्न बचे तो चार ।

लदिये मुगम विचार ।

आंग्लतारीख वार कथन ।

अंगरेजी महीनों की तारीखों के वार (दिन) जानने की रीति:—

महीनों के नाम और दिन—जनवरी ३१, फरवरी २८, २९, मार्च ३१, अप्रैल
मई ३१, जून ३०, जुलाई ३१, अगस्त ३१, सितम्बर
अक्टूबर ३१, नवम्बर ३० और दिसम्बर ३१ दिन ।

जिस सन में चार का भाग पूरा जावे उस सन की फरवरी २६ दिन की
जाती है और जिस सन में चार का भाग पूरा न जावे उन सन की फरवरी २८
की होती है। इस प्रकार का योग पर्येक चौथे वर्ष आता रहता है। जिस साल
फरवरी का मास २६ दिन का माना जाता है उस साल को अंगरेजी में लीप इयर
है। परन्तु पूर्ण शताब्दी के वर्षों के लिये चार के भाग का नियम चरितार्थ नहीं हो
शताब्दी के वर्षों में जब चारसौ का भाग पूरा लग जावे ता वे वर्ष लीप इयर ही स
हैं। यथा—

सन १३०० } इन वर्षों में पूरे चारसौ का भाग नहीं लगता अतएव ये साधारण
सन १४०० } वर्ष कहे जाते हैं।
सन १५०० }

सन १६०० में पूरे चारसौ का भाग जाता है अत लीप इयर है।

सन १७०० } इन वर्षों में पूरे चारसौ का भाग नहीं लगता अतएव ये साधारण
सन १८०० } वर्ष कहे जाते हैं।
सन १९०० }

सन २००० में पूरे चारसौ का भाग जाता है अतएव यह लीप इयर है। इससे
पाया गया कि साधारण वर्षों में चार का भाग जब लग जाता है तब
लीप इयर होता है और शताब्दी के वर्षों में जब चारसौ का भाग लग
है तब वह लीप इयर होता है। यथा—

सन १८८८ } इन वर्षों में चार का भाग लग जाता है अत ये लीप इयर
सन १८९२ } अर्थात् इन सन में फरवरी का महीना २६ दिनों का माना गया
सन १८९६ }

सन २००० में चारसौ का भाग पूरा जाता है अतएव इस सन की फरवरी लीप
की मानी जायगी और उसके २६ दिन होंगे।

इन नियमों के स्मरणार्थ निम्न लिखित दोहा कंड कर लेना समुचित होगा—

साधारण अधिवर्ष स्वर, भाग चार जहाँ पूर ।

पूर्ण शतक अधि जानिये, भाग चारसौ पूर ॥

पूछी हुई तारीख के दिन बताने की नीचे एक विचित्र रीति लिखी जाती है—

उत्तरार्द्ध सन चौथ फल, पुनि तारीख मासक ।

पुरि शतक कै सप्त करि, शेष वार निःशक ॥

भावार्थ ।

- (१) सन् ता उत्तर्द्ध जैसे १८६६ का ६६
 (२) उत्तर र्द्ध सन् भी चौथई केवल
 लब्धि जैसे ६६ की २४
 (३) पूत्री हुई तारीख जैसे मानो ६
 (४) पृष्ठे हुए मूनी का माभिक अक जिसका
 नाम अगे होगा। जैसे सितम्बर के लिये १
 (५) पृष्ठे हुए शतक का अक जिसका ज्ञान
 प्रागे होगा। जैसे १८६६ के लिये ०

पाचो का योग १३३

१३३ में ७ का भाग दिया शेष बचे ०

शून्य मे दत्त गणति अनिवार होगा। इन का ज्ञान प्रागे होगा।

उक्त क्रिया से यह ज्ञान गणति ६ में सितम्बर सन् १८६६ को अनिवार पडेगा

सांख्यिक अंक विचार ।

शेष दिसम्बर एक है, अपर जुलाई दोय ।
 जन अक्तूबर तीन है, मे नौ अग पच होय ॥१॥
 मार्च नवम्बर फरवरी, पट अर्द्ध शुनि लेव ।
 जन नून मन गानिये, पूछो दिन कति देव ॥२॥
 अथि अर्द्ध मे फरवरी, मास अक ह पाच ।
 दोय गानुरी जानिये, जोतिप मत यह साच ॥३॥

भावार्थ

मास	साधारण वर्षांक ।	जीप अर्थात् अक्षिर्षांक
सितम्बर	१	१
दिसम्बर	१	१
अप्रैल	०	२
जुलई	०	२
जानवरी	३	०
अक्टूबर	३	३
मई	४	४
अगस्त	५	५
मार्च	६	६
नवम्बर	६	६
फरवरी	६	५
जून	०	०

शतकांक विचार ।

पूर्वार्द्ध सन चौथ कगि, सुन्न अचे तो चार ।
 एक द्वै, द्वै सुत, तीन पच, लब्धिये मुगम विचार ॥

भावार्थ ।

पूर्वाह्न अर्थात् सन् के पहिले दो अक लेलेवे और उसमें चार का भाग देवे यदि शेष.—

०	पचे तो	४		
१	पचे तो	२		
२	पचे तो	०		
३	पचे तो	५		
१७६८	का १७	शेष १	शतकांक	२
		४		
१८६२	का १८	शेष २	"	०
		४		
१९५५	का १९	शेष ३	"	५
		४		
२०२२	का २०	शेष ०	"	४
		४		
२११३	का २१	शेष १	"	२
		४		
२२२२	का २२	शेष २	"	०
		४		

शेषांक विचार ।

शनी शून्य रवि एक है, सोम दीय कुज तीन ।
बुध चार गुरु पच त्यों, शुक्र पण्डितो चीन ॥

भावार्थ ।

शेष	रहे तो	शनिवार
०	"	रविवार
१	"	सोमवार
२	"	मंगलवार
३	"	बुधवार
४	"	गुरुवार
५	"	शुक्रवार
६	"	

इस रीति से चाहे जिस शतक और सन की तारीख का दिन सहज ही निकाल सकता है, परंतु इस बात का ध्यान रखना प्रवश्य है कि योरोप खंड में सन १७५२ के पूर्व तारीखों के मानने में बड़ी ही गड़बड़ थी । सन् १७५२ के अंत में इस काल का निश्चय हुआ तब से अर्थात् १४ सितम्बर सन् १७५२ से तारीखों के दिन सही निकलेंगे। इसके पूर्व तारीखों के दिन निकालना चाहे तो उच्चर वह निकलेंगे जो इन दिनों के रूप नियमों के अनुसार होना चाहिये था । परन्तु वह न निकलेंगे जो उस समय यथार्थ में मान लिया गया था ।

नीचे पाठकों के शान्ति के सन् १७५३ से सन् १९५२ तक की १ जरी तारीखों

के दिन की वी जाती है जिसके द्वारा प्रत्येक मास की गौनसी तारीख को काग दिन पढ़ता है सहज में घात होसकता है ।

सन १७५३ से १८५२ तक के प्रत्येक महीनो की पहिली तारीखो के दिनो की जंत्री ।

साधारण वर्ष	जानररी	फरररी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
१७६१, ६७, ७८, ८६, ९५, १८०१, ७, १८, २६, ३५, ४६, ५७, ६८, ७४, ८५, ९१, १८०३, १४, २५, ३१, ४२	गु	र	र	बु	शु	सो	बु	श	मं	गु	र	म
१७६२, ७३, ७६, ८०, १८०२, १३, १६, ३०, ४१ ४७, ५८, ६९, ७५, ८६, ९७ १८०६, १५, २६, ३७, ४३	शु	सो	सो	गु	श	म	गु	र	बु	शु	सो	बु
१७६७, ६३, ७४, ८५, ९१, १८०३, १४, २५, ३१, ४२, ५३, ६६, ७०, ८१, ८७, ९८, १८१०, २१, २७, ३८, ४६	श	म	म	दि	र	बु	शु	सो	गु	श	म	गु
१७६४, ६५, ७१, ८३, ९३, ९९, १८०५, ११, २२, ३३, ३९, ५०, ६१, ६७, ७८, ८९, ९५, १८०१, ७, १८, २६, ३५, ४६	म	शु	शु	सो	बु	ग	सो	गु	र	म	शु	र
१७६५, ६६, ७७, ८३, ९४, १८००, ६, १७, २३, ३४, ४५, ५१, ६२, ७३, ७९, ९०, १८०२, १३, १६, ३०, ४१, ४७	बु	श	श	म	गु	र	म	शु	सो	बु	श	सो
१७६८, ६९, ७५, ८६, ९७, १८०६, १५, २६, ३७, ४३, ५४, ६५, ७१, ८२, ९३, ९९, १८०५, ११, २२, ३३, ३९, ५०	र	बु	बु	श	सो	दि	श	म	शु	र	बु	शु
१७६३, ६९, ७०, ८१, ८७, ९८, १८१०, २१, २७, ३८, ४६, ५५, ६६, ७७, ८३, ९४, १८००, ६, १७, २३, ३४, ४५, ५१	सो	गु	गु	र	म	शु	र	बु	श	सो	गु	श

लीप वर्ष (परचरी के २२ दिन)	जानवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
१७६३, १८०४, १८४५, १८८६, १९२७, १९६८	१	७	३	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१७६८, १८०९, १८५०, १८९१, १९३२, १९७३, १९१४, १९५५, १९९६	७	८	४	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
१७७३, १८१४, १८५५, १८९६, १९३७, १९७८, १९१९, १९६०, १९९१	८	९	५	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
१७७८, १८१९, १८६०, १९०१, १९४२, १९८३, १९२४, १९६५, १९९६	९	१०	६	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
१७८३, १८२४, १८६५, १९०६, १९४७, १९८८, १९२९, १९७०, १९९१	१०	११	७	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
१७८८, १८२९, १८७०, १९११, १९५२, १९९३, १९३४, १९७५, १९९६	११	१२	८	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
१७९३, १८३४, १८७५, १९१६, १९५७, १९९८, १९३९, १९८०, १९९१	१२	१३	९	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
१७९८, १८३९, १८८०, १९२१, १९६२, १९९३, १९४३, १९८४, १९९५	१३	१४	१०	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
१८०३, १८४४, १८८५, १९२६, १९६७, १९९८, १९४८, १९८९, १९९०	१४	१५	११	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८
१८०८, १८४९, १८९०, १९३१, १९७२, १९९३, १९५३, १९९४, १९९५	१५	१६	१२	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९
१८१३, १८५४, १८९५, १९३६, १९७७, १९९८, १९५८, १९९९, १९९०	१६	१७	१३	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
१८१८, १८५९, १९००, १९४१, १९८२, १९९३, १९६२, १९९३, १९९४	१७	१८	१४	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
१८२३, १८६४, १९०५, १९४६, १९८७, १९९८, १९६७, १९९८, १९९९	१८	१९	१५	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
१८२८, १८६९, १९१०, १९५१, १९९२, १९९३, १९७१, १९९३, १९९४	१९	२०	१६	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
१८३३, १८७४, १९१५, १९५६, १९९७, १९९८, १९७६, १९९८, १९९९	२०	२१	१७	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
१८३८, १८७९, १९२०, १९६१, १९९२, १९९३, १९७८, १९९९, १९९०	२१	२२	१८	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
१८४३, १८८४, १९२५, १९६६, १९९७, १९९८, १९८३, १९९९, १९९०	२२	२३	१९	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
१८४८, १८८९, १९३०, १९७१, १९९२, १९९३, १९८४, १९९९, १९९०	२३	२४	२०	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७
१८५३, १८९४, १९३५, १९७६, १९९७, १९९८, १९८६, १९९९, १९९०	२४	२५	२१	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८
१८५८, १८९९, १९४०, १९८१, १९९२, १९९३, १९८९, १९९९, १९९०	२५	२६	२२	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
१८६३, १९०४, १९४५, १९८६, १९९७, १९९८, १९९०, १९९९, १९९०	२६	२७	२३	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
१८६८, १९०९, १९५०, १९९१, १९९२, १९९३, १९९१, १९९९, १९९०	२७	२८	२४	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
१८७३, १९१४, १९५५, १९९६, १९९७, १९९८, १९९२, १९९९, १९९०	२८	२९	२५	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
१८७८, १९१९, १९६०, १९९१, १९९२, १९९३, १९९३, १९९९, १९९०	२९	३०	२६	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३
१८८३, १९२४, १९६५, १९९६, १९९७, १९९८, १९९४, १९९९, १९९०	३०	३१	२७	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४
१८८८, १९२९, १९७०, १९९१, १९९२, १९९३, १९९४, १९९९, १९९०	३१	३२	२८	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
१८९३, १९३४, १९७५, १९९६, १९९७, १९९८, १९९५, १९९९, १९९०	३२	३३	२९	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
१८९८, १९३९, १९८०, १९९१, १९९२, १९९३, १९९६, १९९९, १९९०	३३	३४	३०	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७
१९०३, १९४४, १९८५, १९९६, १९९७, १९९८, १९९७, १९९९, १९९०	३४	३५	३१	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८
१९०८, १९४९, १९९०, १९९१, १९९२, १९९३, १९९८, १९९९, १९९०	३५	३६	३२	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९
१९१३, १९५४, १९९५, १९९६, १९९७, १९९८, १९९९, १९९९, १९९०	३६	३७	३३	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
१९१८, १९५९, १९९०, १९९१, १९९२, १९९३, १९९९, १९९९, १९९०	३७	३८	३४	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
१९२३, १९६४, १९९५, १९९६, १९९७, १९९८, १९९९, १९९९, १९९०	३८	३९	३५	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२
१९२८, १९६९, १९९०, १९९१, १९९२, १९९३, १९९९, १९९९, १९९०	३९	४०	३६	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३
१९३३, १९७४, १९९५, १९९६, १९९७, १९९८, १९९९, १९९९, १९९०	४०	४१	३७	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
१९३८, १९७९, १९९०, १९९१, १९९२, १९९३, १९९९, १९९९, १९९०	४१	४२	३८	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
१९४३, १९८४, १९९५, १९९६, १९९७, १९९८, १९९९, १९९९, १९९०	४२	४३	३९	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६
१९४८, १९८९, १९९०, १९९१, १९९२, १९९३, १९९९, १९९९, १९९०	४३	४४	४०	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७
१९५३, १९९४, १९९५, १९९६, १९९७, १९९८, १९९९, १९९९, १९९०	४४	४५	४१	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८
१९५८, १९९९, १९९०, १९९१, १९९२, १९९३, १९९९, १९९९, १९९०	४५	४६	४२	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
१९६३, १९९४, १९९५, १९९६, १९९७, १९९८, १९९९, १९९९, १९९०	४६	४७	४३	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
१९६८, १९९९, १९९०, १९९१, १९९२, १९९३, १९९९, १९९९, १९९०	४७	४८	४४	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१
१९७३, १९९४, १९९५, १९९६, १९९७, १९९८, १९९९, १९९९, १९९०	४८	४९	४५	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२
१९७८, १९९९, १९९०, १९९१, १९९२, १९९३, १९९९, १९९९, १९९०	४९	५०	४६	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३
१९८३, १९९४, १९९५, १९९६, १९९७, १९९८, १९९९, १९९९, १९९०	५०	५१	४७	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४
१९८८, १९९९, १९९०, १९९१, १९९२, १९९३, १९९९, १९९९, १९९०	५१	५२	४८	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५
१९९३, १९९४, १९९५, १९९६, १९९७, १९९८, १९९९, १९९९, १९९०	५२	५३	४९	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६
१९९८, १९९९, १९९०, १९९१, १९९२, १९९३, १९९९, १९९९, १९९०	५३	५४	५०	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७
१९९९, १९९९, १९९०, १९९१, १९९२, १९९३, १९९९, १९९९, १९९०	५४	५५	५१	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८

उदाहरण

- (१) ४ जनवरी १७६८ = $६ = 1 + ७ + ४ + २ + २ = \frac{२३}{७}$ शेष २ = सोमवार
- (२) २२ फरवरी १८५६ = $५६ = १ + २२ + ५ + ० = \frac{२७}{७}$ शेष ६ = शुक्रवार
- (३) ८ अगस्त १८५६ = $५६ = १ + ४ + ५ + ५ + ० = \frac{२६}{७}$ शेष ० = सोमवार
- (४) १ जनवरी १९०० = $०० = ० + ० + १ + ३ + ५ = \frac{९}{७}$ शेष २ = सोमवार
- (५) १३ फरवरी १९२४ = $२४ = १ + १ + २ + ५ + ५ = \frac{१४}{७}$ शेष ४ = बुधवार

इति श्री अ. पि. लासे भा. सु. कवि विरचिते आंग्रज तारीख प्रदर्शननाम
पद्यानिर्णय शिखर ।



दक्षिण वाम गणित कथन ।

दायें बायें

चाही तीनऽ तावा चार, दायें दून पर तिमु हों गर ।

समकर दाहिने चाही जान, विषम अक तो तावा मान ॥

(गण=दाहिना, पर=तावा)

किसी पृच्छन को दो चीजें दे दो और उनका मूल्य निश्चित कर दें जैसे दूध की चाही का और एक दूध तावे का, चाही के छठे का मूल्य तीन और तावे के छठे का चार निश्चित कर दें। पृच्छन में रहें कि किसी एक छठे को पाएँ व और दूसरे को दूसरे हाथ में मुक्त रखा लें। फिर उससे कहा कि जो परतु दाहिने हाथ में हो उसका दुगना अक लें जो बायें हाथ में हो उसका तिमु अक लेकर ले गएँ जो इतने इमें पर अक, पर अक करै तो दाहिने हाथ में चाही होवे, पर अक करै तो बाहिने हाथ में तावा होगा। यथा —

(१)		(२)	
दाहिना	बाया	दाहिना	बाया
चाही	तावा	तावा	चाही
३×२	$+ ४ \times ३ = १८$	४×२	$+ ३ \times ३ = १७$

अत्र अत्र है तो दाहिने हाथ में चाही जानो । विषम अक हो तो दाहिने हाथ में तावा जानो ।

इति धीमकविलासे भानुर्काच विरचिते दक्षिण वाम गणित
कथनप्राम विशतितमो विलासः ।



नारंगी गणित कथन ।

प्र०—एक स्त्री के पास कुछ सतरे थे वह तीन घरों में गई पहिले घर में उसने आधे सतरे और एक आधा सतरा बेचा, दूसरे घर में जो बचे थे उनका आधा और एक आधा सतरा बेचा, तीसरे घर में भी वैसाही किया पर कहीं सतरे को तोड़ा नहीं जब अपने घर वापस आई तब उसके पास ३६ सतरे बच रहे दो बताओ उसके पास कुल कितने सतरे थे ?

कुल सतरे २६५

दिये १४८ अर्थात् $\frac{1}{2}$ अधिक दिया

शेष १४७

दिये ७४ अर्थात् $\frac{1}{2}$ अधिक दिया

शेष ७३

दिये ३७ अर्थात् $\frac{1}{2}$ अधिक दिया

शेष ३६

(उलटी क्रिया)

३६ के बने से कुछ अधिक बिना दूटे $३६ \times २ = ७२ + १ = ७३$

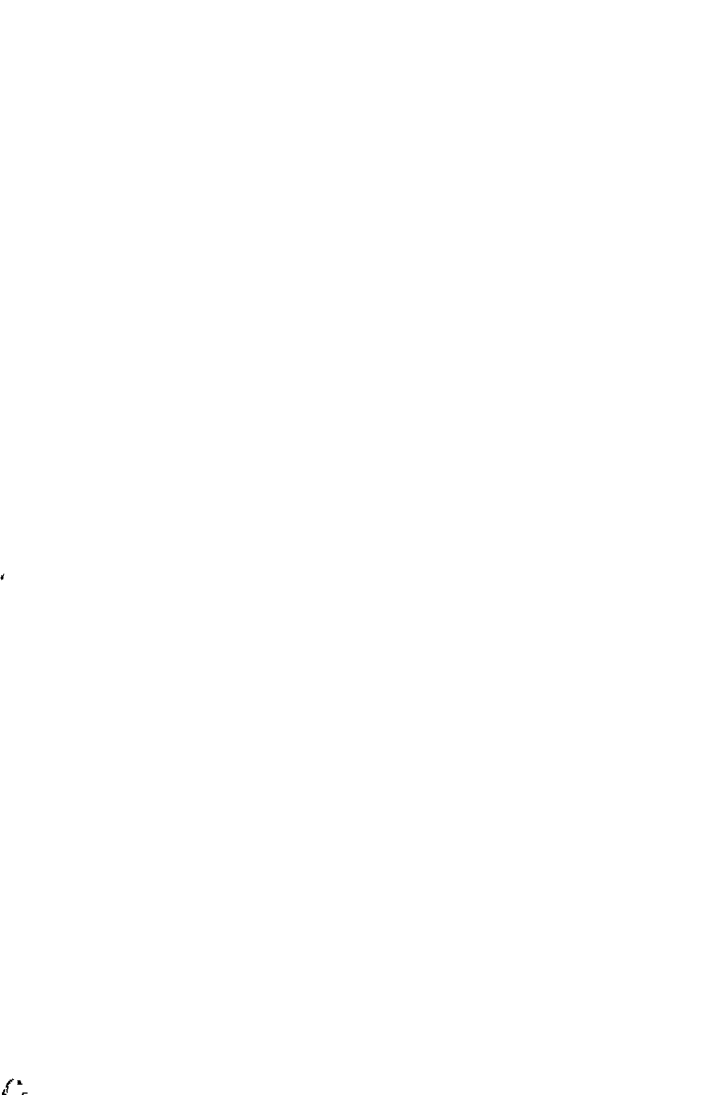
७३ " " " $७३ \times २ = १४६ + १ = १४७$

१४७ " " " $१४७ \times २ = २९४ + १ = २९५$

इति श्रीअंकवितासे भातुकथि विरचिते नारंगी गणित
कथननामः प्रथमविशो विज्ञासः ।

प्रश्न विनोद ।

- (१) प्र०-१६१ म २ इस प्रकार मिलाओ कि योग २० से कम हो ।
 उ०- $१६\frac{१}{२}$
- (२) प्र०-६६८ में ६ इस प्रकार मिलाओ कि योग १०० से अधिक न हो ।
 उ०- $६६\frac{६}{६} = १००$
- (३) प्र०-एक वृक्ष में २० पत्ती बैठे थे एक शिकारी ने बन्दूक से एक को मार गिराया अब वृक्ष में कितने पत्ती रहे ?
 उ०-एक भी नहीं शेष सब उड़ गये ।
- (४) प्र०-आठ गज की एक मयाज है, एक आठगी एक दिन में एक गज काट सकता है तो बताओ पूरी मयाज काटने को कितने दिन लगेंगे ?
 उ०-सात दिन ।
- (५) प्र०-एक जहाज को एक स्थान से दूसरे स्थान को जाने में १० दिन लगते हैं तो एक साथ दस जहाज जाने में कितने दिन लगेंगे ?
 उ०-दस दिन ।
- (६) प्र०-एक नदी की गहराई कहीं २ फीट ३ कहीं ४ और कहीं ७ फुट है जिसका औसत ४ फुट गहराई पड़ता है तो बताओ बिना नाव के पार जाने में आदमी डूबेगा या नहीं ?
 उ०-ऐसे प्रसंग में औसत से काम न निकलेगा जहा अधिक गहरा है वहाँ न तैर सके तो अवश्य डूब जावेगा ।
- (७) प्र०-एक साधारण कुआ खोदने और ईंट और चूने से बांधने में पाच आदमी प्रतिदिन दस घंटे के मान से दोस दिन में तयार कर सकें हैं तो ३०० आदमी एक साथ भिड़ जायें तो उसी कुए को खोदकर कितने दिनों में तैयार कर लेंगे ?
 उ०-गणित से तो आधे दिन में परन्तु काल्पनिक और व्यवहारिक गणित में विशेष अन्तर है यहा काल्पनिक गणित से काम न निकलेगा व्यवहारिक गणितही काम आवेगा इस झोंटे से काम में ३०० आदमी लगाना निरर्थक है कई तो निच्छल बैठे रहेंगे और गुथा व्यय होगा खोदाई और जोड़ाई में उचित समय अवश्य लगेगा इसलिये आधे दिन में या जाना असम्भव है ५ ५ दस आदमी लगाने से काम कुछ जल्दी हो सकेगा ।



आयु कथन ।

(आयु बताना)

- (१) मास द्रुगुणा धन पाच करि, तिहि पुनि गुणौ पचास ।
 आयु जोरि हत वर्ष दिन, इक पन्द्रा जु रि खास ॥
 बाम अरु सोद मास है, शेष अरु वय जान ।
 पृच्छक भाषत अंकही, आयुन कहिय विधान ॥

प्रश्नकर्ता को अपना जन्म महीना और अपनी उमर पहिले से ही मालूम होनी चाहिये उत्तरदाता पृच्छक के ही हाथ से गणित करावे और अंतिम संख्या देख वा इन कर महीना और उमर फइ देवे ।

$$= 2 \times 2 = 4 + 4 = 8 \quad 2 \times 20 = 40 + 48 = 88 \quad 2 \times 28 = 56 + 32 = 88 + 28 = 116$$

बाम अंक = ८ (अगस्त)

शेषांक = ६४ (आयु)

इससे ज्ञात हुआ कि पृच्छक का जन्म अगस्त में हुआ और उमर ६४ वर्ष की है ।

- २) केंद्राश संख्या त्रिगुणी विधाय राह्वार संख्यांक कृतो विहीनम्
 आयुः प्रमाणं कथित मुनीन्द्रैश्चिरतलैर्ज्योतिषिकैः स्मृतानि ।

अर्थ—जन्म कुंडली के केंद्र-वानीय (अर्थात् १, ३, ७, १० घरों में) जो जो अंक हों उनको जोड़कर तिगुना करे और जहाँ राहु और आर (मंगल) बैठे हों उनके अंकों को जोड़कर त्रिगुणितारु से घटा देवे जो शेष रहे वह आयु का प्रमाण होगा यह स्थूलमान है ।

- १) अन्यमते

दिग श्रुतु नख सर योग ह्य, नख रस दिग मन राम ।

बेद प्रहाकनि जोरि के, आयुः कहिय ललाम ॥

जन्म कुण्डली में जिस जिस घर में ग्रह हो वहाँ के अंक उपरोक्त क्रम से जोड़ें वे जहाँ ग्रह न हों वहाँ जोड़ देवे जहाँ एक से अधिक ग्रह हों वहाँ उसी घर के समस्त अंक बड़ा लेंगे तो आयु का स्थूलमान निकलेगा किन्तीर का मत है कि जिस घर के

राहु मंगल या शनि पड़े हों उनके अफो फो योग में से घटा देवे जो जेष रहे वह आयु वा स्थूलभाग होगा, यथा —

१ के अफ में जो ग्रह हो वहां	१०	७ के अफ में जो ग्रह हो वहां	२०
२	६	८	६
३	२०	९	१०
४	५	१०	१५
५	८	११	३
६	२	१२	४
			१०८

इति श्रीअफविलासे नाटुक्वि सप्रक्षिते आयु कथनप्राम अधोदिशा विज्ञासः

संख्या प्रमाणा ।

एकं दश शतं चैव सहस्रप्रयुत तथा ।
 लक्षं प्रयुतं चैव कोटिरर्बुदमेव च ॥
 टुन्द् सर्वो निखर्वश्च शख पञ्चश्च रागरः ।
 अत्य मध्य परार्द्धं दश वृद्धथा यथा क्रमम् ॥

संख्या	प्राचीन नाम	आधुनिक नाम	सूचना
१	एक	एक	प्राचीन तथा संख्या
१०	दश	दश	१०० की संख्याओं को है
१००	शत	सौ, सैकड़ा	अर्थात् १०० को है
१०००	सहस्र	सहस्र, हजार	१६ मन्तली है जो न्याय
१००००	अयुत	दस हजार	सागत नहीं है यदि
१०००००	लक्ष	लाख	१० शख मनी जाये
१००००००	प्रयुत	दस लाख	तो १०० शख का
१०००००००	कोटि	करोड़	पचा नाम होगा यथार्थ
१०००००००००	अर्बुद	दस करोड़	में अर्ब से आगे गिने
१०००००००००००	वृन्द्	अर्ब	में भ्रम होगा है शख
१०००००००००००००	खर्व	दस अर्ब	वा मद्दा शख कुवेर
१०००००००००००००००	निखर्व	खर्व	की निधि है और एक
१००००००००००००००००	शख	दस खर्व	शख दस निखर्व का
१००००००००००००००००००	पञ्च	नीज	होता है इससे अधिक
१००००००००००००००००००००	सगर	दस नीज	सपत्ति के स्वामी केवल
१००००००००००००००००००००००	अत्य	पञ्च	ज लक्ष्मीनाथ हैं ।
१०००००००००००००००००००००००००	मध्य	दस पञ्च	
१००००००००००००००००००००००००००००००	परार्द्ध	शख	परार्द्ध मिति चरम
			संख्या ।

इति धीश्रकविलासे मानुषवि समदिते संख्या प्रमाणा वर्णनानाम अतुर्विंशो पिकास ।

अंक मय जगद्वर्णन ।

अंक मय जगत का एक छोटा सा उदाहरण ।

यदि मिथ कर देखो तो जगत भी क्याही विचित्र है, कोई आनन्द से श्वेत पजाता है तो कोई दुख से ईट पटाता है किसी को सोने के लिये धपाई भी नहीं तो किसी को ईपर खट पर भी नींद नहीं कोई १००वागरी में मस्त, कोई अनाध में लस्त कोई १००भाग्यवती सुखी है तो कोई श्वाला वैधव्य से दुखी है कोई विद्यापन ईपा रहा है तो कोई ईप्पय सुना रहा है कोई धर्म प्रधरु है तो कोई समाध प्रकाशक है कहीं बर७ की बहार है तो कहीं प्रजा अनावृष्टि से लाध है कहीं २रे पहर पूरी इन रही है तो कहीं ३०रे पहर भग इन रही है कोई प्राध में चूर तो कोई प्रध में भरपूर कोई जात का सर ध है तो कोई बुद्धा खर० मशालच है कहीं १००त १००त का भगड़ा है तो कहीं ३-१३ नहिं भाई का रगड़ा है कहीं किसी का धन ई होता है तो कोई धम राग में मस्त होता है कहीं १०मी १०दरे का त्पोहार है तो कहीं दुखित रोगियों का उपध है कहीं राजा की अ.४१६ती है तो कहीं प्रजा दुखित हो अपनी वि७ भर विनय करती है कोई त्रिरप में पड़ा है तो कोई प्ररप में अड़ा है, कोई अपनी नयी १००० दास्ता सुना रहा है तो कोई प्रदना ३०मारखानी बघार रहा है कोई १,००,००० वा १,००,००,००० यत्न करने पर भी सतज नहीं होता किसी को ईश्वर विना प्रयत्नही ईप्पर फाड़कर देता है यथार्थ में उस १ का अरु किसी ने न पाया । ×

श्रुति श्रीअत्रकविलासे भानुकवि विरचिते अष्टमय जगत वर्णननाम षड्विंशो_विलासः ।

(अक) *

अक्रानाम् शायतो गतिः

अंरु अंगुण आत्पर सगुण, समुभूत उभय प्रकार ।
 खोये राते आप भल, तुलसी चारु विचार ॥
 रामावुध अकित गृह, शोभा वरणि न जाय ।
 नव तुलसी के टुन्ड बहु, देखि हर्ष कपिराय ॥
 मन महा मखि विषय व्याल के, भेटन काठेन कुअरु भाल के ॥
 तुम सन पिटहि कि विधि के अका । मातु ट्या जनि लेहु कलका ॥
 सीय राम पद अंरु वराये । लखन चलत मग दाहिन बाये ॥
 एकहि आंक यही मन पाही । प्रात काल चलिहौ प्रभु पाही ॥
 हंरुपहि निरखि राम पद अका । मानहु पारस पायउ रका ॥
 गहि पद लगे सुमित्रा अका । जनु भैती सम्पति अति रका ॥
 अत्र भरि अक भेटि भोहि भाई । लोचन सफल करहुं मै जाई ॥

सू०—इस सम्बन्ध में मगलाचरख भी देखिये ।

*अक-गितालीके अक, चिन्द, गोद, सख्या, नाटकाश, ग्रन्थाश, चव सख्याका संकेत ।

अंक पदावली कथन ।

१

२

श्लोकेन वा तदर्थेन तदर्थार्द्राक्षरेण वा ।
 अवन्यन्दिवसकुर्ग्या दानाध्ययन रुर्मभिः ।
 अर्थ वसति कैलासे, अर्थ गायक पट्टिरे ।
 सम्पूर्णा वणिजागारे, यो जानाति स पडितः ।
 अजीशे भेषज वारि, जीशे वारि उल प्रदम् ।
 अमृत भोजनाधेतु, अक्तस्योपरि तद्विषम् ।
 सर्व नाशे समुत्पन्न, हर्ष लजति पडितः ।
 अर्थेन कुर्वते कार्य, सर्व नाशो न जायते ।

शूली जातः कदशन वशाद्भैक्ष्य योगात्कपाली ।
 चत्वाभावाद्धिगत वसनः स्नेह शून्यो जटावान् ।
 इत्थ राजस्तव परिचया दीश्वरत्वं मयाप्तं ।
 नाद्यापि त्वं मम नरपते ह्यर्द्धं चन्द्रं ददासि ।
 अर्द्धं दानव वैरिणा गिरिजयाभ्यर्धं हरस्याहृतं ।
 देवैत्यं भुवन त्रये स्परहरा भावे समुन्मीलति ।
 गंगा सागर मन्वरं शशि कला शेषश्च पृथ्वी तल ।
 सर्वज्ञत्वमधीश्वरत्व मग मत्त्वामाच भिक्षाटनम् ।
 अर्धे मात्रा लाघवेन पुत्रोत्सवंमन्यन्ते वैयाकरणाः ।

अधे भाग कोणल्यहि दीना, उभय भाग आधेकर कीन्हा ।
 गिरा मुखर तनु अर्ध भवानी, रति अति दुखित अतनु पतिजानी ।
 सकुचौ तात कहत इक वाता, अर्ध तजहिं बुध सर्वस जाता ।
 अर्ध राति पुर द्वार पुकारा, वाली रिपु बल सहै न पारा ।
 अर्ध राति गइ कपि नही आवा, राम उठाय अनुज उर लावा ।
 आधा रुद्रक कपिन संहारा, कहहु बेग का करिय विचारा ।
 इहा अर्ध निशि रावण जागा, निज सारथि सन खीझन लागा ।
 अर्धे निशा वह आयो भौन, सुन्दरता वरणे रुहि कौन ।

निरखतरी मन भयो अनन्द, क्यो सखि सज्जन ना सखि चन्द
 आधा कैलासहि वसे, आधा गायक हाथ ।

पूरण बनिया घर रहे, जानै सोइ सनाथ । (हरताल)

आधा दूल्ह आधा रोग, बीच वाग में भा सजोग । (वरगद)

पूरा है पर आधा नाम, औपधि के वह आवे काम । (नीम)

अध जल गगरी, छलरुत जाय ।

आध सेर के पात्र में, कैसे सेर समाय ।

आधी छोड़ एक को बाधे, ऐसा इधे थाह न पावे ।

आधा तीतर आधःपटेर ।

आधे माधे, कामरि काधे ।

आधे गाव दिवारि है, आधे में है फाग ।

एक घडी आधी घड़ी, आधिउ में पुनि आध ।

तर्सा सगति साधु की, हरै कोटि अपराध ॥

खाय के पान विशाग्त ओठ है वैठि सभा में बने अलवेला ।
धोती किनारी की माडी सी प्रोढत पेट बढ़ाय क्रिये जस थैला ।
वेश गुपाल बखानत है यह भूप रुहाय बने फिर छैला ।
सान करे बड़ी साहिबी की अरु दान में देत न एक अरेला ॥

(१)

एक मेवाक्षरयस्तु, गुरुः शिष्य प्रबोधयेत्
पृथिव्या नारित तद्द्रव्यं, यद्व्याचानृणां भवेत् ।

एकाक्षर प्रदातां, यो गुरु नाभि वंदति ।

श्वानयोनिशत भ्रुवा चाण्डाले प्वभिजायते ।

यथा ह्येकेन चक्रेण न रथस्य गतिर्भवेत् ।

एवं पुरुषकारेण पितृ देवं न सिध्यति ॥

एको देवः केशवो वा शिवोवा, एकानागी सुन्दरी वा दरीवा ।

एक मित्र भूपतिर्वा यतिर्वा, एको वासः पत्तने वा वनेवा ।

अनन्तरत्नप्रभस्त्र यस्त हिमनसोभाग्य विलोपि जातम् ।

एकोहि दोषो गुण सन्निपाते निमज्जतीन्द्रोः किरसोष्विवाकः ।

एकोहि दोषो गुण सन्निपाते, निमज्जतीन्द्रोरिति योत्र भाषे ।

न तेन इष्ट रुविनारायस्त, दाम्नित्र मेरु गुण कोटि हारि ।

एकोऽपि कृष्णस्य कृतः प्रणापो, दशाश्वमेधाय भूयेन तुल्यः ।

दशाश्वमेधी पुनरेति जन्म, कृष्ण प्रणापी न पुनर्भवाय ।

श्रुतिर्विभिन्नास्मृतिरेव भिन्ना, नेको मुनिर्यस्य वचोऽप्रमाणम् ।

धर्मस्य तत्र निहित गुहाया, महाजनो येन गतः सपथाः ।

सर्वं वर्मान्परित्यज्य, मामेकं गरणं व्रज ।

अहंत्वा सर्वं पापेभ्यो, मोक्षं विष्यामि माशुचः ।

एक एव सुहृद्दमो, निजनेप्पनुयात्तियः ।

शरीरेण समन्नाश, सर्वं मन्यद्धि मञ्छति ।

एके नापि सुपुत्रेण, पत्रिण गुण शालिना ।

सुरभिः क्लियते गोत्रश्चन्दने नेत्र काननम् ।

ओम्तिरोकाक्षरब्रह्म, व्याहरन्माणुस्परम ।

यः प्रयाति त्यजन्देह, सयाति परमागतिम् ।

चला लक्ष्मीश्चलाः प्राणाश्चले जीवित मदिर ।

चला चलेच संसारे, धर्म एकोहि निश्चलः ।

- १-२ एकस्य दुःखस्य न यावदंत, पारंगविष्यामि अथाशेषस्य ।
तावद् द्वितीय समुपस्थितम्मे, छिद्रेऽनर्था बहुली भवति ।
- १-२-३-३ एक मात्रो भवेद् ह्रस्वो द्विमात्रो दीर्घ उच्यते ।
त्रिमात्रस्तु प्लुतोऽज्ञेयो व्यंजनं चार्द्धं मात्रकम् ।
- १-२-३-४ प्रथमे नार्जिता विद्या, द्वितीये नार्जितं धनम् ।
तृतीये न तपस्तप्त, चतुर्थे किं करिष्यसि ।
- १-२-३ { एकस्तपो द्विरध्यायी, त्रिभिर्गानं चतुष्पथः ।
४-५-७ { पच सप्त कृपिशचैव, संग्रापो बहुभिर्जनैः ।
१ से २ प्रथमं शैलं पुत्रीति, द्वितीयं ब्रह्मचारिणी ।
तृतीयं चंद्रं घण्टेति क्लृप्ताण्डेति चतुर्थकम् ।
पंचमं स्कंदं मातेति षष्ठं कात्यायनीति च ।
सप्तमं कालं रात्रिश्च महागौरीति चाष्टमम् ।
नवमं सिद्धिं दात्रीं च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः ।
- १-१० एके नैव सुपुत्रेण, सिंही स्वपिति निर्भया ।
सहैव दशभिः पुत्रैर्भारं वहति गर्दभी ।
- १-१०० { एको हि गुणावान्पुत्रो, निर्गुणैश्च शतैर्वरः ।
१००० { एकश्च द्रस्तमो हन्ति, न चताराः सहस्रशः ।

- (१) एकं अनीह अरूपं अनामा, अजं सच्चिदानन्दं परधाना ॥
भरतं स्वभावं तु शीतलं ताई, सदा एकं रसं वरिणं न जाई ॥
आश्रमं एकं दीप्तं मगं माही खगं मृगं जीवं जन्तुं कछुं नाही ॥
बन्धो संतं असज्जनं चरणां, दुःखं प्रदं उभयं वीचं कछुं वरणा ॥
गिहुरतं एकं प्राणं हरिं लेही, मिलतं एकं वारणां दुःखं देही ॥
एकं हि माणं प्राणं हरिं लीन्हा, दीनं जानिं तेहिं निजं पदं टीन्हा ॥
एकं निमेषं वर्षं समं जाई, बहिं विधिं भरतं नगरं नियराई ॥
एकं वारं चुनिं कुसुमं सुहाये, निजकरं भूपणां रामं वनाये ॥
एकं गर्भं एकं व्रतं नेमा, कायं वचनं मनं पतिं पदं प्रेमा ॥
सुनुं सुधीं न मं मारिहो, बालिं एकधीं माणं ।
ब्रह्मं वदं शरणागतं, गये न उबरहिं प्राणं ॥
एकं वाणिं कल्याणं निजानं की, सो मियं जाके गतिं न आनं की ॥
सगं नारिं इकं देविं अनूपां, वरणिं न सकहिं शेषं तेहिं रूपा ॥

निश्चर एक रिन्धु मूढ रहई, करि माया नभ के सम गहई ॥
 गैल दिशाल देखि इक अगि, तापर कूटि चढेउ भय त्यागे ।
 बलि जीतन इःह गयउ पताला, राखा बाध गिशुन ह्य शाला ॥
 एक नरोरि सहस भुज पेखा, धाइ धरा ननु जन्तु विरोखा ।
 एक कदत गेहि सकुच अति, रहा बालि की काख ।

तिन मई रायण कवन त, सत्य कहहु तजि माव ॥
 एकहि वाण क्राटि सब माया, जिगि दिन कर हर तिथि निहाया ।
 लीन्ह एक तेहि शैल उपाठी, रघुजल तिलक श्रुजा सोड काटी ।
 निज जननी के एक कुमारा, तात तागु तुम प्राण अगारा ।
 एक नारि प्रत रघुवर केरा, लखन सुयश तुन सुनेहु वनेरा ।
 रहा एक दिन अग्रधि अगारा, समुभक्त मन दुख भयउ अपारा ।
 रहा एक दिन अग्रधि कर, अति अरत पुरलोग ।

जह तहें शोचहि नारि नर, कुरा तनु राम वियोग ।
 कलियुग योग यज्ञ नहि ज्ञाना, एक अधार राम गुण गाना ।
 कलिकर एक पुनीत प्रतापा, मानस पुण्य होइ नहि पापा ।
 यदि कलिकाल न र्म विवेक, राम नाम अलम्बन एक ।
 एक राध बाजे नहि तारी ।
 इह तें एक दर्ई के ताल ।
 इकलो चना भाड नहि फोडै ।
 एक गरीबी आटा गीला ।
 इक मछली सर गधित करै ।
 एक तवे की रोटी, क्या छोटी क्या मोटी ।
 इक नागिन अरु पख लगाय ।
 एक पूत जनि जनियो माय, घरै रहै की बाहर जाय ।
 रे मन साहसी साहस राव, सु साहस से सब पेर फिरंगे ।
 ज्यो पदमारु या सुख मे दुख त्यो दुख मे सुख सेर फिरंगे ॥
 वैसही वेणु वजावत श्याम सुनाम हमारहू डेर फिरंगे ।
 एक दिना नहि एक दिना कवहू फिर वे दिन फेर फिरंगे ॥
 कहं कृपाराम सब सीखयो निकाम एक बोलियो न सीख्यो सब
 सीख्यो गयो धूर में ।
 काजर की कोठरी में केतेहु बचाये चलो एक रेख काजर की लागिहै
 पै लागिहै ।

एक जने से दोय भले ।
 एक पथ दो काज ।
 एकै साथे सय सपै, सब साथे राव जाय ।
 जो गहि सेवै मूल को, फूलै फलै अयाय ॥
 कोरे गरजे बृदन एक ।
 ताणहि सो यह लखे विवेका, सब तें प्रवत जगत मई एका ।
 चलियो भलो न कास को, दुडिहा भली न एक ।

मगियो भलो न वाप सो, जो विधि राखै टेक ॥
 भलै यनुस की एकै वात ।
 भूमि एक विश्वा नी, नाम 'नयो भूनाल ।
 सब चमने अण्डा एक तु न रूटा चाहिये ।
 है अने की जोय को, एक सहायक राग ।
 भिंह लंगर सु पुख्य वनन, कडलि फरै इरवार ।
 तिरिया तेल हरीर हठ, चढ़ै न दूजी वार ॥
 ब्रह्म, चन्द्रगा, भूमि अरु, रद गनेश है एक ।
 गज मुकता त्यो शुक्र चख, एक कहे सत्रिवेक ॥
 टका करै कुलहल टका भिरभेग वजायै ।
 टका चढ़ै सुखपाल टका सिर छत्र धरायै ॥
 टका माइ अरु वाप टका भैषन को भैया ।
 टका सामु अरु ससुर टका सिर लाड लडैया ॥
 सो एक टका विन दुक टका होत रहत नित रात दिन ।
 वैताल कहे विक्रम सुनो भिक जीवन इक टके विन ॥

- १-२ चलो सखी तहँ जाइये जहा वसै ब्रजराज ।
 गोरस वैचत हरि मिलै एक पंथ दो काज ॥
- १-२ इक द्वर अरु दोय असाढ ।
 १-२ इक तो है ही करू करेला, दूजे नीम चढो ।
 १-२ एकहि वार आस सब पूजी, अब कुछ कहव जीह करि दूजी ।
 १-२ इक तो उडिया नाचनी, दूजे घर भा नाति ।
 १-२ एकहि म्यान माहि द्वै खाडे ।
 १-२ लेना एक न देना दोय ।

- १-२ एक क्षत्र इक मुकुट मणि, सब वर्णन पर जोड़ ।
तुलसी रघुवर नाम के, वरख पिराजत दोड़ ।
- १-४ एक दंत दयावंत चार भुजा धारी, माथे सिद्ध लते मूपक असवागी ।
१-४ गृहिन दरिद्र गृह त्यागिन विभूति दीन्ही भेगिन वियोग भुगयवन्तइ
छलो गयो । ग्रहन प्रहेग क्रियो शनी को सुचित्त लघु व्यालन
अनद शेष भारन दलो गयो । फेरन फिरावत गुणान द्वार द्वार
नीच गुणन विहीन घर पैठेही भलो भयो । कौन कौन चूक कशे
तेरी एक आनन तें नाम चतुरानन पै चूरतो चलो गयो ॥
- १-४-५ } गावत गजानन सकुचि एक आनन तें, जात चतुराननहू पैठि वश
६-१००० } लाज के । मौन गहि रहे शशु कहि पच आनन तें, भापत पडानन
ना सामुहे समाज के ॥ कहौ पुनि कौन विधि गाड्ये गुणानुवाद,
'भानु' लघु आनन तें देव सिरताज के । शेष जय गावै सह-
सानन तें तोहू गुन, गाये ना सिरात ब्रजराज महराज के ॥
- १-५ एक मुख गाये ताते पाच मुख पाये अच पाच मुख गाइहौ तो वेते मुख
पाइहौ (गगालहरी)
- १-२ देव एक गुण धनुष हमारे, नव गुण परम पुनीत तुम्हारे ।
१से६ तोसो तुरी इक कृष्ण प्रिया, नहिं दूजि लखी त्रयलोरु भकारी ।
चारिहु वेद धके गुण गाय, तिया पच वाणाहु की छत्रिहारी ।
राग छत्रे अनुराग भरी, सत सिन्हाहु ना अम रव निहारी ।
आठहु सिद्धि नवौ निधि देत, सदा जन को दृषभान दुलारी ।
- १-६ एक एक तो बात है, लगी नो नो हाथ ।
- १-१० राम नाम इक अक है, सब साधन है मून ।
अक गये कछु हाथ नहिं, अक रहे दसगून ॥
- १-१०० शेर पूत एक भलो, सो सियार के नहिं ।
- (१सहस्र) एक बार तरवार को सहस्र बार अहसान ।
- १ कोटि जोलो एक तारे को हौ रचत कवित गग तौलो तुमकेतिक करोर तारि
दार्ती (गगालहरी.)

(१२)

ढेढ पायली रमतिला, मिरजापुर की हाट ।

(२)

शोकाराति भय त्राणां, प्रीति विश्रम्भ भाजनम्
 केन रत्न मिदं सृष्टं मित्र प्रित्यक्षर द्वयम् ।
 रात्रादपिच मर्त्तव्य, मर्त्तव्य रावणादपि
 उभयोर्यदि मर्त्तव्य, वरं रामो न रावणः ।
 संसार विष वृत्तस्य, द्वे एव रस वत्फले
 काव्यामृत रसा स्वादः, संगमः सुजनैः सह ।
 संग्रामे सुभटेन्द्राणां, कवीनां कवि मंडले
 दीप्तिर्वा दीप्तिहानिर्वा, मुहूर्तादेव जायते ।
 नवेदाच्च पर शास्त्रं, न देवः केशवात्परः ।

- २-३ खादन्न गच्छामि हसन्न जल्पे, गतं न शोचामि कृतं न मन्ये
 द्वाभ्यां तृतीयो न भवामि राजन् किं कारणां भोज भवामि मूर्खः ।
 २-४-द-८ स्त्रीणां द्विगुणा आहारो, लज्जा चापि चतुर्गुणा
 साहस पद् गुणंचैव, कामश्चाष्ट गुणाः स्मृतः ।
 २-६-३ न गच्छेता पिता पुत्रौ न गच्छेत्सोदर द्वयम्
 नव नायोनं गच्छेयु नै गच्छेद् ब्राह्मण त्रयम् ।

- २ पक्ष, नदीतट, धार असि, श्रुति उरोज, चख, हाथ ।
 राम पुत्र अरु हस्ति रद, चरु सारस द्वै साथ ॥
 आखर मधुर मनोहर दोऊ, वरणा विलोचन जन जिय जोऊ ।
 सिया राम मय सब जग जानी, करौं प्रणाम जोरि जुग पानी ।
 कह दुहुं कर जोरी अस्तुति तोरी, केहि विधि करौं अनन्ता ।
 माया गुण ज्ञानातीत अमाना, वेद पुराण भनन्ता ।
 तेहि अवसर आये दोउ भाई, गये रहे देखन फुलवाई ।
 राम लपन दोउ वन्द्यु वर, रूप शील बल धाम
 मख राखेउ सब साखि जग, जीति असुर समाम ।

शुनि पद कमल बंदि दौउ भ्राता, चले लोक लोचन सुखदाता ।

निरखि सहज सुन्दर दोउ भाई, होहिं सुखी लोचन फल पाई ।

सहज मनोहर मूरति दोऊ, कोटि काम उपमा लघु सोऊ ।

प्रथु दोउ खंड चाप महि डारे, देखि लोग सब भये सुखारे ।

सुनहु गहीपति मुकुट मणि, तुम सम धन्य न कोउ ।

राम लपण जिनके तनय, विश्व निभूषण दोउ ॥

१ । हरिं बन्धु दोउ हृदय लगाये, पुलक अग लोचन जल छाये ।

दुइ बरदान भूप सन थाती, मागहु आशु जुडावहु छाती ।

दुइकि होइ इक सग भुआलु, ईसव ठठाइ फुलाखव गालु ।

तुलसी या जग आइके, करि लीजे दौ काम

देवे को दुकडा भलो, लेवे को हरि नान ।

भइ मति कीट भृग की नाई, जहँ तहँ में देखहु द्वै भाई ।

गुण ते गरुबो होत, नहिं संपति न सहायते,

पूनीचन्द उदोत, दुतिया की सखर नहीं ।

जग में साचे दो जने, एक राम अरु राम ।

इक दाता है मोक्ष के, एक सुधारै काम ॥

लाल लाल सबही कहत, लाल जगत में दोय ।

इक सागर में दूसरो, मातु कोख में होय ॥

दुविधा मे दोऊ गर्ये, माया मिली न राम ।

ये कबहुं नहिं दूबर होत रसोई के विभ फसाड के कृत ।

घोनो ओ सुगन्ध तो में दोनो देखियतु है ।

(१२)

ढेढ पायली रमतिला, मिरजापुर की हाट ।

(२)

शोकाराति भय त्राणां, प्रीति विश्रम्भ भाजनम्
 केन रत्न मिदं सृष्टं मित्र पित्यक्षर द्वयम् ।
 रामादपिच मर्त्तव्यं, मर्त्तव्यं रावणादपि
 उभयोर्यदि मर्त्तव्यं, वर रामो न रावणः ।
 संनार विप वृक्षस्य, द्वे एव रस वस्त्रले
 काज्यामृत रसा स्वादः, संगमः सुजनैः सह ।
 संध्रामे सुभटेन्द्राणां, कवीना कवि मंडले
 दीप्तिर्वा दीप्तिहानिर्वा, मुहूर्तादेव जायते ।
 नवेदाच्च परं शास्त्र, न देवः केशवात्परः ।

- २-३ खादन्न गच्छामि हसन्न जल्पे, गतं न शोचामि कृतं न मन्ये
 द्वाभ्यां तृतीयो न भवामि राजन् कि कारण भोज भवामि मूर्खः ।
 २-४-६-८ स्त्रीणा द्विगुण आहारो, लज्जा चापि चतुर्गुणा
 साहस पद् गुणंचैव, कामश्चाष्ट गुणः स्मृतः ।
 २-९-३ न गच्छेता पिता पुत्रौ न गच्छेत्सोदर द्वयम्
 नव नार्यो न गच्छेयुर्न गच्छेद् ब्राह्मण त्रयम् ।

- २ पक्ष, नदीतट, धार असि, श्रुति उरोज, चख, हाथ ।
 राम पुत्र अरु हस्ति रद, चक्र सारस द्वै साथ ॥
 आखर, मधुर मनोहर दोऊ, वरणा विलोचन जन जिय जोऊ ।
 सिया राम मय सब जग जानी, करौं प्रणाम जोरि जुग पानी ।
 कह दुहु कर जोरी अस्तुति तोरी, केहि विधि करौं अनन्ता ।
 माया गुण ज्ञानातीत अमाना, वेद पुराण भनन्ता ।
 तेहि अवसर आये दोऊ भाई, गये रहे देखन फुलवाई ।
 राम लपन दोऊ वन्द्यु वर, स्व शील बल धाम
 मल राखेउ सब साखि जग, जीति असुर संग्राम ।

शुनि पद कमल बंदि दोउ भ्राता, चले लोरु लोचन सुखदाता ।

निरखि सहज सुन्दर दोउ भाई, होई सुखी लोचन फल पाई ।

सहज मनोहर मूरति दोऊ, कोटि काम उपमा लघु सोऊ ।

प्रभु दोउ खड चाप महि डारे, देखि लोग सब भये सुखारे ।

सुनहु गहीपति मुकुट मणि, तुम सम धन्य न कोउ ।

राम-लपण जिनके तनय, त्रिश्व त्रिभुण्य दोउ ॥

इपि बन्धु दोउ हृदय लगाये, पुलक अग लोचन जल छाये ।

दुइ वरदान भूप सन धाती, भागहु आयु जुड़ावहु छाती ।

दुइकि होइ इक संग भुआलु, ठेसव ठठाइ फुलाउव गालु ।

तुलसी या जग आइके, करि लीजे दो काम
देवे को डुरुवा भलो, लेवे को हरि नाम ।

भइ मति कीट भृग की नाई, जहें तहें में देखहु द्वै भाई ।

गुण ते गरुवो होत, नहि संपति न सहायते,

पूनोचन्द उदोत, दुतिया की मरजग नही ।

जग में साचे दो जने, एक राम अरु दाम ।

इक दाता हैं मोक्ष के, एरु सुधारें काम ॥

लाल लाल सबही कहत, लाल जगत में दोय ।

इक सागर में दूसरो, मातु कोस में होय ॥

दुविधा में दोऊ गये, माया मिली न राम ।

ये कउह नहि दूर होत रसोई के विम फलत के ॥

दोनो ओ सुगन्ध तो नें दोनो देनियतु है ।

- वेद पुराण संत मत येह, सीय राम पद सहज सनेह ।
 अंधरा मागे दुइ आखी ।
 दोइ हांथ सों वाजे तारी ।
 दोय घरों का पाहुना, भूखो ही रहि जाय ।
 खूब गुजरेगी जो मिल बैठेंगे दीवाने दो ।
 हौ तुम नीति निधान खला, परमारथ स्वारथ साधत दोऊ ।
- २-३ राज को दूसरो छेरी को तीसरो, रेंड को मूसरो खासर खूसा ।
 २-३ दो जन की तक़रार में, तीजे की है मौज ।
 २-४ श्याम गौर सुन्दर दोउ जोरी, निरखहि छवि जननी त्रण तोरी ।
 चारिउ शील रूप गुण धामा, तदपि अधिक सुख सागर रामा ॥
- २-६० बोले नल दोउ भुजा उठाई, योजन साठि मोर गति भाई ।

२-४-८ }
 १६-३२ }
 ६४-१२८ }
 २५६-५१२ }
 } जामें दू अधेली चार पावली दुअन्नी आठ, तामें पुनि आना लखी
 } सोरह समात है । बत्तिस अधन्नी जामें चवसठ पैसा होत, एकसौ
 } अठाइस सुधेला गुनमात है । जुग सत छप्पन छट्टाम तामें देखियत,
 } दमरी सु पाच सत बारह लखात है । कठिन समैया कलिकाल को
 } कुटिल दैया, सलग रुपैया भैया कापै दियो जात है ।

(२१)

बाई अक्षर भेम के, पढ़ै सो पढित होय ।
 घोंडाहू शतरंज को, चलै अड़ाई चाल ।
 बाई चावल खीचड़ी, पके मिया की भिन्न ।
 दुष्टा राजा बाई विन का ।

(३)

अधमा धन मिच्छति, धन मानंच मध्यमाः
उत्तमा मान मिच्छति, मानोहि महतां धनम् ।

असारे खलु संसारे, सारमेत त्रय स्मृतम्
काश्या वासः सता सेवा मुरारेः स्मरण तथा ।

उपमा कालिदासस्य, भारवे रथं गौरवम्
वगिहनः पदलालित्य, माघे सति त्रयो गुणाः ।

तमाल त्रिभिर्धे प्रोक्तं, कलौ भागीरथी यथा
कचिद् धुक्का कचि त्युक्का कचिन्नासाम् गामिनी ।

प्रदाने विप्र पीडास्तु, पुत्र पीडास्तु भोजने
शयने पत्नि पीडास्तु, त्रि पीडास्तु दिने दिने ।

दूरस्थाः पर्यता रम्या, वेश्याश्च मुख मढने
युद्धस्य वार्ता रम्याश्च, त्रीणि रम्याणि दूरतः ।

पृथिव्या त्रीणि रवानि, जल मज्ज सु भ्रूपितम्
मूर्धैः पापाणा खगहेषु, रत्न सज्ञा विधीयते ।

पुष्प दृष्ट्वा फल दृष्ट्वा, दृष्ट्वास्त्रीणाश्च यौवनम्
त्रीणि रवानि दृष्ट्वा कस्यनां चलते मनः ।
पिता यस्य शुचिर्भूतो, माता यस्य पतिव्रता
समाभ्या यश्च सभूतो, तस्य नोच्चलित मनः ।

सकृज्जल्पति राजानः सकृज्जल्पति परिदताः
सकृत्कन्या भदीयन्ते, त्रीण्येतानि सकृत्सकृत् ।

भकारः कुम्भकोष्च, भ्रक्षारश्च विभीषणे
तयोर्ज्येष्ठ कुलश्रेष्ठे, भकारःकि न विद्यते । (राषण, रामण)

३-६-११ त्रिपद् एकादशे राहुः त्रिपद् एकादशे शनिः
त्रिपद् एकादशे मौमः सञ्चारिष्ट निवारणम् ।

३ जानहिं तीन काल निज ज्ञाना, करतल गत आमलक समाना ।

त्रिविध ताप त्रासक त्रिसुहानी, राम स्वरूप सिन्धु रागुहानी ।

त्रिकालज्ञ सभ्रं तुम, गति सर्वत्र तुम्हारि ।

कदहु सुता के दोष गुण, मुनिर हृदय विचारि ॥

सौरभ पञ्च मदन विलोका, भयउ कोप कांपेउ त्रय लोका ।

तव शिव तीसर नयन उधारा, चितरत काम भयउ जहि छारा ।

चली सुहावनि त्रिविध वयारी, काम कृशानु बढावन हारी ।

तुम त्रिकालदर्शी मुनि नाथा, विश्व वदरि जिमि तुम्हरे हाथा ।

त्रिविध समीर वहै सुखदाई, निरखत वृन गोभा अत्रिकाई ।

अभय बीच सिय सोहत कैसी, ब्रह्म जीव त्रिच माया जैसी ।

राम कृपा अतुलित बल तिनहीं, त्रय समान त्रय लोकहिं गिनहीं ।

सचिव वैद्य गुरु तीन जो, मिय बोलहिं भय आस ।

राज्य धर्म तन तीनि कर, होइ बेगरी नास ॥

विनय न मानत जलधि जड़, गये तीनि दिन व्रीति ।

बोले राम सक्रोध तव, भय विन होय न प्रीति ॥

दैहिक दैविक भौतिक तापा, राम राज्य काहू नहिं व्यापा ।

रूप में कसर नहीं राग में कसर नाहिं, लाग में कसर नाहिं लागह
की चेरी है । रंग में कसर न कसर है उमगहू में प्राण के प्रसगहू में
परम घनेरी हैं ॥ ग्याल कवि हाव में न भाव में कसर यह चाव में
कसर ना चलाक बहुतेरी है । तीन है कसर ऊधौ काहू के न रूप
इहां नाइन न जाति अरु काहू की न चेरी हैं ॥

राज, तिया, अरु राज इड, तीन प्रखल इड जान ।

चढ़े रग तीमरि बार के बोरे ।

बडी पट्टाई गोंड की, तीन कोस को कोस
 बन जमीन जर तीन ये, सत्र भगड़ों के मूल
 कौड़ी न हो जो पास तो कौड़ी के तीन तीन
 तीन कौर भीतर तो सूझै देव पीतर ।

तीन लोक तें मथुरा न्यारी ।

बही ढाक के तीनहिं पात ।

नौका दूती बैठ प्रवीन, काम सरे पुछियत नहिं तीन ।

भट भट्यारी वेसवा, तीनों जाति कुजात ।
 आये को, आदर कर, जात न पूछे बात ॥

भूल गये राग रग, भूल गये चकरी ।
 तीन चीज याद रहीं, नून तेल लकरी ॥

मुये चाम तें चाम कटावें, भुइमा सकरे सोवें ।
 घाय कहै ये तीनों भकुवा, उदरि जाय अरु रावें ॥

सभा विगारे तीन जन, चुगुल चृतिभा चोर ।

तीन तिकार मठा विचार ।

लीक लीक गाडी चलै, लीकहि चलै कपूत ।
 लीक छाडि तीनों चल, शागर सिंद सपूत ॥

ओरा भूतऽरु साप कहानी, तीनों मे बहु भूठ समानी ।
 तीनों पन नहिं एक समान ।

श्रोता त्रिविध समाज पुर, ग्राम नगर दुहु कुल ।
 सन्त सभा अनुपम अल्प, सरल सुगल मूल ॥

की तुम तीन देव मह कोऊ, नर नारायण की तुम दोऊ ।

३-४ ऋतु वसन्त वह त्रिविध वयारी, सब कहँ सुलभ पदारथ चारी ।

३-४ तीन दिना तक पाहुना, चौथे वेईमान ।

३-१३ तीन माहि नहिं तेरा में, दोल बजावै ढेरा में ।

३-१३ तीन बुलाये तेरा आये, देखौ घर की रीति ।
बाहर वाले स्वागये, घर के गावँ गीत ॥

३-१३-२-१८ तीन तेरा नौ अठारा, जानिये घर फूट ।

(३३)

साढ तिहर्था मानुष देह । पाये हरि सों करौ सनेह ।

साढे तीन यार का किरसा । है नव शौकीनो का यह हिरसा ।

रहे पेशवा राज्य में, साढे तीन सयान ।

सखा देव विद्वल विदित, आधे नाना जान ।

१ सखाराम पंत

१ देवार्जी पंत

१ विद्वलरान

१ नाना फडनवीस

चक्र सुदर्शन वज्र इफ, इन्द्र वज्र विख्यात ।

हनूमान वज्राग पुनि, अर्थ भीम का गात ।

सारंग श्री भगवान धनु, पुनि पिनाक शिव जान ।

गाडीवहु अर्जुन धनुष, अर्थ इन्द्र धनु मान ।

चींटीहूँ टीडी कहूँ, पुनि जलधर जल पीन ।

मन्त्र अर्थ मिलि क्ले प्रबल, कहियन साढे तीन ।

सुरभी मधु माखी बहुरि, पाट कीट सुनु मित्र ।
अर्थ सब गुद जानिये, साढ़े तीन पवित्र ।

बर्ष परीया दशहरा, अरु पचमी वसत ।
अकती अर्थ मूर्हते मिलि, साढ़े तीन कइत ।

(४)

४ काव्येषु नाटकं रम्य, तत्रापिच शकुतला ।
तत्रापिच चतुर्थोऽरुस्तत्र श्लोक चतुष्टयम् ।
चतुर्भुजस्य पत्नीच, महालक्ष्मीः सरस्वती ।
गंगाच तुलसी चैव, देवी नारायण मिया ।
तत्र मित्र न वस्तव्य, यत्रनाऽस्ति चतुष्टयम् ।
ऋण दाताच वैद्यश्च श्रोत्रियः सजला नदी ।
नराणा नापितो धूर्तः पक्षिणा चैव वायसः ।
चतुष्पदा मृगालस्तु, श्वेत भिक्षुस्तपरिवनाम् ।
यौवन न सम्पत्तिः प्रभुत्वमविवेकता ।
एकै कमप्यनर्थाय, किमु यत्र चतुष्टयम् ।
असतुष्टा द्विजा नष्टा, सतुष्टश्च महीपतिः ।
सलज्जां गणिका नष्टा, निर्लज्जाच कुलागना ।

४ चातुर्वर्ण्य मयासृष्टं गुण्य कर्म विभागशः ।

४-२ अचतुर्वर्ण्यो ब्रह्मा द्विसाहुरपरो हरिः ।

अभाल लोचनः शंभुर्भगवान्वादरायणः ।

१-२-३ न गच्छेच्छूद्र चातुष्क, न गच्छेद्वैश्य पंचकम् ।
न गच्छेद्दुग्ध राजानौ, न गच्छेद्ब्राह्मण त्रयम् ।

४ मधुसूतो श्री कृष्ण अरु, सकर्षण अनिरुद्ध ।

चतुर्वर्ण्य मिलि ब्रह्मणे, रूपचारि सम शुद्ध ।

विधि मुख, हरिभुज, वेद, फल, वर्षा अवस्था चार ।
सुरपति, हस्ती दन्त, युग त्यों आश्रम निर्धार ॥

मुनि समुम्हहिं जन मुदित मन, मज्जहिं अति अनुराग ।
लहहिं चार फल अछत तनु, साधु समाज प्रयाग ।

वंदउ चारिउ वेद, भव वारिधि बोहित सरिस
जिनहिं न सपनेउ खेद, वरणात रघुनर भिषद वश ।

सुठि सुन्दर संवाद वर, विरचउं बुद्धि विचारि ।
तेइ यह पावन सुभगसर, घाट मनोहर चारि ॥

राभनक्त जग चारि प्रकारा, सुकृती चारिउ अनय उदारा ।

चारिउ शील स्व गुण गामा, तदपि अभिक सुरसागर रासा ।

जाकी सहज श्वास श्रुति चारी, सो हरि पद यह कौतुक भारी ।

पुनि चरणन मेले सुत चारी, रामदेखि मुनि विरति विसारी ।

चौथे पन पायउ सुत चारी, विम वचन नहि कहेउ विचारी ।

चिरजीवहु सुत चारि, चक्रवर्त्ति दशरत्य के ।

धीरज धर्म मित्र अरु नारी, आपद काल परखिये चारी ।

मुदित अवधपति सकल सुत, वधुन समेत निहारि ।

जनु पाये महिपाल मणि, क्रियन सहित फल चारि ।

चारि पदारथ करतल ताके, भिय पितु मातु प्राण समजाके ।

जग पतिव्रता चारि विधि अहर्ही, वेद पुराण सन्त अस्त कहर्ही ।

अनुज वधू भगिनी सुत नारी, सुन शठ ये कन्या सम चारी ।

इनहिं कुदृष्टि बिलौके जोई, ताहि बधे कछु पाप न होई ।

तौ पर नारि ललाट गुसाई, तजहु चौथ चदा की नाई ।

सेवरु शठ नृप लुफणु कुनारी, कपथी मित्र शत्रु समचारी ।

तानु मुकुट तुम चारि चलाये, ऊहहु तात रुनी विधि पाये ।

कहा जालि सुत मुनहु खरारी, मुकुट न हार्हि भूप गुण चारी ।

लंका बका चारिहु द्वारा, केंडि विधि लाधिय करहु विचारा ।

एरु प्रोर चारि वेद, एरु प्रोर चातुरी ।

चारि दिना की चाँदनी, फेर अधारी रात ।

✓भाद्रो सुदी चौथ को लख्योरी मृग अरु यातें, भूठहु कलंक मोर्हि
लागियो चहतु है ।

नरनि नीच की अति दुखदाई, जिमि अकुश वनु उरग विलाई ।

साँचहि ताको न होत भलो, जु न मानत है कहि चार जने की ।

अप्रधेश के बालक चारि सदा, तुलसी मन भन्दिर में बिहरैं ।

चोण्दार चाकर चमू पति चक्कर दार, मर्दिर मतगये तमांशे चारि दिन के ।

पान पुरानो धी नयो, अरु कुलवती नार ।

चौथे पीठि तुरग की, स्वर्ग निगानी चारि ।

✓वृन्दावन सों जन नहीं, नन्द गाव से गाम ।

बशी घट से बट नहीं, कृष्ण नाव से नाम ॥

रास बिलासी घट घट वासी, अरज सुनैया तुम्हीं तो हो ।

चार जुगनमें नाम सुना है, कृष्ण कन्हैया तुम्हीं तो हो ।

✓अवध बिलासी शिव द्विय वासी, अरज सुनैया तुम्हीं तो हो ।

चार जुगन में नाम सुना है, राम रमैया तुम्हीं तो हो ॥

✓रावरी है हौहार द्विज, क्षत्रि दशहरा होय ।

बीप मास्त्रिका बैश्य की, शूद्र शोलिका जोय ॥

अंतर अंगुरी चारिको साच भूठ में होय, सब माने देखी भई,
न माने कोय ।

चारि जने चारिहू दिसातैं चारों कोन गहि मेश को श्लाय के
तो उखरिजाय ।

आखैं चार, जी में प्यार ।

इय गयरघ पदचर सहित, सेना के चतुरंग ।

कोविद कवीशन को कृष्ण मानि भेट देत, अंगीकार कीजे
चाँर सुदामा के ।

चारि चारि दिना को चवाव चाहे कोऊ करै अत लुटि जैहै
पूतरी बरात की ।

केशवदास के भाल लिख्यो विधि रंऊ को अक बनाय रँवाच्यो ।
धुवे नहि छूटो छुटै बहु तीरथ जाय के नीर पखाच्यो । ह्वै गयो
राव तवै जब वीर बली नृप नाथ निहाच्यो । भुलि गयो जम
रचना चतुरानन वाय रसो मुख चाच्यो ॥

४-१ राजा चंचल होय मुल्क को सर करि ल्यावै । पडित चंचल होय
उत्तर दै आयै । हाथी चंचल होय समर में सूड़ि उठावै । घांटा च
होय भूपटि मैदान दिखावै । ये चारो चंचल भले राजा प
गजतुरी । बैताल कहै विक्रम सुनो एक नारि चंचल पुरी ॥

४-५ विष्णु चारि भुज विधि मुख चारी,
विकट वेप मुख पंच पुरारी ॥

४-६-२ चौबे छब्ये होनगे, आये दूबे होय ।

४-८४ आकर चार लाख चौरासी, जात जीव नभ जल थल वाली ।

(५)

५ पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्त धनञ्जयः ।

श्रापुः धरैव वित्तच, विद्या निग्रह मेवच
पचेतानिहि सृष्टपते, गर्भस्थस्यैव देहिनः ।

शामाता जठरं जाया जात वेदो जलाशयः
पूरिता नैव पूर्यन्ते, जकाराः पच दुर्भराः ।

जननी जन्म भूमिश्च, जान्दवीच जनर्दिनः
जनकाः पचमश्चैव, जहाराः पच दुर्लभाः ।

देशाटने पंडित मित्रनाच, वारागना राज सभा प्रवेशः
अनेक शास्त्राणि त्रिलोक्तानि, चातुर्य मूलानि भवति पच ।

अरिन्दमशोरुच चृतच नव मल्लिका ।
नीलो त्यलच पचेते, पच वाणस्य सायकाः ।

अहल्या द्रौपदी तारा, कुती मन्दोदरी तथा
पच कन्या स्मरेन्नित्य, महा पातक नाशनम् ।

तिथि वारश्च नक्षत्र, योगः करण मेवच
पंचागस्य फल बुद्ध्या, गमा स्नान फलं लभेत् ।

सर्गश्च प्रति सर्गश्च, वंशो मन्वन्तगामिश्च
वशानु चरितचैव, पुराण पच लक्षणम् ।

मन्त्रमासतथामत्स्यो मुद्रामैथुन मेवच
मकार पचक देवि ! देवा नामपि दुर्लभाः । (धामतत्र)

पचभिः सह गन्तव्य स्यातव्य पचभिः सह
पचभिः सह वक्तव्य न दुःख पचभिः सह ।

काकचेष्टा वकोध्यानं श्वान निद्रातथैवच
अत्याहारी गृहत्यागी त्रियार्थी पचलक्षणम् ।

सा वि त्वपचधावूहि पतिर्देहीति व्याकुला
पचेन्द्राश्च हरेरंशा भविष्यन्ति प्रियास्तव ।

पंचभिः कायिता कुती तद्वधूरथ पचभिः
सर्ती नदति लोकोऽव यशः पुण्यै रवाप्यते ।

धनिकः श्रोत्रियो राजा, नदी वैद्यस्तु पचमः
पंच यज्ञ न विद्यन्ते न तत्र दिवसं वसेत् ।

✓ राज पत्नी गुरोः पत्नी, सिद्ध पत्नी तथैव च
पत्नी मातास्वमाताच पचैता मातरः स्मृताः ।

✓ शनैः पन्थाः शनैः कथा शनैः पर्वत मस्तके ।
शनैर्विद्या शनैर्विचं पचैतानि शनैः शनैः ।

✓ जनिता चोपनेताच यश्च विद्यां प्रयच्छति
अथ दाता भय ज्ञाता पचैते पितरः स्मृताः ।

✓ ४-७ } भारतः पचमो वेदः सुपुत्रः सप्तमोरसः
१०-१५ } दाता पचदश रत्न, जामाता दशमो ब्रह्मः ।

✓ ५-१०-१६ लास्यैत्यं च वर्णाणि दश वर्णाणिताइयेत्
मासेतु षोडशे वषे पुत्रे मित्र वदाचरेत्

५-१०० धर्मैः साकं निरोधेन, वषं पचोत्तर शतम्
१०५ } परस्पर विरोधेन, षण् पंचचत्ते शतम् ।
अरभाकरि विरोधेन, वष पंच क्षमको
परैः सह विरोधेन वष पचाधिक शतम् ।

५-१० } शकृद पच हस्तेन दश हस्तेन वाजिनम्
१००० } इप्ती हस्त सदक्षेण देश त्यागेन दुर्जनः ।

५ पाण्डव, शिष्युख, भूत, गो, गव्य कन्यका, प्राण्य ।
महापाप, गति, वर्ग त्रयो, पच यज्ञ अरु वाण्य ॥

बौल गँवार शूद्र पशु नारी, सकल ताड़ना के अधिकारी ।

तुलसी या ससार में, पच रतन हैं सार ।

साधु मित्रान अरु इति अज्ञान, क्यावान उपकार

मदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहै गणेश ।

पाच देव रक्षा करे, ब्रह्मा विष्णु महेश ।

पंच शब्द ध्वनि मंगल नाना, पठ पावडे परहिं विधि नाना ।

पंच रुहे शिव सनी विवाही, पुनि अश्वरेरि मरादन ताही ।

पंच कवल करि जेवन लागे, गारि गान सुनि अनि अनुगमे ।

अगहन की सित पचभी, वृषभ लग्न भृगुवार ।

सुखद रामय गोधूलिका, राम विवाह विचार । ✓

तडा कौरवा मेरे बैरी, धरि दौ पच भतारु नाम (द्रौपदी)

मां पांचहिं मत लागै नीका, ऊरहु इधिं हिय रामहिं नीका ।

है प्रभु परम मनोहर दाऊ, पावन पचप्री तेहि नाऊ ।

वनिधरु सखरच ठकुरक हीन, वैशक पूत व्याधि नहीं चीन ।

पढित चुप चुप विसया मूल, कहै घाय पाचौ घर मूल ।

पाच पच मिलि कीजे काज, हारे जीते श्राय न लाज ।

गिरी चिरोजी दाख पुनि, सुरमा और चढाम ।

मेवा एई पच जे, आवे जग में काम ।

पाच कौर भीतर, तो समै देव पीतर ।

पांचौ अगुरी धी में तर ।

पांचौ अगुरी इरुसी नाहिं ।

पंचन के मुख है परमेश्वर ।

कानि तजै अपने कुलकी तुरफैत मो लीवे की सान चलाने । एकदि देत
दिलासा प्रसन्न हूँ एक सो भोदरी लै घर आने । हैपरमेश्वर पचन में
पर नेक दया उर माभन लावे । नरक परे तिनके पुग्खा परपच करे
अरु पच कटाये

१-२७-३० पाचैः ग्राम पथीसे महुवा, तीस जरस में इमतिक कहुवा ।

(६)

माधुर्यान्तरगेजश्च पदच्छेदस्तु सुस्वरः ॥
 वैयल्य लामायुक्तो पद्गुणैः पाठकोत्तमः ॥

प्रेष्यर्गस्य समग्रस्य, वीर्यस्य यशसः श्रियः ।
 ज्ञानवैराग्य योद्धव पद्याभग इतीङ्गना ॥

अग्निदो गरदशैव, शस्त्रपाणि धेनापहः ।
 क्षेत्रदारापहश्च, पढेते आततायिनः ।

अनिष्टदृष्टिरनादृष्टिः शलभामृगकाः शुक्राः ।
 मत्यासन्नाधराजानः पढेते ईतयः स्मृताः ।

उपाध्यायश्च वैद्यश्च, ऋतु काले वरागना ।
 सूतिका दूतिका नोक्ता, कार्यान्ते तेच शष्पन्त ।

मौन काल दिलम्बश्च, प्रयाण भूमि दर्शनम् ।
 शृङ्खल्यन्य ह्रुती वार्ता, नकारः पद् विधः स्मृतः

उद्यमं साहस नैर्यम्बलस्युद्धिः पराक्रमः
 पढेते यस्य विद्यन्ते, तस्माद्देवोऽपि शङ्कते ।

मस्कृत प्राकृतश्चैव, शौरसेनीच मागधी ।
 पारसीच अप भ्रंशं, भाषा पदकंच लक्षणम् ।

गिक्त पाणिर्न पश्येच्च राजान देवता गुरुम् ।
 देवज्ञ भिपजे मित्र, फलेन फल मादिशेत ।

शुक्रमास स्त्रियोष्टद्धा, वाता र्हेस्तस्यादधि ।
 प्रभाते मेशुननिद्रा, सद्यः प्राणद्वगणिएद् ।

सद्योमास नवान्च, चालास्त्री क्षीरभोजनम् ।
 घृत सुष्योक्क चैव, सद्यः

रा ॥ गीर्घी गिर कन्नी, श्वतो लिखित पाठकः ।
अनर्थज्ञोऽल्पकडीच, पडेते पाठकाधमा ।

सधि विग्रह यानानि सस्थितिः सशयस्तथा ।
द्वैधीभावभ्रूपाना, पद्गुणाः परि कीर्त्तिताः ।

६-४-२ पट कर्णे भिद्यते मंत्रथतुष्करी. स्थिरो भवेत् ।
द्विकर्णस्यच मंत्रस्य ब्रह्माप्यत न गच्छति ।

६ जग जान पट मुख जन्म कर्म प्रताप पुरपारथ महा ।
तिहि हेतु मैं भूपकेतु सुत कर चरित सत्तेपहि कडा ।
कीरति सरित छहू ऋतुरी, समय सुहावनि पावनि भूरी ।
छटे श्रवण यह परत कहानी, नास तुम्हा सत्य मम बानी ।
शारद प्रेरि तासु मति फेरी, मागेभि नाद मास पट केरी ।

ब्रह्मगन्द गगन रुगि, सन कड प्रभु पद श्रीति
जात न जाने दिवस निशि, गये मास पट वीति ।

पट प्रकार तजि अनघ अकामा, सकल अर्कचन शुचि सुख यामा ।

भाड भतीजा भानजा, भाट भिच्छु भुडहार ।
पट भकार को त्यागि के, तुलसी करु वडेहार ॥

पठन्तरा गायत्री जानी ।

माधुरि अक्षर भोज अरु, पदच्छेद स्वर शुद्ध
धीरज लय ये पट गुणानि, कह पाठक गुण बुद्ध ।

शीघ्र राग युत गिर हलदि, केवल पठन उलेख
अनर्थज्ञ स्वर मन्द पट, अत्रगुणा पाठक लेख ।

मीठा खटा चिरपरा, खारा कडवा ग्राहि ।
सहित कसैला स्वाद के, पटरस भोजन माहि ॥

दङ्गन, रस, धृतु, बाहुज्जर, कार्तिकेय मुल, ईति ।

शास्र, राग, त्रिशिरा नयन, भ्रमर चरण सोइ रीति ॥

षम होण, वेदाग, अरु, तर्क इनाई सव जान ।

पट सख्या हित वर्णाती, कदिवर सति प्रमान ॥

छटे छमासे मां नग आपे, आप दिले अरु मोई दिलापै ।

नाम लेत मुई लागत शका, कर्षों सारे सज्जन ना लखिपरा ।

६-५-४ श्री लिखिये पट गुरुन को, पाच स्वामि रिषुचार ।

३-२-१) तन त्रि द्वै शून्य को, एक पुत्र अरु नारि ॥

(७)

७ अयोध्या मथुरा माया, ऋणी काची अर्थाका
दुरी द्वारावती चैत्र, सप्तैता शंक्षरायकाः ।

✓ अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमाश्च विभीषणः
कृपः परशुरामश्च, सप्तैते चिरजीविनः ।

ब्राह्मीच वैश्यामी चैत्री, रौद्री वाराहिकी तथा
कोवेरी चैत्र कौमारी, मातरः सप्त कीर्तिताः ।

आद्रीं माता गुरोः पत्नी, ब्राह्मणी राजपत्निका
गावी धात्री तथा पृथ्वी, सप्तैता मातरः स्मृताः ।

क्षुधित स्तूपित कामी विद्यार्थी कृषिकस्तथा
भाण्डागारी प्रवासीच सप्त सुप्तान्मनोधयेत् ।

अहिर्नृपति शार्दूलौ वरटि बालकस्तथा
परश्वानंच मूर्खंच सप्तसुप्तान्न बोधयेत् ।

सप्तैतानि न पूर्यन्ते पूर्वमाणान्यनेकशः
ब्राह्मणोऽग्निर्मोराजा पयोधिरुदर शुद्धम् ।

मुनि, पताल, रवि तुरंग, स्वर, अग्निशिखा, गिरि, वार ।
द्वीप, सिन्धु, पुरि राज अंग, सप्त कहहु सविचार ॥

सप्त प्रबंध सुभग सोपाना, ज्ञान नयन निरखत मनमाना ।

त्यहि अवसर नारद सहित, श्री ऋषि सप्त समेत ।
सभाचार मुनि तुदिन गिरि, गवने तुरत निकेत ।

सप्त द्वीप भुज उल वश कीन्हा, लै लै दड छोंडि नृप दीन्हा ।

बलि प्राप्त प्रभु बाडेउ, सो तनु वरणि न जाय ।
उभय घरी मह दीन्हा में, सात प्रदक्षिण वाय ।

सप्तावरण भेद करि, जहँ लागि रहि गति घोरि ।
गयो तहा प्रभु भुज निरखि, व्याकुल भयो बहोरि ।

इरु मुश्क खासी पुनस, खैर खून मद पान ।
सात छिपाये ना छिपे, परगट होहि निदान ।

राजा कन्या ज्योतिषी, वैद्य गुरु सुर सिद्ध ।
भरेहाथ इन पै गये, होय कार्य्य सब सिद्ध । ✓

सात भावरी पूरो व्याह ।

सातो सिंधु सातो लोक सातो रिपि है सु लोक सातो रवि घोरे घोरे
देखे न डरात मैं । सातो द्वीप सातो इति काण्डोई करत और सातो
मत रात दिन प्राण है न गात मैं । सातो चिरजीव परराइ उठे बार
वार सातो सुर हाइ २ होत दिन रात मैं । सातहू पताल काल
सबद कराल राम भेदे सात ताल चाल परी सात सात मैं ॥

७-१ सप्त ताल ये कृपा निजाना, वेने सजोई पकरी बाना ।

७-५-१ सात पाच की लाकरी, एक जने का बोझ ।

७ से १० सात मास सत मसा कहावै, आठ मास जीवत नार्ही ।
नवे मास अति रगा-चगा, दस मास बल-तन मारही । ✓

७^१/_२

सजि प्रतीति बहु विध गढ़छोली, अथ साढ़ साती जनु बोली ।

(८)

मृगराजो दृपो नागः कलशो व्यंजन तथा
वैजयन्ती तथा भेरी, दीप इत्यष्ट मगलम् ।

✓ राजा वेश्या यमश्वाग्नि, स्तस्करो वालयाचकौ ।
पर दुःखंन जानाति, अष्टमो ग्राम कटकः ।

मूर्खत्व सुलभं भजस्व कुमते मूर्खस्य चाष्टौ गुणा निश्चिन्तो बहुभोजको
तिष्ठुखरो रात्रिदिवं स्वप्नभाक् । कार्याकार्यविचारणान्धवधिर
मानापमाने समः प्रायेणामयवर्जितो दृढवपुर्मूर्खः सुखं जीवति ।

८-७ अष्ट कुला चल सप्त समुद्रा ब्रह्म पुरंदर दिनकर रुद्राः ।
न त्वं नाहं नायं लोक स्तदपि किमर्थं क्रियते शोकः ॥

८-६-१० अष्ट वर्षा भवेद् गौरी, नववर्षाच रोहिणी ।
दश वर्षा भवेत्कन्या, तत ऊर्ध्वं रजस्वला । ✓

श्री दामा सुखधाम कृष्ण को परम प्राण प्रिय, वसुदामा शुभ नामदाम
मणि मय जाके हिय, सुवल प्रवल परिहास रसिक मंगल मधु मंगल,
तोरु सुखद ब्रज लोक कृष्ण अनुरूप कृष्ण कल, अरजुन पालक गो
वत्स बहु शृषभ वृषभजूथादि पति, हरि जू के आठ सखा सदा
सुमिरत मगल होत अति ।

श्री बल्लभ आचार्य के, चारि शिष्य सुखरास ।

परमानन्दऽरु सूर पुनि, कृष्णार कुंभनदास ।

विठ्ठल नाथ गुसाइ के, प्रथम चतुर्भुजदास ।

छीत स्वामि गोविन्द पुनि, नन्द दास सुखरास । (ब्रज के अष्ट छाप)

अगहन शुक्ला अष्टमी, सेन सहित भगवान ।

उत्तर फाल्गुनि नखत में, लंकाहिं कीन पयान ।

अति सुन्दर है रुक्मिणी, लक्ष्मी को अवतार ।
सग भाना को मान है, जाम्बवती सो प्यार ।
कार्लिंदी नागिन जिती, भद्राजी सो हेत ।
मित वृन्दा अरु लक्ष्मणा, कुलको शोभा देत ।

निररि राम उवि विधि हरखाने, आठहिं नयन जानि पछिताने ।

नारि स्वभाप सत्य ऋवि कहई, अत्रगुण आठ सदा उर रहई ।
साहस अनृत चपलता माया, भय अविवेक अशौच अदाया ।

अष्टा-न्यायी पाणिनि जानो ।

आठों गाठ कुम्भेत ।

आठों पहर काल सिर नाचै ।

भयरस तजभन आठ गण, पिंगल माहिं प्रधान ।

अक्षर आठ अनुष्टुप् पद मे ।

रैन दिन आठों जाम राम राम राम राम,
सीताराम सीताराम सीताराम कहिये ।

गीत ऋवित नाचत पढत, युद्ध वाद् ससुरार ।
अरु अहार व्योहार में, लज्जा आठ निवार ॥

योग अग, वसु, सिद्धि, अहि, विधि श्रुति, दिग्गज, याम ।
अष्ट और बैयाकरण, भापहिं कवि अभिराम ॥

हाली नाली बरदिया, कटकैया कुतवाल ।
ये आठों रक्षा करे, काना चोर छिनाल ॥

✓ पौर के क्रिवार देत घरै सबै गारि देत साधुन को दोष देत प्रीति न
चहत है । मागने को ज्वाप देत बात कहै रोय देत लेत देत भाज
देत ऐसे निवहत हैं । पागहू के बंद देत वारन की गाठ देत
परदनि की काछ देत देतइ रहत हैं । एते पं सर्वाहिं कहैं लाला
कछु देत नाहीं लालाजी तो आठों जाम देतइ रहत हैं ॥

८-२ अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता, अस पर दीन जानकी माता ।

८-२ आठ कनौजी चूल्हा नौ ।

८-१६ } आठ जो रुहे तो आठ मास लों न लागै ठीक फालि, जो रुहे तो
५-१५५० } मास सोरठ चलावई । पाच दिन रुहे पाच बरस द्वितीय देहि
पाख जो रुहे तो लै पचास पहुँचावई । भगत प्रयान जा पै ताहु
पै न त्यागै द्वार आपना लजात फेर बाहु को लनारी । ऐसे
सत्यवादी सरदार है दिवेषा जरा रुहे को परिया तहा जीवत लै
पावई ॥

(६)

२ धन्वन्तरिचक्राङ्ग कामर सिद्ध शकु वेताल भट्ट षट् स्वर्णर कान्दिदासाः
ख्यातो वराहपिरोत्तपतेः सभाया स्वानिपरगचिर्नव विक्रमस्य ।

आयुर्वित्तं गृहच्छिद्रं रहस्यं पत्र प्रौपत्रम् ।
तपोदाना व मानोच नव गोप्यानि काग्येत् ॥

मुक्ता माणिस्य वैदूर्य गोमेदान्वज द्विगो
पवारगं मरकतं, नीलचेति यथा क्रमात् ।

प्रथम शैल पुत्रीति, द्वितीयं ब्रह्मचारिणी
तृतीयं चन्द्र घटेति, कूष्माण्डेति चतुर्थकम्
पंचमं रुद्र यातेति, षष्ठं कात्पायनीतिच
सप्तमं काल रात्रिश्च, अष्टा गौरीति चाष्टमम्
नवमं सिद्धि दात्रीच, नव दुर्गाः प्रकीर्तिताः ।

श्रवणं कीर्तिनि विष्णोः, स्मरणं पाद सेवनम्
अर्चनं मन्दनं दास्यं, सख्य मात्म निवेदनम् । (नवधाभक्ति)

आचारो विनयोविद्या प्रतिष्ठा तीर्थ दर्शनम्
निप्राप्तेतिस्तपोदानं नवधाकृतं लक्षणम् ।

रात्रेन्दुः ऊजरी भगस्तवतमः सीमल जग्यो गुरु
 र्वक्षो जावधरः सचाव निजनिः केतुर्द्धुतो सुदरि
 वास्य कान्यमथ गनैश्चरगतिर्षन्यस्तु साम्योऽपरः
 सात्त्वचेत्कुरुते कृपा भवि तदा सयेनुशुला महाः । (नवग्रह)

अगरन्त्र, निधि, भक्ति, ग्रह, ग्रौर द्रव्य, भूखंड ।
 दुर्गा, नाडी, अक, सह, नव में दोत अखड ॥

नयी नौमनार मधुमासा, अवनपुरी यह चरित प्रकासा ।

नवमी तिथि मधुमास पुनीता, शुक्र पक्ष अभिजित हरि प्रीता ।

तत्र मारीच हृदय अनुमाना, नवदि विरोधे नदि कल्याणा ।

शस्त्री मत्री प्रभु शव धनी, वेद्य यदि कवि मानसगुनी ।

श्रीवृषभानु कुमारि हेतु शृंगार रूपमय, वास हास रस हरे
 मात वधन करुणामय, केशी प्रति अति रौद्र वीर पारोत्सासुर,
 मयद्रावानलपान पियोयीभत्स-वक्त्री ऊर, अति अद्भुत,
 यच्च विरचमृति-शात सतते सोचन्वित,-कहि केशव सेवहु रसिक जन
 नव रस मे व्रज राज नित ।

नवथा भक्ति कहौ तोहि पार्ही, सायगान सुनु धरु मनमाही ।

मारकंड नय सडस पुराना, आदि शक्ति सह हरि गुण गाना ।

मानिक मुक्ता चिद्रमडर, पन्ना पुनि पुत्रगज ।

हीरा नीलक लइसुनी, पिरोजादि नय साज ॥

नय मन तेल न नारि सिंगार ।

गज भग केर लडैया नो गज की है पूछ ।

जगन्नी किलनी नौ मन काजर ।

६-२ नो दो ग्यारा सबसे न्यारा ।

६-२॥ नय दिन चले अडाई कोस ।

६-१३ नव नगरी ना तेरा वाकी ।

६-१३ नव की लकड़ी तेरा खर्व ।

(१०)

१० वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगोल मुद्धिभ्रते ।
दैत्यदारयते वलिछलयते क्षत्रं क्षयं कुर्वते ।
पौलस्त्यजयते हलरुलयते कारुण्यमातन्वते ।
म्लेच्छान् मूर्खयते दशा कृतिहृते कृष्णाय तुभ्यंनमः ॥

मनो मधुकरो मेयो मानिनी मदनो मरुत्
मा मदोमर्कटो मत्स्य मकारा दश चंचलाः ।

लग्ने शुक्रो बुभोयस्य, यस्य केंद्रे वृहस्पतिः
दशमोऽडगारको यस्य, सजात कुल दीपकः ।

सदा वक्रः सदा रूष्टः, सदा पूजामपेक्षते
कन्या राशिस्थितो नित्य, जामाता दशमो ग्रहः । ✓

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं, शौचमिन्द्रिय निग्रहः
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो, दशकं धर्म लक्षणम् ।

काली तारा महा विद्या, षोडशी भुवनेश्वरी
भैरवी छिन्नमस्ताच, विद्या ब्रूमायती तथा ।
वगला सिद्ध विद्याच, मातंगी कमलात्मिका ।
एता दश महा विद्याः, सिद्ध विद्याः प्रकीर्तिताः । ✓

दशरूप समावापी दशवापी समोद्दः
दश हृदसमः पुत्रो दश पुत्र समोद्दुमः ।

एवं दशदिशो रक्षेच्चायुडाशवाहना ।

२ { अनादश गुणं पयः
; पयसोऽष्ट

१०-११ अन्यायोपार्जित द्रव्य, दश वर्षानितिष्ठति
 माते चैका दशे वर्षे, समूलंच दिनश्यति ।

१० प्रभु निमिष महँ रिपु शर निवारि, प्रचारि डारे सायका
 दश दश विशिख उर भाभु मारे, सरुल निशिचर नायका ।
 दश मुख देखि शिरन की वादी, विसरा मरण भई रिस गादी ।
 मारेसि दश दश विशिख उर, परे भूमि सब वीर
 सिंह नाद करि गर्ज तत्र, मेघनाद रणवीर ।
 रहे दसहु दिशि शायक छाई, मानहु मघा मेघ भरिलाई ।
 दिन दश करि रघुपति पद सेवा, तव फिरि चरण देखिहौं देवा ।

मय रस तज भन गल सहित, दश अन्तर इन सोहि ।
 सर्व शास्त्र व्यापित लखौं, विश्व विष्णु सो जोहि ॥

दिन दस आदर पायके, करले आप बखान ।
 जौलो काग सराव पख, तौलग तो सन्मान ॥

०-१ राम राम सब फोड कहै, दशरथ कहै न कोय ।
 टि एक बार दशरथ कहै, कांठि यज्ञ फल होय ॥

-२० हम कुल घालरु सत्य तुम, कुल पालक दशसीस ।
 अधउ बधिर न कहहि अस, श्रवण नयन तव वीस ॥

-२० मैंना ने मैंना कही, मोल भयो दस सीस । ॥
 बकरी ने जो मैं कही, तुरत कटायो सीस ॥ ॥

(११)

११ एका दश रुद्राणामेकागौरीत्य नौचिर्तिमत्ता ।
 राघववृषतव यशसादशापिगोरी कृताहरितः ।
 (दशापि हरितः=दसो दिशा)

✓ एका दशस्ये गोविंदे सर्वेभ्येकादशे स्थिताः
किं कुर्वन्ति ग्रहाः सर्वे, शनिर्गारको गुरुः ।

एका दशैते कथिता रुद्रास्त्रिभुवनेश्वराः ।

हरि दिन कामद गिरि प्रभु आये, समाचार सुर संतन पाये ।

हरि दिन पहुंचे अबज सुमंता, देखि नगर दुख भयो दुरन्ता ।

ग्यारा सहसहिं लिंग पुराना, विविध कथा कर ललित विधाना ।

इक पर एक होत हैं ग्यारा ।

ग्यारा वर्णिक त्रिष्टुप् कहिये ।

एक तो देवैया होय दूसरे रिझैया होय तीसरे सरूपवत सुपर सल
गत । चौथे चतुराई पाचे परखै हमारो गुन छट्ये छलीन साते
सो निवाहै पात । आठे ऐडदार ने निपट निगाइ राखै दस
वज नाही ग्यारेन गरू सुहात । पाखन गुणज्ञ दिग ताही केरहत
मेसे गुण ग्यारहो सजाज मे सराहै जात ।

(१२)

नाबोदक सपं दानं, न तिथि द्वादशी समा ।
न गायत्र्याः परो मत्रो, न मातुः पर देवत्वम् । ✓

नूपुर निछियार्किक्कणी नीवी वन सोय ।

कर सुदरी रुक्मण वलय, वाजू वंद भुज दोय ।

वाजू वंद भुज दोय कंठ श्री दुलरी राजै ।

नासा बेसर सुभग श्रभण ताटक विगजै ।

भगवत वंदा भाल माग मोती गुह ऊपर ।

द्वादश भूषण अग नित्य प्यारी पगनूपुर । (द्वादश भूषण)

द्वादश अक्षर मंत्रवर; जपहिं सहित अनुराग ।

वासुदेव पद पकंहेह, दम्पति मन अति लागे ॥

(ओं नमो भगवते वासुदेवाय)

सुर सैनप उर अधिक उछाहू, विधितें डेवडे लोचन लाहू ।

नींद नारि भोजन परि हरई, वारह वर्ष तासु कर मरई ।

द्वादश दिन वीते मगमाही, पहुंचे जाय जमुन तट पाहीं ।

यह विधि द्वादश वर्ष विताये, पुनि प्रभु पंचवटी पढ़ आये ।

वारा सहस्र केर परमाना, अहै प्रगट ब्रह्माड पुराना ।

वारा वरसे दिछी रहिके, काम क्रियो भरभूजे को ।

चैते गुड वैसाखे तेल, जेठै पैठ अपाढे बेल ।

साउन सागडू भादो मही, कार करेला कातिक दही ।

अगहन जीरा पूसे घना, माहे मिसरी फागुन चना ।

इन वारह कर बचे जो भाई, ता घर वैत्र न सपने जाई ।

(१३)

गाडौ स्वान पुच्छ इरु जुगलों जव देखौ तव टैठी ।

पौ वारा जिनके पड़े, करती मौज बहार । = ६+६+१ (युवा नायक)

मेरे घर कचे पड़े, भये गले के हार । = ६+५+१ (अनभिज्ञ नायक)

मानुष्यं वर प्रश जन्म विभवो दीर्घायुरा रोग्यता ।

सन्मित्र सु सुतः सती प्रियतमा भक्तिश्च नारायणे ।

विद्वन् सुजनत्व मिद्रिय जयः सत्यान्न दानेरति

स्ते पुण्येन विनात्रयो दशगुणाः ससारिणा दुर्लभाः ।

तानूल कटु तिक्त गुप्प मधुरक्षार कपायान्वितम् ।

वातघ्न कफ वारण कृमिहर दुर्गधि निर्नाशनम् ।

वरुत्रस्याभरण विशुद्धि करणं कामाग्नि सद्दीपनम् ।

ताबूलेहि सखे त्रयोदश गुणाः स्वर्गोऽपिते दुर्लभाः ।

वर्ष त्रयोदश भयो प्रवेशा, खर द्रूपण वध रीन रमेशा ।

त्रयोदशी हूढे हनुमाना, पुनि अशोक वन माहि समाजा ।

कुभ निकुभ दैत्य बलवाना, तेरस तक मारे भगवाना ।

देखहु गोजि भुवन दश चारी, रुहँ अस पुरुष कहा अस नारी ।

कातिक बदी चतुर्दशि गारा, शनि के दिन भा प्रगटकुमारा (हनुमानजी)

कह प्रभु मुनु मुधीव हरीसा, पुर न जाउँ दश चार वरीसा ।

चौदह भुवन एक पति होई, भूत द्रोंह तिष्ठै नहि सोई ।

यह जो आवत अचल समाना, चौदह ताड ऊच परमाना (अंगद)

मुनु गिरजा क्रोधानल जाम्, जारै भुवन चारि दश आम् ।

भुजमल जीति लोक वश कीन्हे, चौदह भुवन भोग करि लीन्हे ।

चैत्र शुक्ल चौदश जम आई, मरो दगानन जग दुखदाई ।

कौल काम मग कृपण विमूढा, अति दरिद्र अजसी अति बूढा ।

सदा रोग वग सतत क्रोधी, विष्णु विमुख अति सत विरोधी ।

तन पोषक निन्दक अघ खानी, जीवत शव सम चौदह मानी ।

चौदह दिवस युद्ध करि भारी, बाधि लियो अहिराजप्रचारी (मेघनाद)

चौदा सहसर्हि मत्स्य पुराना, सोड भविष्य जान परमाना ।

रतन मयी नव नारि रमा सम सुन्दर कहिये ।

घृघट हय भू वनुप अमिय विप मद चख पडये ॥

मुख शशि ग्रीवा कम्बु सदा मुखदा मुर तखसी ।

रम्भासी सुकुमारि चतुर अति धन्वन्तरसी ॥

गज गामिनि धनि लेखिये सुरभी सम शुचि शील तन ।

सुरन दृशा वारिधि मथ्यो तिय तन में चौदह रतन ॥

देरी चौदह तें गुनो, ताशर्हि देव घटाय ।

वचे हुए को जोडकर, टिपकी देहु बताय ॥ ✓

ताश के ५२ पद्यों में से यह खोज चाहे जितने ताशा र्भ होसकता है-
किस्ती से कहिये कि उसके हाथ में जितने पद्य हों उनकी तेषा तेषा
दिपकियों की देरिया जितनी वन सकें बनाये जैसे पहिले (६) गदह्य

निकला तो उसपर कोई भी ४ चार ताश के पत्त और रख देन (५) अट्टा निकला तो उसपर कोई भी ५ पांच ताश के पत्ते और रखवे और हाथ में बचे हुए ताशों से और ढेरी न बन सके तो उनको हाथही में रखे रहे यह किया वह आपके बिना देखे गुप्त रीति से करे अब आप पूर्ण कि (१) कितने ताशों से खेला है (२) कितनी ढेरियां हैं और (३) हाथ में कितने ताश बचे हैं बस नीचे के सब ताशों की टिपकियों का योग कहें यथा १५ ताशों से खेला है ३ ढेरी हैं हाथ में २ ताश बचे हैं तो $३ \times १४ = ४२ - १५ = २७ + २ = २९$ टिपकिया हैं टिपकियों के लिये गुलाम की ११, रानी की १२ और राजा की १३ टिपकिया मानो ।

प्रथम असील होय दूजे नैनसील होय तीजे वडो डील होय चौथे चोप ठानेगा । पाचयें प्रवीन होय छठयें छली न होय सातयें सरस आठें ओज्जर आनेगा । कहीं भुवनेस नित नवयें निगाह राखे दसयें दिमाक ग्यारे गुन पहचानेगा । बारहै बिमल चित तेरे तरहदार चौदहै चतुर सो हमारे तई मानेगा ।

(१५)

यसु मुनि यति रिति, मणि गुण निरुरः ।

८+७=१५

वर्ष पंचदश के भगवाना, सीय वर्ष छै की जग जाना

वर्ष पंचदश माहिं सुहाये, विश्वामित्र बुलावन आये ।

पन्द्रह दिवस सग मुनि नाथा, काज सँवारे श्री रघुनाथा ।

शंकर राम रूप अनुरागे, नयन पंचदश अति मिय लागे ।

भये पाररदिन सजत समाजू, तुम सुधि पायहु मोसन आजू ।

परखेहु मोहिं परू परववारा, नहिं आवहु तो जानेहु मारा ।

कहहुं पत्त महें आव न जोई, मोरे कर ताकर बध होई ।

पंद्रह वर्ष लागि हम मागे, एकौ दिन नहि रहिहै आगे । (अभिमन्यु)

पन्द्रा सहसते कछु अधिक, अग्नि पुराण बखान ।

पल पखवारा घड़ी महीना चौघडिया का साल,
जिसको लाला काल कहै फिर उसका क्या अहवाल ।

(१६)

अप्राप्त यौवना नारी, न कामाय न शातये
संप्राप्ते पोडशे वर्षे, गर्दभी चाप्सरायते । ✓

आदौ मज्जन चारु चीर तिलकं नेत्राजनं कुडलम्
नासा मौक्तिक हार मेव कुसुमंलुद्रावली रुचुर्की ।
अगे चन्दन लेप कुकुम वरं कैयूरक नूपुर
ताम्बूल कर करुण चतुरता शृगार रूप स्त्रियः ।
आसन स्वागतं पाद्यमर्घ्यमाचमनीयकम् ।
मधुपर्काचमस्नानं वसनाभरणानिच ।
गंध पुष्पे धूपदीपौनैवेद्य वंदन तथा ।

भूम्यासन जल वस्त्र प्रदीपोऽन्नं ततः परम् ।
ताम्बूलच्छत्र गन्धाश्च माल्यं फलमतः परम् ।
शय्याच पादुकागावः काञ्चनं रजत तथा ।
दानमेतत् पोडशक प्रेत मुद्दिश्य दीयते ।

चारे चतुष्पद चारि खग, चारि फूल फल चार । ✓
राधा जू के तन लसे, ये सोरह शृगार ।
हय घूँघट गज गामिनी, केहरि लक समान ।
मृगलोचनि फूली फिर, जे पशु लच्छन जान ।
भय भोहें गुर कोकिला, रुठ कपोत सुधार ।
खजन कैसी चपलता, पछिन लच्छन चार ।
कर कमलहु चपक वरणा, सोन फूल अनुहार ।
दुपहरिया सी भिलमिली, फूलन लच्छन चार ।
अधर विन दाड़िम दरान, कदलि जय परमान ।
श्री फल कैसी तरणाता, जे फल लच्छन जान ।

शुचिता शील सनेह गति, चितवनि बोलनि हासि ।
 कच सूयन श्रीवन्त शुभ, भाल तिलक सुखरासि ।
 भाल तिलक सुखरास, दृगन अजन अति सोहै ।
 धीरी नदन सुदेश चिनुक, मसरुन मन मोहै ।
 या विधि मेंहरी अगाराग, भगवत मन रुचिता ।
 ये सोरह शृंगार मुख्य तामे वर शुचिता ।

जहँ तहँ यूय यूय मिलि भामिनि, सजि नव सप्त सकल धुति दामिनि ।

चलि ल्याइ सीतहिं सखी सांदर सजि सुमंगल भामिनी ।
 नव सप्त साजे सुन्दरी सब मन्त कुंजर गामिनी ।

राक्षापति पोड़श उगहिं, तारागण समुदाय ।
 सरुल गिरिन दब लाइये, रवि विनु राति न जाय ।

सोरह गोथी चौसर केरी, सोरह कौड़ी ज्वारिन केरी ।

सोरह कला जान चौपाई ।

पोड़श कोश कोट जहु ओरा, मणि माणिक लागे नहिं थोरा (नरातक)

१६-३१ संवत सोरा सौं डकतीसा, करौं कथा हरि पद धरि सीसा ।

१६-३२ सोरह योजन मुख तेहिं डयऊ, तुरत पवनसुत वत्तिस भयऊ ।

१६-८० सवत सोरा सौं असी, असी गंग के तीर ।

श्रावण शुक्ल सप्तमी, तुलसी तज्यो शरीर ।

(१७)

रसै रुद्रै म्छिन्ना यमनसभलागः शिवरिणी ।

(यमनसभ लग) ६+११=१७

ततः सप्तदशे जातः सत्य वत्या पराशरात्,
 चक्रवेद तरोः शाखा दृष्ट्वापुसाञ्ज्यभेजसः ।

सत्रा सहस्रि कूर्म पुराना, सुनत श्रवण मुद मंगल नाना ।

१७-१०० सत्रह योजन जाघ लँवाई, शत योजन तनु वरणि न जाई (कुभकर्ण)

(१८)

अष्टादश पुराणानि कृत्वा सत्यवती मुतः ।

अद्वैतामृत वर्षिणी भगवती मष्टादशा ध्यायिनी
मवत्वामनु सदधामि भगवद् गीते भवद्वेषिणीम् ।

१८-२ अष्टादश पुराणानां व्यासस्य वचन द्वयम्
परोपकारः पुण्याय पापाय पर पीडनम् ।

१८ अठरा सहस्र भागवत जानो, हिन्दुन को सर्वस यह मानो ।

रोमावलि अष्टादश भारा, अस्थि शैल सरिता नसजारा ।

वैवर्तेहु जो ब्रह्म पुराना, अठरा सहस्र केर परमाना ।

१८-१० वर्ष अठारा दिन दश जाही, वेइ ग्रहण पुनि पुनि परि जाही । ✓

१८-२७ वर्ष अठारा की सिया, सत्ताटस के राम ।
कीर्न्ही मन अभिलाष तन, करनोहे मुर काम ॥

१८-१०० दिना अठारा अस रण रन्त्रऊ, शत पाथव महेँ एकन वन्त्रऊ ।

(१९)

सूर्याश्विर्षसजस्तता समुरवः शार्दूल विक्रीडितम् ।

(मस जस ततग) १२+७=१९

इक नव मिलि उन्नीस है, ताके दश रहि जात
दश के पुनि एकहि रहत, एकहि एक लखात ।

१९ उन्नीस, १+९=१०, १+०=१ ईसर ।

उन्निस् वर्षिणू अति धृति वृत्ता ।

उन्निस् सहस्रहिं गरुड पुराना, ज्ञान तत्त्व कर ललित विधाना ।

✓ सम्वत में चौ जोरि कै भाग देव उन्नीस ।

शेष अक सो जानिये अधि मासै जगदीस ।

ढोय कार त्रय चैत्र पुनि, पच नभ, नभ अठ जेठ ।

शिव विसारव तेरा भदैं, सोराऽसाढ़ सु ठेठ ।

अठरा रुवहं फाल्गुन, मास लौंद है आठ ।

✓ शेष लौंद नहिं क्षय विना, जिनके अड़वड़ ठाठ ।

२ वचै तो कार

११ वचै तो वैसाख

३—चैत्र

१३—भाद्रपद

५—श्रावण

१६—आषाढ़

० वां ढ-जेष्ठ

१८—फाल्गुन (कालप्रबोध)

(२०)

सोनर न्या दशरूप, वालि वधेउ जिहि एक शर ।

वीसहु लोचन अर, भिग तव जन्म कुजाति जड़ ।

वोले विकट सुनह युवराजू, योजन वीस उलंघहु आजू ।

कहै कवि हेम हम नीके कै विचारि देख्यो, मेरे भाये वीसों विस्वा,
दामही में राम हँ ।

मम भुज सागर बल जलपूरा, जहँ घूड़े बहु सुरनर शूरा ।

नीस पयोधि अगाध अपारा, को अस वीर जो पाइहि पारा ।

२०-१० वीस भुजा दश मस्तरु जाही, आतुर चला जात मग माही ।

(२१)

तव एकविंशति नेर मै विन छत्र की पृथिवी रची (रामचंद्रिका)

इहिस वरिणिक प्रहती वृत्ता ।

(२२)

सप्त भकार युतैक गुरु र्गदितेय मुटारतरा मदिरा ।

७ भगण १ गुरु=२२

बाइस वरिणिक ब्राह्मति वृत्ता ।

बाइस योजन गह्व अजाना (कुंभकरण)

सनै धान बाईस पसेरी ।

बाइसगढ ऊदनि ने जीते, तेइस विजय कीन मलिखान (सिरसा)

(२२^१)

अटकल पच्चू साढे बाइस ।

(२३)

अक्षोहिणिय तेइस कइ वारा, जरासंध लै हरि सनहारा ।

तेइस सहसहुं विष्णु पुराना, श्रवण किये मुद मंगल नाना ।

तेइस वरिणिक विकृति वृत्ता ।

(२४)

सगणैरिह वृत्तवर वसुभिः किलदुर्मिल युक्त मिदं कविभिः ।

= सगण=२४ वर्ण

अवतारहुं चौविस कहे, निष्ठाहू चौवीस ।

चौविस अर्जुद इनकर यूहा, सहस वृन्द सम कोटि समूहा ।

(१ अर्जुद=१० कोटि)

(१ वृन्द=१ अर्जु)

चतुर्विंशदिन युद्ध महाना, अब वृष कहौं सुनौं दै काना (भीष्म, परशुराम)

दत्तात्रय गुरु चौबिस कीन्हे ।

शिव पुराण चौबीस हजार, स्वइ वाराह केर निरधारा ।

चौबिस वर्णिक संस्कृति वृत्ता ।

रोला की चौबीस, कला यति शंकर तेरा ।

(२५)

पचिस वर्णिक अतिकृति वृत्ता ।

पंच तत्त्वसों प्रकृति पचीसा, सिरजनहार जान जगदीशा ।

नारदीय पचीस हजार, भक्ति तत्त्व दरशावनहारा ।

मोसी कन्या लाख पचीसा, ऐसे वचन न कहौ मुनीसा ।

सो शर अर्जुन काटि निवारे, बाण पचीस शल्य उर मारे ।

(२६)

छब्बिस वर्णननि ते अधिक, दंडक वृत्त प्रमान ।

छब्बिस वर्णिक उत्कृति वृत्ता ।

(२७)

वर्ष सताइस में रघुनाथा, वन गमने सिय लछमन साथा ।

लाख चौरासी योनि में, धावर सत्ताईस ।

नक्षत्रहु अरु योगहु, है पुनि सत्ताईस ।

भीम जरासंधहि हन्यो, लडि सत्ताइस घोस ।

(२८-२९)

अभिजित अंतर्गत सहित, उड़गण अठ्ठाईस ।

अष्टादश दिन फरवरी, चौथ वर्ष उन्तीस ।

है अष्ट विंशति मत्त द्वै वसु भासु कर हरिगीतिका ।

जाम्बवत अरु कृष्ण सो, अष्टादश दिन भो युद्ध ।

जाम्बवती कृष्णहिं दई, बुद्धि भई जय शुद्ध ॥

(३०)

मास दिवस कर दिवस भा, मर्म न जानै कोय ।

रथ समेत रवि थाकेउ, निशा कवन त्रिधि होय ।

मास दिवस तेह रहेउ खरारी, निसरी रुधिर धार तहँ भारी ।

मास दिवस महँ कहा न माना, तो भैं मारय कादि कृपाना ।

पोला विकट सुनहु युवराज, योजन तीस उलपहु आज ।

तीस तीर रघुजीर पेंवारे, भुजन समेत सीस महि पारे ।

तीस दिवस अमेल के, तीसठि जानो जून । ✓

सपट्टेम्बर नोवेंबरहु, जान तीन पर सून ।

तीसमारखां नाम, गाच्यो इरू मूसो नही ।

(३१)

आरुपेंड धनु श्रवण लगि, छाडे सर इरूतीस ।

रघुनायक सायक चले, मानहु काल फणीस ।

इकतिस दिनकी जनवरी, मार्च मई जूलाय, पुनि अगस्त अक्टूबरहु ✓

दिसबरहु सुखदाय ।

आठ आठ आठ पुनि, सात परगुनि सजि, रचिये कवित्त इमि,

गुरुहिं सुमिरिके । ✓

८+८+८+७=३१

बसु बसु तियि सानंद सबैया, चारौ वीर पँवारो गाव ।

(३२)

तुरत पवनसुत वत्तिस भयऊ ।

वत्तिस लक्षाण शुभकहे, कीर्ति बढ़ावन हार ।

सुनहु पवन सुत रहनि हमारी, जिमि दशनन्हि मँह जीभ विचारी (३२ दांत)

परी बतीसों दात विच, जीभ विचारी एक ।

पैसा रहो न पास में रहे बतीसी काढ़ि ।

दस बसु बसु संगी जन रस रंगी छंद त्रिभंगी गंत भलो ।

(३३)

तैतिस कोटि देव सुमिरन फर, कहिहौं वीर पँवारो गाय ।

तैतिस वशिंऊ देव घनाक्षरि ।

(३४)

चौतिस योजन की चकलाई, अति अकार तन चितै न जाई (कुंभकरण)

(३५)

धैतिस की कहनूति कहीजे, तीन पाच हमसों नहिं कीजे ।

(३६)

भोर बस तुम कीन सँहारा, कृष्ण लीजिये शाप हमारा ।

त्रिंशत पद संमत यदुराई, तव कुल आपस मई कटिजाई । (गाथारी)

सच जावन में नाउ छतीसा ।

छत्तिस व्यजन उनी रसोई ।

राग छतीसौ गावन लागे, जिनमें उठै धीर बैताल । (माडो)

रासो पृथ्वीराज भे, छती नस छतीस ।

सिपद्गरी के छत्तिस फ़न ।

३६-६३ जगते रहु छत्तीस ह्वै (रागवरण छत्तीन)
(३६) (६३)

(३७)

द्वय पर सात विराजत कैसे, त्रिकालज्ञ मुनि नायक जैसे ।

(३८)

तीन आठ यो भेद लखावत, तीनहु ताप योग बिनसावत ।

अष्ट निगशर पूर तुषीरा, धरे स्यन्दनहिं सो रघुधीरा । (अतिक्रम्य)

(३९)

तीनरु नौ यो कहै विचारी, तीनहु काल भक्ति हरि प्यारी ।

(४०)

नील कहा चालिस मैं जाऊ, आगे परत मोर नहिं पाऊ ।

जाड़ा चिड़ा दिन चालीस, धन के पद्रा मरु पचीस । ✓

४०-१३ चालिस योजन तेरस वासर, रच्यो सेतु नल नील उजागर ।

४० वरुनी पाव, गाय दुइ सेर, भैंस दूध देती पच सेर ।

चालिस पशु मिलि चालिस सेर, भेद पशुन के कहु विन देर ॥

तीन भैंस नव गाय है, बकरी अठ्ठाईस ।
 चालिस पशु मिलि देत हे, दूध सेर चालीस ॥

$$३ भैंस \times ५ सेर = १५ सेर$$

$$६ गाय \times २ सेर = १२ सेर$$

$$२ = बकरी \times १ पाव = ७ सेर$$

४०

४०

(४१)

४१-३२ इकतालिसवें नर्प में, रामचन्द्र भगवान ।

आयुः वत्तिस वर्ष की, जनरुसुता गुणखान ॥ (राजतिलक)

(४२)

कोटि बियालिस तमीचर, नारातक कर घात
 राम कृपा बल हति खलनि, कपिन विताई रात ।

घाट बयालिस हम छुट्येहै, मरिहैं फौज पियौरा क्यार । (नटियावितवै)

(४३)

चौ पर तीन विराजत जैसे, चारि वेद त्रय कालहुं जैसे ।

(४४)

चारि चारि के कहिये भेदा, चारि वेद चारहि उपवेदा ।

(४५)

चारि पाच ये कहत पुकारे, चारि वेद प्राणहुं ते प्यारे ।

(४६)

चौ पर छै भेदाहि कहु भोजा, चारि वेद छै अग पुनीता ।

(४७)

चारि सात के सुनहुं विचारा, चारि वेद ऋषि जगत ग

(४८)

दोहा के सत्र होत है, मात्रा अड़तालीस,
दो दल तामें होत है, प्रतिपद ३ ल चौबीस ।

(४९)

हरि प्रेरित त्यहि अवसर, वही पयन उनचास,
अट्टहास करि गर्जही, कपि वट्टि लाग अकास ।

(५०)

लघु सवत जीवन पचदसा, कल्पान्त न नाश गुमान असा ।

(५१)

पांच एक को सगम कैसे, पच प्राण ईश्वर में जैसे ।

(५२)

सबतें लघु है मांगिवो, यामे फेर न सार ।
बलि पै जाचतही भये, वावन कर करतार ।

वावन तोले पात्र रती ।

लका में जो छोट है, वावन गज को सोड ।

ताश माहि पत्ते है वावन । (देखो अक १४)

घरस माहि वाचन सप्ताह ।

देखी तेरी कालपी, वावन पुरा उजार ।

वाचनगढ़ के राजा जीते, जीते बडे बड़े सरदार ॥ (चदेल)

(५३)

पांचरु त्रय इरु सग विराजत, पच यज्ञ त्रय ताप नसावत ।

(५४)

पाच चार हें बड्डे सयाने, पाच देव चारिहु युग माने ।
उपगीती हें चौवन मत्ता ।

(५५)

पचवन सहसहि पत्र पुराना, पञ्जनाभि लीला गुण गाना ।
पांच पांच पर राजर्हि कैसे, पंचायतन राम शिव जैसे ।

(५६)

छप्पन भोगी हें नारायण, तिनकी कथा करिय पारायण ।
छप्पन कोटि यादवा जैते, कृष्ण भक्त सब जानिय तेते ।
छप्पन कोटि कपिन लै साथ्या, रुरत प्रणाम चलेउ कपि नाथा । (श्रीखंड)
पट पंचाशिका ग्रंथ हिय भावत, प्रश्नोत्तर ज्योतिष प्रगटावत ।
छप्पन छुरिया हनि हनि वाधै औ गुजराती वांधि कटार ।

(५७)

बुधजन कहत सुनहु खग राजा, अयुत सतावन बाजर्हि बाजा ।
आर्या की सत्तावन मत्ता ।

✓ इसवी सन सत्तावन जोरे, संवत विक्रम लहिये । ✓
(ई० १८६८+५७=संवत् १९२५)

(५८)

पांच आठ की छवि अति छाजी, पच देव योगर्हि तें राजी ।

(५६)

पाचरु नोते शिखा लीजे, प्रंचदेव की भक्ती कीजे ।

(६०)

६०-१-६ पष्टि योजन विस्तीर्णा लंबोष्ठी दीर्घ नासिका ।
एक वक्रा नव भुजा सक्रातिः पुरुषाकृतिः ॥

६० बोले नल दोउ भुजा उठाई, योजन साठि मोरि गति भाई ।
पष्टि वाण भीषम उर मारा, मानहु वज्रपात फटकारा ।
सवत्सरहु साठ प्रमाणो, प्रभव विभव इत्यादिक जानो ।
साठा सो पाठा ।

(६१)

छै पर एक विराजत कैसे, पट दर्शन में ईश्वर जैसे ।

(६२)

छै पर दो शोभा के धाम, पट रिपु नाशक सीताराम ।

(६३)

रामचरण छत्तीन, जगत रु छत्तीस छै ।
६३ ३३

शुद्ध वर्ण मालाडि में, त्रेसठ वर्ण गुजान ।

(६४)

तंत्र कला अरु योगिनी, चासठ जान प्रमान ।
शतरजहु चोमठ घरा, जानत सब गुजान ।

भयो भयंकर खेत अति, अर्जुन कीन मसान ।
नाचत चौंसठि योगनी, करि करि शोणित पान ।

चौंसठ बुर्ज चारि नव खंडी, जिन पै बैठि स्वर्ग दिखराय (सिरसा)

(६५)

छै पर पांच विराजत हैं कस, पट कर्मन में पंच देव जस ।

(६६)

छै छै संगम कही सुहावन, पट अतु में पट रस मन भावन ।

(६७)

छै पर सात विराजत कैसे, पट दर्शन में अपि गण जैसे ।

(६८)

छै आठहं के कही विधाना, पट कर्मन में योग प्रधाना ।

अड़सठ तीरथ करके आई, तचना गइ तुमड़ी कखाई ।

(६९)

छै पर नौ राजत हैं कैसे, रस पर काव्य रसामृत जैसे ।

(७०)

घरणी धसकि धरन जब उडेऊ, सत्तरि योजन ते पुनि फिरेऊ (कुमुद)

सत्तर चूहे खाप के विलारी चली हज्ज को ।

सख बजे सत्तर बला, घरतें भागै दूर ।

सत्तरगज वा पच नने पग, कहियत इक एकइ के लगभग ।

अड़तालिस सौ चालिस गजवा, नौ सहसा पग होत घुरव्या ।

(७१)

चतुर्गुणी इक दिव्य भनंत, दिव्य इकत्तर कर मन्वंत । (मन्वंतर)
छप्पय के सत्र भेद भीत इकहत्तर लेखो ।

(७२)

लड़े बहत्तर दिन समामा, वानेर राक्षस विन विश्रामा ।
सूप तो सूप भला चलनी कहँ देखहु जामें बहत्तर छेद हैं ।

(७३)

सात तीन राजत हैं कैसे, मुनि गंगा पूज्य त्रिकालहु जैसे ।

(७४)

सातऽव चार विराजत कैसे, ऋषिगण वेद प्रचारक जैसे ।
सार्ध चहोत्तर शपथ पुरानी, खोलै पत्र न दसर मानी । ४७॥

(७५)

सातऽव पाच विराजत कैसे, सप्त स्वरो में पंचम जैसे ।

(७६)

सातऽव छैं को करिय बखाना, सप्त स्वरनि छैं राग प्रधाना ।

(७७)

सात सात के फरिय विभाग, सात द्वीप सत पुरी उदारा ।

(७८)

सात धात यह कहत पुकारी, ऋषि गण अष्ट सिद्धि अधिकारी ।

शके माहिं अठहत्तर जोरे, सन् इसवी पहिचानो ।

शक १८२०+७८=इसवी १८९८ । ✓

(७६)

सातऽरु नौ को संगम कैसे, ऋषिगण भक्ति प्रवर्तक जैसे ।

(८०)

आठ-शून्य-महिमा नहिं कोई योगेश्वर, सो-बढ़ो न कोई (श्री कृष्ण)

असी वाण मारेंहु हनुमानहिं, शर अनेक घाले भगवानहिं ।

(८१)

सहस्र इकासी एक सौ, ललित-स्कंद पुरान ।

आठ एक-यह भेद बतावत, योगहिं ब्रह्म रूप दरसावत ।

जब नव-गुणित-होत इक्यासी, तदपि-आठ इक नव मुख सुसी ।

अगुण सगुण इमि भेद न भाई, तजि संशय भजिये रघुराई ।

(८२)

आठ दोग्य है अंक ललामा, अष्ट सिद्धि दाता सिय रामा ।

(८३)

आठ तीन कर मर्म महाना, अष्ट योग त्रयलोक प्राना ।

(८४)

त्राकर चारि लाख चौरासी, जात जीव नभ जल थल वासी ।

वानी श्री वैष्णव चोगासी, जम महें-मगदी-कदा-लतासी ।

चौगसी ब्रासन हें जेते, योग त्रुग सभ जानिय तेते ।

त्रज चारासी नोस की, मडिमा परम पुनीत ।

फेरि साडियन को मजयायो, गत चोरासी की भनकार । (बुवाग बुद्ध)

द्वैश्य वसी कीरत, खासी, प्रति गढ़ रहे गाव चोगसी ।

(८५)

आठ पाच यो कहत पुकारे, योग पच प्राणन स्वकारे ।

(८६)

रौरव आदिक नरक की, सख्या छचासी जान ।

(८७)

दधि मुख कइ अम्पी उपरता, योजन सात जाउ तलवन्ता ।

(८८)

मृत कथो हरि चरित पुनीत, सगस ब्रडासी कृपि सन मीता ।

(८९)

आउक नोको मर्ष प्रदाना, योग माई हरि भक्ति प्रवना ।

(९०)

नव पर रूप शून्य को कैसे, नव के पर अरु नहिं जैसे ।

(९१)

नव पर एक कहत अस देरी, करिच भक्ति इक ईश्वर केरी ।

(६२)

नव पर दोकर कहहु विधाना, नव रस सिया राम गुण गाना ।

(६३)

नव पर त्रय कर सुनहु हवाला, दुर्गा पूजा शुभ त्रयकाला ।

(६४)

नव पर चारि कहत अस वाता, भक्तिहि चारि पदारथ दाता ।

(६५)

नव पर पांच विराजत कैसे, भक्ती पचदेव की जैसे ।

(६६)

चौसर पछा घर चौबीसा, छियानवे चारो में दीसा ।

(६७)

नव सातहु कर कीजे गायन, नव रस सप्त काड रामायन ।

(६८)

नव अरु अठ सेंवारत काजा, भक्ति योग को जुरो समाजा ।

(६९)

नव पर नव की शोभा कैसी, रघुवर भक्ति परम निधि जैसी ।

लोभहि में सय जन्म गो, सरो न एको काम ।

पड़े फेर निन्याजने, माया मिली न-राम ।

(१००)

१००-३०० अथ शब्द शतं माघे, भारवौच शत त्रयम् ।

कालिदागेन गण्यन्ते, क्रयिरेकः शतं जयः ।

(१००-१०००) शतेषु जायते शूरः सहस्रेषु च पठितः ।
 १०००० वक्ता दश सहस्रेषु, दाता भवति वा नवा ।

सौ हजार
लाख, कौटि } शतं विहाय भोक्तव्य, सहस्र स्नान माचरेत् ।
 लक्ष निहाय दातव्य कौटि त्यक्त्या हरिं भजेत् ।

सौ-हजारो तांभूलस्य गुणाः सति, सखे शत सहस्रशः
 एकोपि च महान्दोषो, यस्यदानाद्विसर्जनम् ।

१०० शाक खाय शत वर्षे गवाये (पार्वती)

कमल नाल जिमि चाप चढाऊ, शत योजन प्रमाणं तै धाऊ ।

शत योजन आयत छन मार्ही, तिन सन वैर किये भल नार्ही ।

प्रथम दिवश नल सेतु सुहावन, चौदह योजन कीन सुपावन ।

द्वितीय दिवस शुभ योजन वीसा, तीजे दिन इकिस किय कीसा ।

दिवस चतुर्थे सु वाइस योजन, पचम तेइस क्रियो मुदित मन ।

दश योजन आयत अति सुन्दर, शत योजन विशाल शोभाधर ॥

(१४-२०-२१-२२-२३=१००)

जो लाचै शत योजन सागर, करै सो राम काज अति प्रागर ।

शत योजन तेहि आनन कीन्हा, अति लघु रूप पवनसुत लीन्हा ।

तव शत वाण सारथी मारेसि, परा भूमि जयराम पुकारसि ।

कनक कनकते सौ गुणी, मादकता अधिकाय ।

यह खाये वौरात है, वह पाये वौराय । (धतूरा, मुरारि)

सौपरवा शिशुपाल के, छमा कीन जगदीस ।

अधिक भये पर चक्रसो, काटि गिरायो सीस ।

घोये ह सौवार के, काजर होत न सेत ।

सौ युग पानी में रहे, मिटै न चकमरु भ्राग ।

बखशिश सौ सौ, हिसाब जौ जौ ।

सौ दिन चोरन, इक दिन साहु ।

सौ गाथा सुगा पढ़ै, अत विलाई खाग ।

सौ सौवे में बगुला राजा ।

सौ ऐशों का ऐव गरीबी ।

सौ नकटन में एक है, नक्कू जाके नारु ।

सौ मन सोना, रती हुकूमत ।

सौ में सती लाख में जती ।

सौ सौ तोपन की कर मसकै, महुवे दगन सलामी लाग ।

सौ अज्ञान नहीं एक सुजान ।

सौ सौगदे खाय भूलि नहीं ताहि पर्ताजे ।

सौ सयान को एकै मत ।

१००-१ सौ कोसा अरु एक मसोसा ।

सौ सुनरा की, इक लुहरा की ।

सौ दडी इक बुदेलापडी ।

सौ, हजार—सौ की हानी, सहस बखानी ।

सौ, हजार } चले वाख कवि सकहि, न भापन,
जाख } शत तें सहस सहस तें लाखन । (कर्णाजुन संग्राम)

सौ में फुली सहस में काना, सवालाख में ऐंचा तान
ऐंचा ताना करै विचार, में मानी कैरा सौ हार ।

(१०१)

उद्धरेत्सप्तगोत्राणि, कुरुमेकोत्तरगतम् । (मया)

श्रीगामारी के भये, इरु रुन्या सौ पूत ।

(१०५)

अन्यैः साक विरोधेन, वय पचोत्तर गतम् ।

परस्पर विरोधेन, वय पचचते गतम् ।

पाच पाडु गत कौरवा, वधु एरुसौ पाच ।

नसे कौरवा कुर्माति सो, पाडु न लागी आच ।

वधु एरु गत पाच सो, निसि दिन वढै सनेहु,

कठो हमारो मानिये, पाच ग्राम दे देहु । (कृष्ण)

(१०८)

गताष्टोत्तर संख्याकाः सामन्तास्तत्रजज्ञिरे,

पोडगानाशततेपानभूतुः शूरसंज्ञकाः (पृथ्वीराज)

जप माला में पाइये, गुरिया इरुसौ आठ,

राजा अरु आचार्य्य कहैं, श्री लिख इक सौ आठ । (श्री १०८)

अष्टोत्तर शत हाथ की, शिला लेय अनिरुद्ध,

वाणासुर को दल हन्यो, कियो घोर तहैं युद्ध ।

है मूरज को व्यास, महिसो इरु सौ आठ गुण । ✓

(११०)

तेहिके गतसुत अरु दस भाई, खल अति अजय देव दुखदाई (कालकेतु)

(१२०)

गंजीफा में जानिये, पान एरु का पीस,

है दशावतारी वडी, रसिक जनन में दीस ।

बसशिश सां सौ, हिसात जों जौ ।

सौ दिन चोरन, इक दिन साटु ।

सौ गाथा सुगा पढ़ै, अत विलाई खाग ।

सौ कौवे मे वगुला राजा ।

सौ ऐत्रों का ऐच गरीमी ।

सौ नकटन में एक है, नक्कू जाके नाक ।

सौ मन सोना, रती हुकूमत ।

सौ में सती लाख में जती ।

सौ सौ तोपन की कर मसकैं, महुवे दगन सलामी लाग ।

सौ अजान नहिं एक सुजान ।

सौ सौगदे खाय भूलि नहिं ताहि पतीजे ।

सौ सयान को एकै मत ।

१००-१ सौ कोसा अरु एक मसोसा ।

सौ सुनरा की, इक लुहरा की ।

सौ दडी इक मुंदैलरंडी ।

सौ, हजार—सौ की हानी, महस बखानी ।

सौ, हजार | चले वाख कवि सकहि न भापन,
लाख | शत ते सहस सहस ते लाखन । (कर्णाजिन संग्राम)

सौ मे फुली सहस मे काना, सवालाख मे ऐंचा ताना ।
ऐंचा ताना करै विचार, में मानी कैग सो हार ।

शत पच चापाई मनोहर, जानि जे नर उर धरै,
दारुण अविद्या पच जनित, विकार श्री रघुवर हरै ।

इसरी सन पच बियासि घटै, हिजरी सन शुद्ध तवै प्रगतै ।
(ई० १८६८-१८८२=हिजरी १३१६) ।

(६००)

कष्ट सहित छै सो हय पाये, ते सब कौशिक ढिग पहुचाये । (गालवमृषि)

रावण पुरीतं दिशा प्राची, कोश शतरस चलि गये,
वैठे जलधि महँ पाइ यल, वर शशु चरणान चित दये । (नरांतक)

छै सौ चालिस एकड़ जानो, पूरो एक मुरब्बा मील । (६४०)

(७००)

सत्सद जग में परम पुनीता, श्री दुर्गा अरु भगवत गीता ।

तुलसी सतसद भक्तन प्यारी, रसिक जनन को रूचै विहारी ।

सत्सद ओरहु रचना प्यारी, मितु विहारी की छवि न्यारी ।

(८००)

देवे हित गुरु दक्षिणा, गालव बहु हट कीन ।

कौशिक मागे आठ सौ, श्याम न्याँ हय पीन ॥

सैन्य आठ सौ दसहिकी, एक बाहिनी जान ।

(९००)

नौसो हाथी के हलका में, भूमै आदि भयंकर ठाढ़ (पृथ्वीराज)

दगी सलामी चढ़ेली में नौसो तोप दई दगनाय (महोस)

नौसे चूहे ग्वाय के बिलारी चली हज्ज को ।

(१३५)

शरु ढँह जोरे इक सौ पैतिस, संवत विक्रम लहिये ।
(शरु १८२०+१३५=संवत १८५५) ✓

(२००)

दुइ शत मिले न तेहु पर, तव मुनि मानि गलानि,
रोये विश्वामित्र दिग, अस है हठ दुख टानि । (गालव ऋषि)

महा कोपि लंकेश कुमारा, तीक्ष्ण द्दशत वाण प्रहारा ।

दुइ सौ जोड़ी वज्र नगाडा, कड़कै तुरही औ कडाल । (महोवा)

(२५०)

योजन ढाई शत चरुलाई, चौसठ कोस उतग सुहाई (विन्हावलपुर)

(२७०)

सेना दो सौ सचर जहवा, अक्षोहिणि में इक गुण तहवा ।

(३००)

पूर्ण तीनसौ पैसठ दिन जस, एक वर्ष में आही,
तीर्थ तीनसौ पैसठ है तसै, कुरुक्षेत्र के माही ।

शतरु त्रय भरथरि मन भावन ।

(४००)

पूर्ण शतक अधि जानिये, भागे चार सौ पूर । (काल प्रबोध)

शत योजन को सेतु वह, रह्यो चार सौ कोस । (सेतुबंध)

(५००)

वर्ष पाच शत निज कर नीचा, हुते शीस पावक के बीचा । (रावण)

शत पंच चौपाई यनांहर, जानि जे नर उर धरं,
 दाख्य अविद्या पच जनित, विकार श्री रघुवर हरं ।
 इसवी सन पच वियासि घटें, हिजरी सन शुद्ध तवै प्रगटै ।
 (ई० १८६८-१८२२=हिजरी १३१६) ✓

(६००)

कष्ट सहित छै सो हय पाये, ते सत्र कौशिक ढिग पहुचाये । (गालवमृषि)
 रावण पुरीतं दिशा प्राची, कोश शतरस चलि गये,
 बैठे जलधि महँ पाइ थल, वर शम्भु चरणान चित दये । (नरातक)
 छै सौ चालिस एकड़ जानो, पूरो एक मुरब्बा मील । (६४०)

(७००)

सत्सङ्ग जग में परम पुनीता, श्री दुर्गा अरु भगवत गीता ।
 तुलसी सतसङ्ग भक्तन प्यारी, रमिक जनन को त्वै विहारी ।
 सरङ्ग इ औरहु रचना प्यारी, मितु विहारी की छवि न्यारी ।

(८००)

देने हित गुरु दक्षिणा, गालव बहु हठ कीन ।
 कोणिक मागे आठ सौ, श्याम रण्य हय पीन ॥
 सैन्य आठ सौ दसहिमी, एक वाहिनी जान ।

(९००)

चौसौ हाथी के हलका मे, भूमै आदि भयंकर ठाहू (पृथ्वीराज)
 दगी सलामी चदेली में नोसो तोप दई दगवाप (महोसा)
 चौसे चूहे खाय के मिलारी चली हज्ज को ।

नौसौ छयासठ वर्ष दुखारी, रही विपिन मँ जनकदुतागी ।
जस नौसौ तस एक हजार, छोडौ आपस की तरार ।

(१०००)

सहस्र जीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।

राम रामेति रामेति, रमे रामे गनोरमे ।
सहस्र नाम तत्तुल्य, राम नाम वरानने ।

अश्व मेघसहस्रच सत्यंच तुलया धृतम् ।
अश्वमेघ सहस्राद्धि सत्यमेव विणिष्यते ॥

सहस्र नाम सम सुनि शिव वानी, जपि जेई पिय सेग भवानी ।
वंदौ खल जस शेष सरोपा, सहस्र वदन वरणी पर दोपा ।
सवत सहस्र मूल फल खाये । (पार्वती)

वर्ष सहस्र बीते यहि भाती, जात न जाने दिन अरु राती ।
मुनहु राम जो शिव धनु तोरा, सहस्र बाहु सम सो रिषु मोरा ।
सहस्र बाहु सुरनाथ त्रिशकू, किहि न राज्य मद दीन कलरू ।
जानी मैं तुम्हार प्रभुताई, सहस्र बाहु सन परी लराई ।
एक बहोरि सहस्र भुज देखा, धाइ धरा जनु जन्तु विशेषा ।
जब लागि जासी अर्वाधि है, पूजा नहीं करार ।
तब लागि नाकी माफ है, अग्रगुण करै हजार ॥

दौरौ कोस हजार लौं, उसे लक्ष्मी पास ।
विना दिये रघुनाथ के, मिलै न तुलसीदास ।

नाम हजारी लाल है, पैसा एक न पास ।

(११००)

ग्यारह सौ है लिंग पुराना, ग्यारा सहस कह परमाना ।

ग्यारा से बढ़ई सेग लीन्हे, चढन तहा पढंचो जाय । (माद्दो)

ग्याग सौ सत्ताइस शाखा, मुनिजन वेदन की करि राखा ।

(१२००)

प्रति कलियुग में सुरन के, वारह सौ है वर्ष ।

हाथी जूम्हे हैं धारासँ, पैदर चार लाख गिरि जायँ (जैचद)

(१३००)

सन अठरा सौ ब्यासी खरे, तेरा सौ हिजरी के पूरे । ✓

(१४००)

सन उन्निह सौ ब्यानी जवहीं, चौदह सौ दिजरी के तपही । ✓

(१५००)

कहिचे को लोकोक्ति हजार, पर यथार्थ में डेढ हजार । (का० प्र०)

(१६००)

पोडशानाशत तेषा बभूवुः शूर सङ्गताः (पृथ्वीराज)

सवत सोरा सौ इकतीमा, कगौ कग हरिपड धरि सीमा ।

सवत सोरा सौ असी, असी गग के तीर ।

सावन शुक्रा सप्तमी, तुलसी तज्यो सरीर ॥

(१७००)

सतरा सौ है कूर्म पुराना, सतरा सहस कह परमाना ।

गज सतरा सौ साठ को, होत एक है मील ।

(१८००)

अठरा सौ है मत्स्य पुराणा, अठरा सहस्र रुद्र परमाना ।

(१९००)

सन उन्निस सौ में परो, महा घोर दुष्काल ।

फिर मत अइयो जगत में, वा छप्पन को साल ॥

सन १८९९, १९००, संवत् १९५६ ।

• (२०००)

जो करणी समुक्त प्रभु मोगी, नहिं निस्तार कल्प शत-करी ।

शेषहिं जिबदा दोय हजार, निसि दिन राम नाम उचार ।

एक बार हरिनाम उचार जैर लई फल दोय हजार ।

कहत व्यास अत्र चंद्र सुर्गाल, इकिस सौ साठक है मील, (२१६०)

लागभग चौगुन पृथ्वी जान, आठ हजार मील परमान ।

धनुषै गुण काटेतव पारथ, दोय सहस्र मारे रथ सारथ । (अश्वमेध)

दो हजार तोपे सज्जाई, हाथी सजिगे पाच हजार । (महोवा)

दोय सहस्र चारसौ तीस; सेना पृतना कह जगदीस ।

(३०००)

बेल पत्र मदि पूरे सुखाई, तीन सहस्र सवत सौ खाई ।

सुनि प्रभु वचन निशान अपारा; तीन सहस्र हने इक वारा । (शत्रुघ्न)

तीन सहस्र लिये रण गोढ़, आइ-सुवाहु-सायुहे ढाढ़े ।

तीन सहस्र दल गढ़सिरसा को, बलिपुर रहो छावनी डारि । (सिरसा)

(४०००)

विष्णुनाम द्वैवार विचार, शेष लहत फल चार हजार ।

युग सहस्र जे विषय, सुन्दर पद्य प्रीन,
जानहिं श्रुति कर मत सफल, गहि मख सग अरीन । (रामायणमेव)

(५०००)

युद्ध महा भारत भये, पच सहस्र भे रई ।
कलियुग तयरी तें लग्यां, क्रियो देश अपरुई ।

पाच हजार कात्रुली घोडा, छै सौं शुतुग माल लदयाय ।
मलिखे भेज दिये सिरसा को, बहुतरु अजा रहीं फहराय । (सिरसा)

पच सहस्र दो सौ असी, फीट केर डक मील । ५२८० ।

(६-७-१० हजार)

इहि विधि नीते वर्ष पट, सहस्र तारि बाढार ।
सप्त सप्त सहस्र पुनि, रहे सभोग अथार ।

वर्ष सहस्र दस त्यागेउ सोऊ, बाढे रहे एक पग दोऊ ।

(७०००)

सप्त सहस्र शिल्प संग लागे, भोजन आय द्वार ह्ये मागे । (दुर्गासा)

सात सहस्र दो सौ नवो की, सरया णरु चभु परमान ।

रवि जप सात हजार प्रमाना ।

(८०००)

अष्टौ श्लोक सहस्राणि, अष्टौ श्लोक शतानि च ।

अह वैमि शुकोपेत्ति, सजयोपेत्तिमानवा । (व्यास कथन ब्राह्मि परी)

आठ सहस्रक मील के, है पृथ्वी को व्यास ।

आठ सहस्र जप बुध परमाना ।

आठ सहस्र प्यादे सौ हाथी दुइसौ गुतर सहस्र असवार । (सिरस्ता)

(६०००)

नव सहस्र सप्त चलि गयऊ, तत्र नृपके मन विस्मय भयऊ । (दशरथ)

नव सहस्र नौसे नवे, तुलसीकृत विस्तार ।

अष्टा दश पट चारि को, सत्र ग्रथन को सार ॥ ६६६० ॥

(१००००)

शालग्रामो हरैर्मूर्तिर्गन्नाथश्चभारतम्
कलेर्दशसहस्रान्ते यथोत्पत्त्वाहरेःपदम् ।

कलौदश सहस्रानि हरिस्त्यजति मेदिनीम्
तदर्धं जाह्नवीतोयं तदर्धग्राम देवता ।

भूप सहस्र दस एकहि वारा, लगे उठावन टरइ न टारा ।

होहि सहस्र दश शारद शेषा, करहि कल्प कोटिन भरि लेखा ।
मोर भाग्य राउर गुण गाथा, कठिन सिराहि सुनहु रघुनाथा ।

मत्त सहस्र दस सिंधुरसाजे, जिनहि देखि दिसि कुंजर लाजे ।

अयुत नाग बल भीम शरीरा, रूप भयंकर अति रणाधीरा ।

दस सहस्र पुनि ब्राह्म पुराना, वामन केर स्वई परमाना ।

दस हजार वे शिशुदत्ते, गंधर्वन के पुत्र ।

तिनकी धनुही छीनि कै, तोरी हती सुमित्र ॥

मगल जप दस सहस्र प्रमाना ।

(११०००)

दश वर्ष सदृशानि दश वर्ष शतानिच,
रामोराज मुपासित्वा ब्रह्मलोक प्रयास्यति ।

ग्यारा सहस वर्ष भगवानां, कीन्हो राज धर्म विधि नाना । (राम)

सहस इकादश जाप चन्द्र को ।

(१२०००)

वारा सहस केर परमाना, अहै प्रगट ब्रह्माड पुराना ।

(१३०००)

तेरा सहसहि ब्राह्म पुराना, श्रीपुरुषोत्तम चरित बखाना ।
दस हजार कहू मिलत प्रमाणा, कल भेद करि याहि बखाना ॥

(१४०००)

सुर डरत चौदह सहस निशिचर, एक श्री रघुकुलमनी ।

चौदह सहस सुभट लै धाये, छया महुँ प्रभु तुम मारि गिराये ।

चला वीर आगे महल में गया, सु चौदह सहस नारि देखत भया ।

(१५०००)

पद्म सहस ते कछु अपिक, अग्नि पुराण बखान ।

पद्म आठ तिरचर काहि, सात गुणाकर एक लखाहि । १५०३२४०

(१६०००)

जमुना जल कीड़त, नदलाला, सोलह सहस सग बचाला ।

वसु नभ शशिरस भूमि सुहानी, कृष्णचन्द्र की जानिय रानी । १६१०
सोरह सहस्र अठोत्तर सौघर, तहां तहां सुंदरि सँग गिरिधर ।
सोला सहस्र शुक्र जप जानो ।

(१७०००)

सत्रा सहस्रहिं क्रम पुराणा, सुनत श्रवणमुद पंगलनाना ।
सहस्र सत्तरा जप केतू को ।

(१८०००)

अठरा सहस्र भाग्यत जानो, हिंदुन को सर्वस यह मानो ।
द्वै लख सेन पदातिहने, गज सहस्र अठारा (राम रावण)
योजन अष्टादश सहस्र अरु पट सत मित भूप,
जाहिर जम्बू दीप है अति रमणीय अनूप ।
सहस्र अठारा जप राहू को ।

(१९०००)

अत्रिस सहस्रहिं गरुड़ पुराणा, ज्ञान तत्व कर ललित विधाना ।
चारिहु वेद मंत्र विस्तार, अत्रिस सहस्र चारसौ चार (का. म.)
सुर गुरु जप उन्नीस हजार ।

(२००००)

पीस सहस्र वर्ष तप कीन्हा, भालयज्ञ में पुनि मन दीन्हा । (रावण)

(२१०००)

इन्द्रिस सहस्र आठसौ सत्तर, संख्या एक अनी की दृढतर । २१८७०

इफिस सहस्र माठसौ सत्तर, अक्षोहिणि प्रति रथ पुनि कुंजर । २१८७०

श्यासो ह्यास क्रिया निसि वासर, सहस्र इकीस षष्ठ छै सौ तापर २१६००

(२२ हजार)

नारदीय बाईस हजार, सहस्र पचीस कीन विस्तार ।

(२३ हजार)

तेइस सहस्र जाय शनि जानो ।

(२४ हजार)

शिव पुराण चौबीस हजार, सइ वाराह केर निरथारा ।

(२५ हजार)

षचत्रिंशतिसा इहै चतुर्विंशति सिद्धिघृह्णु । (कालीतंत्र पाठ)

नारदीय पचीस हजार, भक्ति तव दरशावन हारा ।

पृथ्वी परिधिदि कहौ सुजान, सहस्र पचीस मील अनुमान ।

(व्यासः ११ परिधि)

(३० हजार)

तीस सहस्र सयत करि राजू, लखो दिलीप लोक सुर राजू ।

(३२ हजार)

पचिस सहस्र वर्ष तप कीना, अशुमान तव हरि पद लीना ।

(४० हजार)

सप्त अक्षोहिणी कौज सँवारी, चालिस सहस्र छत्र के मारी (पाठव)

(५० हजार) अर्द्ध लक्ष

सुनियत लख पद मूर के, आधेहु मिलते नाहिं ।

मिले तिनहिं पै भक्त जन, वार वार बलि जाहिं ।

भीष्म इने दिन पांच में, रथपति सहस पंचास ।

आये एरुड़ भूमि में, कड़ियां सहस पंचास ।

(६० हजार)

सगर पुत्र भे साठ हजार, जिन बहुतक पृथ्वी खनिडारा ।

पन्यो तहा गंगा-जल जाई, सागर नाम भयो तव भाई ।

वालखिल्य ऋषि साठ हजार, इक अगुष्ट तुल्य तनु वारा ।

पट सहस्र दस शूर जुझारा, लवणासुर सँग अनी अपारा ।

हस्ती साठि सहस्र बल, सदा धर्म की सीव ।

श्वेत छत्रशिर शोभित, यह राजा सुग्रीव ।

दुःशासन रथ माजियो मौं भादन तै सत्य ।

साठि सहस्र नृप छत्र धर चेहे साजि कुरुनाथ ।

(६५ हजार)

पंसठ सहस्ररु छै सौ दस पुनि, अक्षोहिणि प्रति ह्य हिय मे गुनि ।

(६५६१०)

(७० हजार)

सत्तरि सहस्र नाग बल जाही, इन महे एरु कहौ मै ताही (गधमादन)

पाछे खडे जेहि सहस्र सत्तर प्लवग अति बल सीव है,

रघुवीर सन्मुख है विराजित वीर सो सुग्रीव है ।

७६ हजार)

सहस्र छहतर मील है, शनि को व्यास प्रसिद्ध ।

(८० हजार)

योजन अयुत अष्ट नभ जाई, दधि बल सुमिरि हृदय रघुराई ।

(८१ हजार)

सहस्र इकासी एक सौ, ललित स्कन्द पुरान ।

(८७ हजार)

वीते संवत सहस्र सतासी, तजी समाधि शशु अग्निनासी ।

(८८ हजार)

सूत कब्यो हरि चरित पुनीता, सहस्र अठासी ऋषि सन मीता ।

सहस्र अठामी मील है, व्यास ऋहस्पति जान ।

(लाख)

तामूलस्य गुणाः सति, सरे शत सहस्रशः

एको पिच महान्दोषो, यस्यदानाद्विसर्जनम् (देखो १००)

दृष्ट ह्ये पहिचानि गुरु, भ्रम कश्च रहा न चेत ।

वरे तुरत शत सहस्र वर, निम'कुटुब समेत ।

लक्ष लक्ष वर धेनु धन, पूजि पूजि दिज पाय ।

एक एक निमन दई, हर्षित कोशतराय ।

तुरंग लाख रथ सहस्र पर्चीसा, सकल सवार नख ब्रह्म सीसा ।

जलटै तासी तासु पति, सौ हजार मनसत्य,

एक सून रथ तनय कहै, भजति न मन समस्त्य । (राम लक्ष्मण)

इक लाख पूत सवा लाख नाती, सो रावण घर दिया न जाती ।

ता वसुदेव हरपि तिहि ठाई, लक्ष धेनु मनसी मन माहीं ।

गैया लक्ष सवत्स जुहाई, वाडी दूध नवीन मंगाई ।

सब विधि सपहि अलंछत कीनी, करि संकल्प द्विजन कहँ दीनी ।

लास रुडी एकड गुनौ, पग हैं नो हजार,

नव्ये पग दिसयिल भयो, पैमायश को सार ।

एक लाख इक सठ सहस, असी वाल इक सार,

भये कृष्ण के पुत्र ये, गुण बल रूप अपार ।

एक लक्ष भारत भुवि माहीं, व्यास प्रणीत विदित सब काहीं ।

एक लक्ष नौसहस पर, त्रयशत और पचास,

अक्षोहिणि प्रति जानिये, पैदल सह उल्लास (१०६३५०)

लाख तद्वीर करो तो क्या होता है,

रही होता है जो मंजूरे खुदा होता है ।

मुद्धई लाख बुरा चाहे तो क्या होता है,

बिगडी नन जाती है जब फजले खुदा होता है ।

लाखन मे कोउ एक सपूत ।

लाख जाय पै साख न जाय ।

बेधी मूठ है सवा लाख की ।

(२ लाख)

दोय लक्ष पर जान, सहस अठारा सात सौ,

परगत सबे सुजान, सख्या इक अक्षोहिणी ।

इक गज, इक रथ, तीन तुरगा, पदचर पच, इक पत्ती संगी ।

सेनामुख गुल्मरु गुण कहिये, बाहिनि पृतना चमू अनीये ।

त्रिगुण त्रिगुण पत्नी तें गिनिये, सरुया एरु अनी की लहिये ।
दस अनीरु अत्तोद्विणि जानो, नम नम मुनि वसु शशि भुज माना ।

गज	रथ	हर	पवचर	सयाग	
१	१	३	५ =	१० =	पत्नी
३	३	९	१५ =	३० =	सेनामुख
९	९	२७	४५ =	९० =	गुप्त
२७	२७	८१	१३५ =	२७० =	गुण
८१	८१	२४३	७२५ =	८१० =	वाहिनी
२४३	२४३	७२९	२१६५ =	२४३० =	पृतना
७२९	७२९	२१८७	६५४५ =	७२९० =	चसू
२१८७	२१८७	६५६१	१०८३५ =	२१८७० =	अनी
२१८७०	२१८७०	६५६१०	१०८३५०	२१८७००	= अत्तोद्विणी

दोय लक्ष अदतिम सहस, मील चद्र है दूर ।

(३ लाख)

लक्षत्रया वर्तनात्तु महादेव विजेष्यति (कालीतंत्र)

सेना तीन लाख दिल्ली की सो कनवज में पहुची जाय ।

तीन लाख को टीका लैके सो नेगिन को दो सौंपाय (नैनागढ)

(४ लाख)

चारि लक्षवर धेनु मॅगार्ड, काम सुरभिसम गील मुहाई ।

लख चौरासी योनि मे, चौ लख मानव जान ।

चारि लाख बत्तीस हजार, कलियुग वर्ष केर निरधार ।

चारि लाख से मूरज आये, रहिगे तीन लाख सत्र ज्वान (पथरीगढ़)

(५ लाख)

लक्ष पञ्चरुमावर्त्य कला पचरु सयुतः (काली तंत्र)

पाच लाख से माहिल चलि भये, हाहाकारी वीतत जाय ।
पाच लक्ष हैं पत्थर के घर, त्रौ नव लाख काष्ठ के सुंदर (लक्ष)

(६ लाख)

संख्या त्रय अक्षोहिणी, है छै लाख प्रमान ।

रहस छपन अरु एक सौ, तापर गिनौ सुजान । (६,५६,१००)

(७ लाख)

सात लाख संख्या केशन की, भापत सुन्दर गरुड़ पुराण ।

सात लाख से चढे पियौरा, लस्कर कूच दीन करवाय,
राह पर लइ गइ महुवे की दल में, रही अरिया छाया ॥

(८ लाख)

आठ लाख चौंसठ सहस, मील भानु को व्यास । *

आठ लक्ष चौंसठ सहस, द्वापर युग के वर्ष ।

आठ लाख से सजे चदले, अगणित धजा रही फहराय ।

(९ लाख)

नव लाख गरु, जाहि सो नदा, पचलक्ष जिहि सो उपनदा ।

है नव लक्ष सग तव हाथी, सकल करौ तारागण साथी (भीम प्रतिज्ञा
कलिंग प्रति)

*अन्य ग्रहो का व्यास भी यहा स्थूल मान से एकत्रित ही लिखा जाता है—

आठ लक्ष है व्यास सूर्य को, सहस अठासी गुरु को जान ।

शनी बृहत्तर सहस मील है, आठ सहस पृथ्वी अनुमान ।

पौने आठ सहस शुककट, मंगल चार सहस सुजान ।

बुध तीन शशि दोय सहस है, व्यासक स्थूल मान दिय जा

लख चौरासी योनि में, नव लाख जलचर जान ।

जाके घर मे नौ लख गाय, सो दयो छात्र पराई खाय ।

मुख दिखराई मे बेला को, मल्हना दियो नौलखाहार ।

(१० लाख)

दशलक्षवर्तनात्तु दशविप्राप्तिरत्तमा । (कालीतंत्र)

दस लाख गऊ जाहि दृष भाना, कौटि जाहि नंदराज महाना ।

लाख मिले दस लाख की, दृष्ट्या वादृत जाय,

जत्र आयत सतोपरत, दृष्ट्या जात नसान ।

तेरा चौरासी योनि में, दश लाख पक्षी जान ।

(११ लाख)

लख चौरासी योनि में कुमि एकादश लक्ष ।

(१२ लाख)

द्वादश लक्षसु सहस्र छानवे, नेता युग मे त्रु प्रमाण ।

(१३ लाख)

पक्षी ते पशु योनि हे, तेरा लाख विशेष ।

(१०) - २३

(१४ लाख)

चौदा लक्ष पिंड पृथ्वी के, इरु सुरज के पिंड समाहि,

अद्भुत रचना जगदीश्वर की, कृत शान्दा शैव लजाहि ।

भारत चौदह लक्ष हे, गर्भग के तो ५ । -

(१५ लाख)

भारत, पंद्रा लक्ष है, दिव्य पितृके लोक ।

(१६ लाख)

दस पट लाख हरी हर बोलत, चले जाहिं गिरि कंदर तोलत ।

(१७ लाख)

पचीतें थिरयोनि है, सत्रा लाख विशेष (१०, २७)

लक्ष सत्तरा सहस्र अठ्ठाइस, वर्ष होत सतयुग के माहिं ।

(१८ लाख)

जलचरतें थिर योनि है, अठरा लक्ष विशेष (६, २७)

व्योम तीन रस गुण वसु एका, अक रीति लिखि गुणी विवेका ।

(नरातक सभा में गुणी १८, ३६, ०००)

सहस्र छतीसख लक्ष अठारा, गुणी नरातक सभा मँझारा ।

(१९ लाख)

मानव तें पशु योनि है, उन्निस् लाख विशेष (४, २३)

(२० लाख)

वह कपि अंगद बालि कुमारा, बीस लक्ष जाकर परिवारा ।

(२३ लाख)

लख चौरासी योनि में, पशु है तेइस लाख ।

(२४ लाख)

संख्या ग्यारा जोड़िणी, लख चौत्रिस अचमान (२४, ०५, ७००)

(२५ लाख)

पचविंशति लक्षस्तु दश विघ्नेश्वरो भवेत् (कालीतंत्र)

मोसी कन्या लाख पचीसा, ऐसे वचन न कहौ मुनीसा ।

(२७ लाख)

लख चौरासी योनि में, थिर लख सत्ताईस ।

भानु परिधि अब कहौ सुशील, लगभग लक्ष सताइस मील ।

(२७,१५,४२८)

(३० लाख)

तीस लाख दल साठि हजार, पवन पुत्र सब कीन जुहारा (उलबीर)

तीस लक्ष भारत अमर, पद्मा पितृ सुलोक,

चौदह पुनि गर्ध्व दिग, एक लक्ष भुवि लोह ।

(महाभारत के श्लोक ६० लाख)

३० लक्ष देव लोक में

१५ लक्ष पितृ लोक में

१४ लक्ष गर्ध्व लोक में

१ लक्ष मधे लोक में

६०

(४३ लाख)

लख तैतालिस बीस हजार, वर्ष दिव्य युग एक भँभार ।

चारि लाख बत्तीस हजार, कलियुग इते वरस निर्धार ।

द्वापर दुगुन सुधेता तीन, सतयुग चांगुन सख्या कीन ।

चतुर्युगी इह दिव्य भजत, दिव्य प्रकृतर कर मन्वत ।

चोदा मन्वतर कर कल्प, नर कह प्रमित देव कहँ रयत्प ।

कलियुग ४,३२०००

द्वापर ८,६४०००

त्रेता २०,२६०००

सतयुग १७,२८०००

४३,२०००० = १ दिव्ययुग

(५० लाख)

पंचाशच्छत माहृत्य, महाकाल समो भवेत् (काली तंत्र) ।

(६० लाख)

दश षट लाख हरीहर वोजत, चले जादि गिर कदर तोलत ।

श्लोक महाभारत विदित, साठ लाख परमान ।

(८० लाख)

असी लाख अरु सात शत, कपि ढल वर उरवड,

नभे मारग कूदत चले, गय गवाक्ष बलिदड ।

आये मगह राज भगदत्ता, असी लक्ष जाके मदमत्ता ।

(८४ लाख)

आसनानि कुलेशानि यावन्तो जीव जन्तवः

चतुर्शीति लक्षाणि चैकैकसमुदाहृतम् ।

आमर चारि लाख चौरासी, जात जीव नभ जल थल वासी ।

(कोटि)

गो कोटि दानं ग्रहणेषु काशी, प्रयाग गंगाश्रुत कल्पवासः

यज्ञा युत मेरु सुवर्ण दान, गोविन्द नाम स्मरणेन तुल्य ।

कुर्यात्तु मंगलं नाम यस्य वाचि प्रवर्धते ।

भस्मी भवति राजेन्द्र ! महा पातक कोट्यः ॥ "

जन्म कोटि लागि रगर हमारी, बरौ शशु नतु रहौ कुमारी ।

सुन्दरता मर्यादा भवानी, जाडन कोटिहु बदन वरानी ।

कहदि पररपर वचन मन्नीती, लेखि इन कोटि काम छवि जीवी ।

सहज मनोहर, भूरति दोऊ, कोटि काम उपमा लघु सोऊ ।

कोटि मनोज लजावन हारे, सुमुखि कदौ को अर्हहि तुंहारे ।

कोटि विष वध लागहि जाहु, जायै शरण तजौ नहि ताहु ।

काटे पै कदली फरै, कोटि जतन कर सीच ।

गिरि सम होहि कि कोटिक गुजा ।

कोटि कंगूरन चढि गये, कोटि कोटि रणधीर ।

सादर शिर रुई शीस चढाये, एक पूरु के होटिन पाये ।

गमचन्द्र के चरित सुहाये, कल्प कोटि लग जाहि न गाये ।

दान 'पिन' दरय निदान 'ठहरान कौन श्रान' 'पिन' जस अणजस कर
करिगे । कविराय सतन सुभाय सुने सुमन के धरम विहीन न नरा
वा धरिगे । काम आयै काहु के न दाम दुहु दीनन के वाम गाढे
गाढे सव न न गरि गरिगे । बोरि बोरि निरुद रदाद पे रुर देते
जोरि जोरि कृपिन ररोर मरि गरिगे ।

कोटिन दाख स्वभाव मरी पर उटहि काठ कठोरोद भावै ।

कोटिन रग दिखायत है, जन अग में आयत भंग भवानी ।

(२ कोटि)

कोटि द्वयस्य लाभेऽपि नत सदृशज धनुः ।

असदृशयः शरः स्तब्धो लक्ष्णं लाभामि काक्षया ॥

(कोटि=रुद्र, किनारा) (लक्ष्ण=लास्य, निशाना)

(३ कोटि)

तिष्ठः कोटयोऽर्द्धे कोटीच, रोमाणि व्यापहारिके (साढे तीन कोटि)
सप्त लक्ष्णाणि केशाः स्युर्नत्वाः शोक्तास्तु विगतिः (गरुड पुराण)

सार्धं त्रिकोटि नाई, ना मालयश्चकलेयरम् ।

साढ़े तीन कोटि तीरथ की संख्या भाषत वायु पुरान ।

सोइ स्वर्ग स्वइ अन्तरिक्ष मे, साढ़े दस कोटी सब जान ।

(वायु पुराण अर्थात् ब्रह्मांड पुराण)

तीन करोड़ रहे गधव्यो, हनूपान संहान्यो सर्वो ॥

सग सचिव त्रय कोटि महाना, नाम सुषेण वैद्य बुभिवाना ।

अथ कोटि रक्ष प्रधान तेहि दिन हने लक्ष्मण वीर ।

मानुष तन में रोम राजहीं, साढ़े तीन कोटि परमान ।

रोम कूप उतनेही जानो, अस वरणात है गरुड़ पुरान ।

भौम भूमि दिग तउ अति दूर, सार्धं त्रिकोटि मील भरपूर (मगल)

(४ कोटि)

भूरज से बुध दूर सुजान, मील चार कोटिक परमान ।

(५ कोटि)

तीन कोटि कुंजर मतवारे, पंच कोटि रथ सरस सेंवारे (पांडव)

पाच कोटि मीलहुं ते आगर, क्षेत्रफलहि पृथ्वी अनुमान ।

सम वृत्त के क्षेत्रफल निकालने की सुलभ रीति—

व्यास अर्द्ध को वर्ग करि, वाइस तें गुणि देय ।

भाजि सातसो वृत्तरूप, क्षेत्रफलहि लिखि लेय ॥ यथा—

एक वृत्त का व्यास ८, व्यासार्ध ४, $४ \times ४ = १६$ वर्ग

१६×२२

$\frac{\quad}{७} = \text{क्षेत्रफल } ४०\frac{२}{७}$

७

इस रीति को इस प्रकार भी लिख सकते हैं—

$$\frac{८}{२} \times \frac{८}{२} \times \frac{२२}{७} = ४०\frac{२}{७}$$

यह ऊपरी क्षेत्रफल हुआ यदि गोल पृष्ठ का फल लेना हो तो इसका

चौगुना और गोलातर्गत घन फल लेना हो तो पांच गुणित होगा

(७ कोटि)

सात कोटि हैं ताम्र के, चांदी के श्रुति कोट (श्रुति ४)
जात रूप कैट्ट इते, माणिक कोट सुकोटि ॥ (लका)

सप्तकोटि निशिचर सँगताके, असित मेरु सम खल भट नाके (विंदुराक्षत)
रवि से शुक्र दूर द्विय जान, नील सात कोटिक अनुमान ।

(८ कोटि)

आठ लाख शत वार गनाई, लै सँग सेन पपपुर जाई । (दुर्गध)

(९ कोटि)

नव करोर स्फटिक सुहाये, सहस कोटि मणि नील सुहाये । (लका)

नव करोर मीलहुँ तें दूर, पृथ्वी तें राजत है सूर । (सुर्ग्य)

मति सेकड ज्योति गति शील, इरु लख सहस छयासी मील

(१० कोटि) अर्बुद

दश करोर वानर सँग लैके, चले सरुल प्रभुपद चित ठैके ।

दश करोरि नव लाख अरु, बीस सहस सत एक ।

चले केसरी संगलै, करत चरित्र अनेक ॥

सजे कोटि दश मत्त मतगा, बीस कोटि लिय सग तुरगा । (मेघनाद)

स्वर्ग भूमि अरु अन्तरिक्ष मे, तीरथ है साठे दस कोटि ।

गगाजी मे सबही राजत, महिमा गग न गिनिये छोटि ।

(१३ कोटि)

कोटि त्रयोदश लक्ष इत्थिस, चौत्रिस सहसस्र नो सौ दीत ।

रथ गज हय अरु पदचरमान, महाऽज्जोहिणी सग्या जान ।

रथ १३२१२४६०

गज १३०१२४६०

हय ४११३७४७०

पदचर ६४२६२४२०

योग १३,२१,२४,२००

(१४ कोटि)

रवि से मगलें दूर सुजान, चौदह कोट मील अनुमान ।

(१६ कोटि)

पुनि वसंत शत वीर बुलाये, कसो जाहु पश्चिमहि सिधाये,
सोलहु कोटि कौश लै भारी, उठे तमकि जय राग पुकारी ।

(२० कोटि)

वीस कोटि सग सेन सुहार्द, चले सकल जय कहि रघुराई (सीतासोध

वीर कोटि वर कीशले, रक्षा करत गवाक्ष ।

वीस कोटि असनार महाबल, तीर कोटि सन लेखौ पैदल (पाडव)

(२१ कोटि)

इकिस कोटि वनचर लै साथ, पवन कुमारहि नायउ माथा । (मयद)

(२५ कोटि)

शेख शूल असि मुदगर धारी, कोटिपचीस चले रथ चारी (मेघनाद)

(३० कोटि)

एक नील दल तीस करोरा, धावत एक एक तर-जोरा ।

तीस कोटि सो बहु खडो, नाम वीर धूआक्ष ।

(३३ कोटि)

तेतिस कोटि देव सुमिरन कर, कहिहौं वीर पँधारो गाय ।

(३६ कोटि)

पद् त्रिंशत् कोट्यथैव हरस्य सकला गणाः ।

उत्तर दिशि दश शीस, रहेउ स्वयं सज्जितवली ।

सग कोटि छत्तीस, लिये मुख्य सेनापती ।

(४२ कोटि)

कोटि बयालिस तमीचर, नारान्तरु कर घात ।

राम कृपा बल हति खलनि, कपिन विताई रात ।

(४८ कोटि)

कितरु मील रवि से गुरु दूर, अढ़तालिस कोटी भरपूर ।

(५० कोटि)

कोटि पचास खड़े कपि घेरे, बहु शर भंग निपुणा रण केरे ।

(५६ कोटि)

छपन कोटि वनचर लै साथे, करत प्रणाम चले कपिनाथा (श्रीखट्ट)

छपन कोटि यादवा जैते, कृष्ण भक्त सत्र जानिय तेते ।

(६६ कोटि)

कांठि छियासठ गजन को, अवरुष गर नाह,

विनय सहित विमन दर्ई, कीरति रही अवाह ।

(६७ कोटि)

सप्त षष्टि हताः कोट्यो वानराणां तरखिनाम्

पश्चिमे नाह शोणेण् मेघ नादेन सायंकः ।

सख्या	क्रमिक सख्या	सख्या	क्रमिक सख्या
६१ एकनवतिः	एकनवतः	६६ पण्यवतिः	पण्यवतः
६२ द्विनवतिः	द्विनवतः	६७ सप्तनवतिः	सप्तनवतः
६३ त्रिनवतिः	त्रिनवतः	६८ अष्टनवतिः	अष्टनवतः
६४ चतुर्नवतिः	चतुर्नवतः	६९ नवनवतिः	नवनवतः
६५ पचनवतिः	पचनवतः	१०० शत	शततमः

विशेष विवरण

(१) एकसौ से अधिक सख्या में अधिक वा उत्तर शब्दों का प्रयोग होता है यथा,—

१०१ एकाधिकं शतं अथवा एकाधिकशतं ।
एकोत्तरं शतं अथवा एकोत्तरशतं ।

(२) प्रकार अर्थ में सख्यावाचक शब्दों के पश्चात् धा प्रत्यय होता है । यथा—

द्विधा-त्रिधा-अष्टधा-नवधा इत्यादि ।

(३) अनेकवार के अर्थ में शस् अर्थात् श. प्रत्यय होता है । यथाः—

बहुशः अल्पशः शतशः सहस्रशः लक्षगः कोटिशः ।

(४) विशति आदि शब्दों से पूर्ण अर्थ में तम प्रत्यय होता है अथवा ति का लोप होजाता है । यथा—

विंशतितमः अथवा विंशः ।

॥ इति ॥

निवेदन

अंकविलास के प्रक का सरोधन यथासंभव सावधानी से किया गया है तथापि मेरी वा छापे की भूल से कहीं अशुद्धि रह गई हो तो उद्गरचेता महानुभाव कृपया सुधार करें ।

अंकविलास ।

सख्या	क्रमिक सख्या	सख्या	क्रमिक सख्या
१ एकनवतिः	एकनवतः	६६ परणवतिः	परणवतः
२ द्विनवतिः	द्विनवतः	६७ सप्तनवतिः	सप्तनवतः
३ त्रिनवतिः	त्रिनवतः	६८ अष्टनवतिः	अष्टनवतः
४ चतुर्नवतिः	चतुर्नवतः	६९ नवनवतिः	नवनवतः
५ पचनवतिः	पचनवतः	१०० शत	शततमः

विशेष विवरण

(१) एकसौ से अधिक सख्या में अतिक्रम वा उत्तर शब्दों का प्रयोग होता है । यथा.—

१०१ एकाधिकं शतं अथवा एकाधिकगणतं ।
एकोत्तरं शतं अथवा एकोत्तरशतं ।

(२) प्रकार अर्थ में सख्यावाचक शब्दों के पश्चात् धा प्रत्यय होता है । यथा.—

द्विधा-त्रिधा-अष्टधा-नवधा इत्यादि ।

(३) अनेकवार के अर्थ में शब्द अर्थात् श. प्रत्यय होता है । यथा:—

बहुशः अल्पशः शतशः सहस्रशः लक्षशः कोटिशः ।

(४) त्रिगति आदि शब्दों से पूर्ण अर्थ में तम प्रत्यय होता है अथवा ति का लोप होजाता है । यथा—

विशतितमः अथवा विणः ।

॥ इति ॥

निवेदन

अक्रयित्वास के ग्रन्थ का संपोषण यथासंभव सावधानी से किया गया है

